

माध्यमिक पाठ्यक्रम

संस्कृत साहित्य-248

पुस्तक-2



विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

ए-24-25, संस्थागत क्षेत्र, सेक्टर- 62

नोएडा - 201 309 ( उत्तर प्रदेश )

वेबसाइट : [www.nios.ac.in](http://www.nios.ac.in) निर्मूल्य दूरभाष- 18001809393

---

प्रथम संस्करण 2021 First Edition 2021 ( Copies)

---

ISBN (Book 1)

ISBN (Book 2)

सचिव, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, ए-२४-२५, संस्थागत क्षेत्र, सेक्टर- ६२ नोएडा - २०१ ३०९  
(उत्तर प्रदेश) द्वारा प्रकाशित। ..... द्वारा मुद्रित।

# माध्यमिक स्तर संस्कृत साहित्य-248

## सलाहकार समिति

प्रो. सरोज शर्मा

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा-संस्थान  
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

डॉ. राजीव कुमार सिंह

निदेशक (शैक्षिक)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा-संस्थान  
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

## पाठ्यक्रम निर्माण समिति

समिति अध्यक्ष

स्वामी आत्मप्रियानन्द

कुलपति, रामकृष्ण मिशन विवेकानंद विश्वविद्यालय  
बेलुर मठ, हावड़ा-711202 (प. बंगाल)

समिति उपाध्यक्ष

डॉ. वेंकट रमण भट्ट

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत अध्ययन विभाग)  
रामकृष्ण मिशन विवेकानंद विश्वविद्यालय  
बेलुर मठ, हावड़ा-711202 (प. बंगाल)

श्री पलाश घोडई

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)  
राजा नरेन्द्र लाल खान महिला महाविद्यालय  
मण्डल-पश्चिम मेदिनीपुरम-721102 (प. बंगाल)

श्री सुमन्त चौधरी

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)  
सबं सजनीकान्त महाविद्यालय  
पत्रालय-लुटुनिया, रक्षालय-सबं  
मण्डल-पश्चिम मेदिनीपुरम-721166 (प. बंगाल)

डॉ. भास्करानन्द पाण्डेय

उपप्राचार्य, सर्वोदय बाल विद्यालय, नई दिल्ली

श्री मलय पोडे

सहायक प्राध्यापक (W.B.E.S.) (संस्कृत विभाग)  
राणीबाँध, मण्डल-बाँकुडा-722135 (प. बंगाल)

श्री सन्तु कुमार पान

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)  
विजयनारायण महाविद्यालय  
पत्रालय- इटाचुना, मण्डल-हुगली-712147 (प. बंगाल)

स्वामी वेदतत्त्वानन्द

प्राचार्य, रामकृष्ण मठ विवेकानंद वेद विद्यालय  
बेलुर मठ, मण्डल-हावड़ा-711202 (प. बंगाल)

डॉ. राम नारायण मीणा

सहायक निदेशक (शैक्षिक)  
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान  
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

## पाठ्यक्रम समन्वयक

डॉ. राम नारायण मीणा

सहायक निदेशक (शैक्षिक)  
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान  
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

## पाठ्यक्रम निर्माण समिति

### संपादक मण्डल

#### डॉ. वेंकटरमण भट्ट

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत अध्ययन विभाग)  
रामकृष्ण मिशन विवेकानंद विश्वविद्यालय  
बेलूर मठ, हावड़ा-711202 (प. बंगाल)

#### स्वामी वेदतत्त्वानन्द

प्राचार्य  
रामकृष्ण मठ विवेकानंद वेद विद्यालय  
बेलूर मठ, मण्डल-हावड़ा 711202 (प. बंगाल)

### पाठ लेखक

( पाठ: 1, 2, 3, 19, 15 )

#### श्री सन्तु कुमार पान

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)  
विजयनारायण महाविद्यालय  
पत्रालय- इटाचुना, मण्डल-हुगली- 712147 (प. बंगाल)

( पाठ: 1, 2, 3, 19, 15 )

#### श्री मलय पोडे

सहायक प्राध्यापक (W.B.E.S.) (संस्कृत विभाग)  
राणीबाँध, मण्डल-बाँकुडा- 722135 (प. बंगाल)

( पाठ: 4-7 )

#### श्री राहुल गाजि

अनुसन्धाता (संस्कृत विभाग)  
जादवपुर विश्वविद्यालय  
कलकत्ता - 700032 (प. बंगाल)

( पाठ: 4-7 )

#### श्री पलाश घोडई

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)  
राजा नरेन्द्र लाल खान महिला महाविद्यालय  
मण्डल-पश्चिम मेदिनीपुरम-721102 (प. बंगाल)

( पाठ: 8 )

#### डॉ. वेंकट रमण भट्ट

सहायक प्राध्यापक: (संस्कृत अध्ययन विभाग)  
रामकृष्ण मिशन विवेकानंद विश्वविद्यालय  
बेलूर मठ, हावड़ा-711202 (प. बंगाल)

( पाठ: 19-22 )

#### श्री सुमन्त चौधरी

सहायक प्राध्यापक (संस्कृत विभाग)  
सब सजनीकान्त महाविद्यालय  
पत्रालय-लुटुनिया, रक्षालय-सबं  
मण्डल-पश्चिम मेदिनीपुरम-721166 (प. बंगाल)

### अनुवादक मण्डल

#### डॉ. योगेश शर्मा

सहायक प्रोफेसर (संस्कृत)  
संस्कृत, दर्शन और वैदिक अध्ययन विभाग  
बनस्थली विद्यापीठ, टॉक-304022 (राजस्थान)

#### सुश्री प्रियंका रस्तोगी

अनुसन्धाता  
संस्कृत, दर्शन और वैदिक अध्ययन विभाग  
बनस्थली विद्यापीठ, टॉक-304022 (राजस्थान)

#### डॉ. राम नारायण मीणा

सहायक निदेशक (शैक्षिक)  
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान  
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

#### श्री पुनीत त्रिपाठी

वरिष्ठ कार्यकारी अधिकारी (शैक्षिक)  
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान  
नोएडा, (उत्तर प्रदेश)-201309

### रेखाचित्राड्कन और मुखपृष्ठ चित्रण

#### स्वामी हररूपानन्द

रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ  
मण्डल-हावड़ा- 711202 (प. बंगाल)

## आप से दो बातें..

### अध्यक्षीय सन्देश

प्रिय शिक्षार्थी,

‘भारतीय ज्ञान परम्परा’ पाठ्यक्रम के अध्ययन के लिए आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ। भारत अति प्राचीन और विशाल देश है। भारत का वैदिक वाङ्मय भी उतना ही प्राचीन, प्रशंसनीय और श्रेष्ठ है। सृष्टिकर्ता भगवान ही भारतीयों के सम्पूर्ण विद्याओं के प्रेरक हैं, ऐसा सिद्धान्त शास्त्रों में प्राप्त होता है। भारत के प्रसिद्ध विद्वान, सामान्य जनमानस तथा अन्य ज्ञानी लोगों के बीच प्राचीन काल में आदान-प्रदान का माध्यम संस्कृत भाषा ही थी ऐसा सभी को ज्ञात है। इतने लम्बे काल में भारत के इतिहास में जो शास्त्र लिखे गए, जो चिन्तन हुए, जो भाव प्रकट हुए वे सभी संस्कृत भाषा के साहित्यरूपी भण्डार में निबद्ध हैं। इस भण्डार का आकार कितना है, भाव कितने गंभीर हैं, मूल्य कितना अधिक है, इसका निर्धारण करने में कोई भी समर्थ नहीं है। प्राचीन काल में भारतीय क्या-क्या पढ़ते थे, वह निम्न श्लोक के माध्यम से प्रकट होता है -

**अङ्गानि वेदाश्चत्वारो मीमांसा न्यायविस्तरः। पुराणं धर्मशास्त्रं च विद्या ह्येताश्चतुर्दश॥ (वायुपुराणम् 61.78)**

इस श्लोक में चौदह प्रकार की विद्याएँ बताई गयी हैं। चार वेद (और चार उपवेद), छः वेदाङ्ग मीमांसा (पूर्वोत्तरमीमांसा), न्याय (आन्वीक्षिकी), पुराण (अठारह मुख्य पुराण और उपपुराण), धर्मशास्त्र (स्मृति) ये चौदह विद्या कहलाते हैं। इनके अलावा अनेक काव्य ग्रंथ और बहुत ही शास्त्र हैं। इन सभी विद्याओं का प्रवाह ज्ञान प्रदान करने वाला, प्रगति करने वाला और वृद्धि करने वाला है जो प्राचीन समय से ही चल रहा है। समाज के कल्याण के लिए भारत में विद्या दान परम्परा के रूप में गुरुकुलों में आध्यात्मिक, मनोवैज्ञानिक, आयुर्वेद, राजनीति, दण्डनीति, काव्य, काव्य शास्त्र और अन्य बहुत से शास्त्रों का अध्ययन-अध्यापन होता रहा है।

विद्या के शिक्षण के लिए ब्रह्मचारी परिवार को छोड़कर गुरुकुल में ब्रह्मचर्याश्रम को धारण कर जीवन बिताते थे और इन विद्याओं में पारंगत होते थे। इन विद्याओं में आज भी कुछ पारंगत लोग हैं। प्राकृतिक परिवर्तनों, विदेशी आक्रमणों, स्वदेश में हो रही ऊठा-पटक इत्यादि अनेक कारणों से पहले जैसी अध्ययन-अध्यापन की परम्परा अब छूटती जा रही है। इन पाठ्यक्रमों की, परीक्षा, प्रमाणपत्र इत्यादि आधुनिक शिक्षण पद्धति के द्वारा कुछ राज्यों/प्रदेशों में होता है, परन्तु बहुत से राज्यों/प्रदेशों में नहीं होता है। अतः इन प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन, परीक्षण और प्रमाणीकरण का होना आवश्यक है। इसे ध्यान में रखकर यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के द्वारा प्रारम्भ किया गया है। लोगों के कल्याण के लिए जितना ज्ञान आवश्यक है वैसा ज्ञान इन शास्त्रों में निहित है और मनुष्य के सामने प्रकट हो, ऐसा लक्ष्य है। जिसके द्वारा सभी यहाँ पर सुखी हों, सभी निरोगी हों, सभी कल्याण दृष्टि से कल्याणकारी हों, किसी को कोई दुःख नहीं हो, कोई किसी को दुःख नहीं दें, इस प्रकार अत्यन्त उदार उद्देश्य को ध्यान में रखकर ‘भारतीय ज्ञान परम्परा’ इस नाम से पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। विज्ञान शरीरारोग्य का चिन्तन करता है। कला विषय मनोविज्ञान तथा आध्यात्मिक विज्ञान को का पोषण करता है। विज्ञान साधन स्वरूप और सुखोपभोग साध्य है। अतः निःसन्देह रूप से कहा जा सकता है कि कला विषय शाखा विज्ञान से भी श्रेष्ठ है। कला को छोड़कर विज्ञान से सुख प्राप्त नहीं किया जा सकता है बल्कि विज्ञान को छोड़कर कला से सुख को अवश्य प्राप्त कर सकते हैं।

यह संस्कृत साहित्य का पाठ्यक्रम छात्रानुकूल, ज्ञानवर्धक, लक्ष्य साधक और पुरुषार्थ साधक हैं, ऐसा मेरा मानना है। इस पाठ्यक्रम के निर्माण में जिन हिताभिलाषी, विद्वान, उपदेष्टा, पाठ लेखक, त्रुटि संशोधक और मुद्रणकर्ता इत्यादि ने परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहायता की है। उनके प्रति संस्थान की तरफ से मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। रामकृष्ण मिशन-विवेकानन्द विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीमान् स्वामी आत्मप्रियानन्द जी का विशेष रूप से धन्यवाद जिनकी अनुकूलता और प्रेरणा के बिना इस कार्य की परिसमाप्ति दुष्कर थी। इस पाठ्यक्रम के अध्येताओं का विद्या से कल्याण हो, जीवन में सफल हो, विद्वान बनें, देशभक्त हो और समाज सेवक हो, ऐसी हमारी हार्दिक इच्छा है।

अध्यक्ष

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

## आप से दो बातें..

### निदेशकीय वाक्

प्रिय पाठक,

‘भारतीय ज्ञान परम्परा’ पाठ्यक्रम को पढ़ने की इच्छा से उत्साहित भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुरागी और उपासकों का हार्दिक स्वागत करता हूँ। यह अत्यधिक हर्ष का विषय है कि गुरुकुलों में पढ़ाये जाने वाला पाठ्यक्रम हमारे राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पाठ्यक्रम में भी सम्मिलित किया गया है। आशा है की लम्बे समय से हमारी प्राचीन संस्कृति से जो दूरी थी वह अब समाप्त हो जाएगी। हिन्दु, जैन और बौद्ध धर्म के धार्मिक, आध्यात्मिक और काव्यादि वाङ्मय प्रायः संस्कृत में लिखा हुआ है। सैकड़ों, करोड़ों मनुष्यों के प्रिय विषयों की भूमिका के माध्यम से प्रस्तुत प्रवेश योग्यता के द्वारा और मन को प्रसन्न करने के लिए माध्यमिक स्तर और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर कुछ विषय सम्मिलित किये गए हैं। जैसे आंग्ल, हिंदी, आदि भाषा ज्ञान के बिना उस भाषा के लिखे गए माध्यमिक स्तरीय ग्रन्थ पढ़ने में और समझ में सक्षम नहीं हो सकते हैं, वैसे ही यहाँ पर प्रारम्भिक संस्कृत तथा हिन्दी भाषा को नहीं जानते तो, इस पाठ्यक्रम को जानने में समर्थ नहीं हो सकते हैं। अतः प्रारम्भिक संस्कृत तथा हिन्दी के विद्वान् छात्र यहाँ इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के अधिकारी है ऐसा जानना चाहिए।

गुरुकुलों में अध्ययन करने वाले छात्र आठवीं कक्षा तक जितना संभव हो अपनी परंपरा से अध्ययन करें। नौवीं, दशवीं कक्षा और ग्यारहवीं तथा बारहवीं कक्षा तक भारतीय ज्ञान परम्परा के इस पाठ्यक्रम का निष्ठा से नियमित अध्ययन करें। इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए योग्य होंगे।

संस्कृत के विभिन्न शास्त्रों में किया गया कठिन परिश्रम विद्वान, प्राध्यापक, शिक्षक और शिक्षाविद इस पाठ्यक्रम का प्रारूप रचना में, विषय निर्धारण के लिए, विषय परिमाण निर्धारण में, विषय प्रकट करने का, भाषा स्तर निर्णय में और विषय पाठ लिखने में संलग्न हैं। अतः इस पाठ्यक्रम का स्तर उन्नत होना है।

संस्कृत साहित्य की यह स्वाध्याय सामग्री आपके लिए पर्याप्त, सुबोध, रुचिकर, आनन्दरस को प्रदान करने वाली, सौभाग्य प्रदान करने वाली, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि पुरुषार्थों के लिए उपयोगी रहेगी, ऐसी हम आशा करते हैं। इस पाठ्यक्रम का प्रथम लक्ष्य है की भारतीय ज्ञान परम्परा का शैक्षणिक क्षेत्रों में विशिष्ट और योग्य स्थान स्वीकृत होना चाहिए। यह लक्ष्य इस पाठ्यक्रम के माध्यम से पूर्ण होगा, ऐसा हमारा दृढ विश्वास है। पाठक अध्ययनकाल में यदि मानते हैं की इस अध्ययन सामग्री में, पाठ के सार में, जहाँ संशोधन, परिवर्तन और परिवर्धन संस्कार चाहते हैं, उन सभी के प्रस्ताव का हम स्वागत करते हैं। इस पाठ्यक्रम को फिर भी और अधिक प्रभावी, उपयोगी और सरल बनाने में आपके साथ हम हमेशा तत्पर हैं।

सभी अध्येताओं के अध्ययन में सफलता, जीवन में सफलता और कृतकृत्य के लिए हमारे आशीर्वचन हैं।

### किं बाहुना विस्तरेण।

अस्माकं गौरववाणीं जगति विरलाम् सर्वविद्यायां लक्ष्यभूताम् एव उद्धरामिह

सर्वेऽत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्।

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्।

शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान् विमोचयेत्॥

स्वस्त्यस्तु विश्वस्य खलः प्रसीदतां ध्यायन्तु भूतानि शिवं मिथो धिया।

मनश्च भद्रं भजतादधोक्षजे आवेश्यतां नो मतिरप्यहैतुकी॥

निदेशक (शैक्षिक)  
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

## आप से दो बातें...

### समन्वयक वचन

प्रिय जिज्ञासु,

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै। तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

परम्परा को आधार मानकर यह प्रार्थना है कि हमारा अध्ययन विघ्नों से रहित हो। अज्ञान का नाश करने वाला तेजस्वी हो। द्वेष भावना का नाश करने वाला हो। विद्या लाभ के द्वारा सभी कष्टों का निवारण करने वाला हो।

‘भारतीय ज्ञान परम्परा’ पाठ्यक्रम के अङ्गभूत यह पाठ्यक्रम माध्यमिक कक्षा के लिए निर्धारित किया गया है। इस पाठ्यक्रम की अध्ययन सामग्री आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं परम हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाषा को जो जानता है वह इसके अध्ययन में समर्थ है।

विद्वानों का अभिप्राय और अनुभवों के आधार पर काव्य और काव्यशास्त्र का फल रस ही है। आनंद रस स्वरूप ही है। सभी प्राणियों का सभी कार्य आनंद और सुखपूर्वक सम्पन्न हों, यहीं प्रबल इच्छा है। काव्य के सभी विषय रस में ही स्थित हैं। काव्यों के अनेक प्रकार हैं और काव्य प्रपंच सबसे महान हैं। काव्य बहुत हैं। उनमें से विविध काव्यांशों का चयन करके इस पाठ्य सामग्री में सम्मिलित किया गया है। इसी प्रकार साहित्य का सामान्य स्वरूप, काव्य का स्वरूप, भेद आदि प्रारम्भिक ज्ञान यहाँ पर दिया गया है। पारम्परिक गुरुकुलों में जिस शिक्षण पद्धति से पाठ दिए जाते थे, उसी पद्धति का अनुसरण कर यह पाठ्यक्रम प्रतिपादित किया गया है।

माध्यमिक कक्षा हेतु निर्धारित साहित्य विषय का यह पाठ्यक्रम अत्यन्त उपकारक है। शिक्षार्थी इसके अध्ययन से ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होंगे। इसके अध्ययन से छात्र अन्य काव्यों में प्रवेश के योग्य होंगे। यह पाठ्य सामग्री काव्य और काव्यशास्त्र का श्रद्धा सहित अध्ययन में प्रवेश के लिए और मन को शांति देने वाली है। इस पाठ्य सामग्री के आकार पर नहीं जाना चाहिए और न इससे भय होना चाहिए। परन्तु गम्भीर रूप से अध्ययन करना चाहिए।

सम्पूर्ण पाठ्य पुस्तक दो भागों में विभक्त है। पाठक पाठो को अच्छी तरह से पढ़कर पाठ में आये प्रश्नों के उत्तरों पर स्वयं विचार कर अन्त में दिए हुए प्रश्नों के उत्तरों को देखें, और उन उत्तरों को अपने उत्तरों से मिलाएं। प्रत्येक पत्र में दिए हुए रिक्त स्थान पर टिप्पणी करनी चाहिए। पाठ के अन्त में दिये प्रश्नों के उत्तरों का निर्माण करके परीक्षा के लिए तैयार हो जाएँ।

शिक्षार्थी अध्ययन काल में किसी भी कठिनता का अनुभव करते हैं, तो अध्ययन केन्द्र में किसी भी समय जाकर के समस्या के समाधान के लिए आचार्य के समीप जाएँ या राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के साथ ई-पत्रद्वारा सम्पर्क करें। वेबसाइट पर भी संपर्कव्यवस्था है। वेबसाइट [www.nios.ac.in](http://www.nios.ac.in) इस प्रकार से है।

ये पाठ्य विषय आपके ज्ञान को बढ़ाए, परीक्षा में सफलता को प्राप्त करवाए, आपकी विषय में रुचि बढ़ाए, आपका मनोरथ पूर्ण करे, ऐसी कामना करता हूँ।

अज्ञानान्धकारस्य नाशाय ज्ञानज्योतिषः दर्शनाय च इयं में हार्दिकी प्रार्थना

ॐ असतो मा सद् गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मांमृतं गमय ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

भवत्कल्याणकामी,  
पाठ्यक्रम समन्वयक  
राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

## अपने पाठ कैसे पढ़ें!

संस्कृत साहित्य, माध्यमिक स्तर की इस पाठ्य सामग्री को विशेष रूप से आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। आप स्वतंत्र रूप से स्वयं पढ़ सकें इसलिए इसे एक प्रारूप में ढाला गया है। निम्नलिखित संकेत आपको सामग्री का सर्वोत्तम उपयोग करने का तरीका बताएंगे। दिए गए पाठों को कैसे पढ़ना है आइए, जानें

**पाठ का शीर्षक :** इसे पढ़ते ही आप अनुमान लगा सकते हैं कि पाठ में क्या दिया जा रहा है। इसे पढ़िए।

**भूमिका :** यह भाग आपको पूर्व जानकारी से जोड़ेगा और दिए गए पाठ की सामग्री से परिचित कराएगा। इसे ध्यानपूर्वक पढ़िए।



**उद्देश्य :** प्रस्तुत पाठ को पढ़ने के बाद आप इस पाठ के उद्देश्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाएंगे। इन्हें याद कर लीजिए।



**पाठगत प्रश्न :** इसमें एक शब्द अथवा एक वाक्य में पूछे गए प्रश्न हैं तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्न हैं। ये प्रश्न पढ़ी हुई इकाई पर आधारित हैं इनका उत्तर आपको देते रहना है। इसी से आपकी प्रगति की जाँच होगी। ये सवाल हल करते समय आप हाथ में पेंसिल रखिए और जल्दी-जल्दी सवालों के समाधान ढूँढ़ते रहिए और अपने उत्तरों की जाँच पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से मिलाइए। उत्तर ठीक न होने पर इकाई को पुनः पढ़िए।



**आपने क्या सीखा :** यह पूरे पाठ का संक्षिप्त रूप है- कहीं यह बिंदुओं के रूप में है, कहीं आरेख के रूप में तो कहीं प्रवाह चार्ट के रूप में। इन मुख्य बिंदुओं का स्मरण कीजिए। यदि आप कुछ अपने मतलब की मिलती-जुलती नई बातें जोड़ना चाहते हैं तो उन्हें भी वहीं बढ़ा सकते हैं।



**पाठांत प्रश्न :** पाठ के अंत में दिए गए लघु उत्तरीय तथा दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। इन्हें आप अलग पृष्ठों पर लिखकर अभ्यास कीजिए। यदि चाहें तो अध्ययन केन्द्र पर अपने शिक्षक या किसी उचित व्यक्ति को दिखा भी सकते हैं और उन पर नए विचार ले सकते हैं।



**उत्तरमाला :** आपको पहले ही बताया जा चुका है इसमें पाठगत प्रश्नों और क्रियाकलापों के उत्तर दिए जाते हैं। अपने उत्तरों की जाँच इस सूची से कीजिए।



## पुस्तक-1

### सुभाषित आदि

1. सुभाषित-2
2. सुभाषित-2
3. प्रहैलिका तथा समस्या श्लोक

### कथा तथा साहित्य

4. वेताल पच्चीसी-2
5. वेताल पच्चीसी-2
6. शुकसप्तति
7. पञ्चतन्त्र

### काव्यशास्त्र का परिचय

8. काव्यशास्त्र प्रवेश-2
9. काव्यशास्त्र प्रवेश-2
10. काव्यशास्त्र प्रवेश-2
11. काव्य के प्रकार

## पुस्तक-2

### रामायण का अध्ययन

(वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड  
तृतीय सर्ग के 2-39 श्लोक)

12. राम तथा हनुमान का मिलन
13. हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा वचन
14. राम के द्वारा हनुमान के प्रति प्रशंसा वचन
15. राम और सुग्रीव की मैत्री

### कर्णभारम्

16. कर्ण का परिताप
17. अस्त्र का वृतांत
18. कवच तथा कुण्डल का दान

### किरातार्जुनीयम्

(प्रथम सर्ग 2-30 श्लोक)

19. वनेचर के चरानुरूप वचन
20. कपटी दुर्योधन का धर्माचरण
21. शङ्कित दुर्योधन का नीतिकौशल
22. युधिष्ठिर प्रबोध

# संस्कृत साहित्य

## माध्यमिक पाठ्यक्रम-248

### पुस्तक-2

क्र. सं.	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
12.	रामायण	1-12
13.	हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा	13-28
14.	राम द्वारा हनुमान की प्रशंसा	29-42
15.	राम सुग्रीव की मित्रता	43-50
16.	कर्ण का परिताप	51-62
17.	अस्त्र का वृत्तान्त	63-70
18.	कवच कुण्डल का दान	71-86
19.	वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन	87-98
20.	कपटी दुर्योधन का धर्माचरण	99-112
21.	शक्ति दुर्योधन का नीति कौशल	113-130
22.	युधिष्ठिर का प्रबोध	131-144

## रामायण



ध्यान दें:

हम इस संस्कृत की महत्ता को स्पष्ट रूप से नहीं जानते हैं। संस्कृत ही देवों तथा वेद दृष्टा ऋषियों की भाषा है। इस भाषा के व्यवहार से हम गर्व का अनुभव करते हैं। किन्तु पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करते हुए कोई दिग्भ्रष्ट भी पुनः प्रबोध को प्राप्त कर इसके व्यवहार में गर्व को अनुभव करता है। 'संस्कृत और संस्कृति सहगामिनी है' ऐसा स्वामी विवेकानन्द ने कहा है। अतः अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए हम सभी को ही विशेषतः भारतीयों के द्वारा संस्कृत का सम्मान अवश्य करना चाहिए। इस सम्पूर्ण जगत में संस्कृत के बहुत से मनोहर काव्य रत्न हैं। उनमें अब तक आदिकाव्य रामायण प्रसिद्ध है। इस महाकाव्य के रचयिता महर्षि वाल्मीकि हैं। वाल्मीकि के विषय में हम सब ही जानते हैं कि रत्नाकर नामक कोई डाकू नारद मुनि से कहे गए और ऋषि रूप से परिवर्तित ज्ञान को प्राप्त करके भगवान श्री राम के वृत्तान्त को रामायण काव्य में निबद्ध किया।

राम का मार्ग जिस काव्य में वह रामायण, यह रामायण शब्द की व्युत्पत्ति है। अर्थात् भगवान श्री राम जिस मार्ग से जीवन यापन करते हैं उस विषय में जिस काव्य में वर्णित है, वह काव्य ही रामायण है। सम्पूर्ण रामायण ग्रन्थ में 24000 श्लोक हैं। वहाँ सात काण्डों में ये श्लोक विभक्त हैं। इस संसार में किस प्रकार से रहना चाहिए इस विषय में स्पष्ट ज्ञान रामायण में प्राप्त होता है। इसीलिए आज भी भारतवर्ष के बहुत से घरों में रामायण को पढ़ा जाता है। संस्कृत जगत में बहुत से रमणीय महाकाव्य होने पर भी लोगों के हृदय में रामायण का जो स्थान है उसे प्राप्त करने के लिए वे काव्य अयोग्य हैं। प्रायः सभी भारतीय बिना प्रयास के ही माता अथवा पितामही के मुख से रामायण की कथा को सुनते हैं। भारतवर्ष में कुछ ही ऐसे प्राप्त होते हैं जो रामायण की कथा को नहीं जानते हैं। रामायण के सातों काण्डों में किष्किन्धाकाण्ड अत्यन्त प्रसिद्ध है। उस काण्ड में वर्तमान राम हनुमान का प्रथम संवाद सहृदयों को बार बार आह्लादित करता है। इस विषय पर लोगों ने बहुत सुना और दूरदर्शनादि पर देखा। परन्तु वाल्मीकि रामायण के पढ़ने से जैसा स्पष्ट बोध होता है, वैसा बोध दूसरे पथ से नहीं होता। अतः संस्कृत भाषा को सम्यक् रूप से जानने के लिए हमें वाल्मीकि विरचित रामायण को अवश्य पढ़ना चाहिए।

## रामायण- राम हनुमान मिलन

इस जगत में प्रसिद्ध प्रह्लादादि भक्तों में से एक हनुमान हैं। यह हनुमान भगवान राम का महान भक्त है। स्वयं के सम्पूर्ण हृदय में केवल राम ही विराजित है यह देखने के लिए उन्होंने अपने वक्ष को चीरकर वहाँ श्री राम और प्रभुपत्नी सीता विराजित हैं इस प्रकार देखा। आज भी कहते हैं कि जहाँ-जहाँ

## रामायण



ध्यान दें:


**उद्देश्य**

- इस पाठ को पढ़कर आप समर्थ होंगे;
- राम हनुमान के प्रथम साक्षात्कार के विषय में;
- हनुमान के वाणी माधुर्य को जान पाने में;
- राम लक्ष्मण की वीरता विषयक बोध प्राप्त करने में;
- रामायण काल में लोगों का व्यवहार कैसा था यह जानने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए यह जानने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए इस विषय में;
- उपमा अलंकार के विषय में कुछ ज्ञान प्राप्त करने में;

### 12.1 ) मूल पाठ

वचो विज्ञाय हनुमान् सुग्रीवस्य महात्मनः।  
पर्वतात् ऋष्यमूकात् तु पुप्लुवे यत्र राघवौ॥1॥

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान् मारुतात्मजः  
भिक्षारूपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः॥2॥

ततस्स हनुमान् वाचा श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया।  
विनीतवत् उपागम्य राघवौ प्रणिपत्य च॥3॥

आबभाषे च तौ वीरौ यथावत् प्रशशंस च।  
संपूज्य विधिवद् वीरौ हनुमान् वानरोत्तमः॥4॥

उवाच कामतो वाक्यम् मृदु सत्यपराक्रमौ।  
राजर्षिदेवप्रतिमौ तापसौ संशितव्रतौ॥5॥

देशम् कथम् इमम् प्राप्तौ भवन्तौ वरवर्णिनौ।  
त्रासयन्तो मृगगणान् अन्यांश्च वनचारिणः॥6॥

पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्षमाणौ समन्ततः।  
इमाम् नदीं शुभजलां शोभयन्तौ तरस्विनौ॥7॥

धैर्यवन्तो सुवर्णाभौ कौ युवाम् चीरवाससौ।  
निःश्वसन्तौ वरभुजौ पीडयन्ताविमाः प्रजाः॥8॥

सिंहविप्रेक्षितौ वीरौ महाबलपराक्रमौ।  
शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनौ॥9॥  
श्रीमन्तौ रूपसंपन्नो वृषभश्रेष्ठविक्रमौ।  
हस्तिहस्तोपमभुजौ द्युतिमन्तौ नरर्षभौ॥10॥

## 12.2 ) अब मूल पाठ को समझें

वचो विज्ञाय हनुमान् सुग्रीवस्य महात्मनः।  
पर्वतात् ऋष्यमूकात् तु पुप्लुवे यत्र राघवौ॥11॥

अन्वय- हनुमान् महात्मनः सुग्रीवस्य वचः विज्ञाय यत्र राघवौ आस्ताम्, ऋष्यमूकात् पर्वतात् तु तत्र पुप्लुवे।

अन्वयार्थः- हनुमान महाबुद्धिशाली सुग्रीव नामक वनराज के वचनों को जानकर जहाँ राम और लक्ष्मण थे, ऋष्यमूक पर्वत से वहाँ गए।

सरलार्थः- सुग्रीव के सचिव हनुमान कपिराज के सुग्रीव के वचनों के अनुसार राम लक्ष्मण के स्वरूप को जानने के लिए ऋष्यमूक पर्वत से उनके समीप गए।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण के साथ हनुमान के प्रथम साक्षात्कार को कहना आरम्भ किया। कपिराज सुग्रीव ने धनुष बाणादि शस्त्रों से युक्त, बड़ी भुजाओं से युक्त राम लक्ष्मण को दूर से देखा, इसीलिए उन दोनों को बाली ने भेजा है ऐसा मानकर वह डर गया। इसीलिए वह उन दोनों के आगमन कारण के ज्ञान हेतु अपने सचिव हनुमान को आदेश दिया। और हनुमान उसके वचनानुसार उन दोनों के आगमन कारण को जानने के लिए ऋष्यमूक पर्वत से उन दोनों के पास प्रस्थान किया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विज्ञाय- वि + ज्ञा धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- पुप्लुवे- गमनार्थक प्लुङ् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- वचो विज्ञाय - वचः + विज्ञाय विसर्ग सन्धि।
- पर्वतादृष्यमूकात्- पर्वतात् + ऋष्यमूकात् जशत्व सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- हनुमता महात्मनः सुग्रीवस्य वचः विज्ञाय यत्र राघवाभ्याम् अभूयत, ऋष्यमूकात् पर्वतात् तु तत्र पुप्लुवे।

कपिरूपं परित्यज्य हनुमान् मारुतात्मजः  
भिक्षुरूपं ततो भेजे शठबुद्धितया कपिः॥12॥

अन्वय- मारुतात्मजः कपिः हनुमान् शठबुद्धितया कपिरूपं परित्यज्य ततः भिक्षुरूपं भेजे।

अन्वयार्थः- वायुपुत्र वानर हनुमान चपल बुद्धि से वानर रूप को त्यागकर फिर भिक्षुरूप को धारण करता है।



ध्यान दें:



ध्यान दें:

**सरलार्थ:-** वायु पुत्र हनुमान चपल बुद्धि से अपने स्वरूप वानर रूप को छिपाकर भिक्षुक वेश को धारण करके राम लक्ष्मण के समीप गया।

**तात्पर्यार्थ:-** वानरों की शठ बुद्धि संसार में प्रसिद्ध है। इसीलिए सुग्रीव के वचनानुसार राम लक्ष्मण के पास जाने के लिए उद्यत हनुमान ने सोचा कि- हनुमान तो वानर है इसीलिए वह भी शठ बुद्धि से सम्पन्न है ऐसा जानकर राम यदि उसके साथ संवाद नहीं किया तो। इसीलिए उसने अपने वानर स्वरूप को छिपाकर भिक्षुक के वेश को धारण किया। भिक्षुक आदि दरिद्र मनुष्यों पर महात्मा सदा ही दया भाव दिखाते हैं। इसीलिए राम लक्ष्मण भी भिक्षुक वेशधारी उस पर दया भाव होगा ऐसा हनुमान ने सोचा। इसीलिए उस रूप को त्यागकर भिक्षुक रूप ही ग्रहण किया। महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के बुद्धि प्रभाव का भी वर्णन प्रस्तुत श्लोक में किया है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परित्यज्य - परि + त्यज् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- मारुतात्मज:- मारुतस्य आत्मजः मारुतात्मजः- षष्ठी तत्पुरुष।
- भेजे- भज् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- ततो भेजे- ततः+ भेजे विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** मारुतात्मजेन कपिना हनुमता षठबुद्धितया कपिरूपं परित्यज्य ततः भिक्षुरूपं भेजे।

ततस्स हनुमान् वाचा श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया।

विनीतवत् उपागम्य राघवौ प्रणिपत्य चा॥३॥

आबभाषे च तौ वीरौ यथावत् प्रशशंस च।

**अन्वय-** ततः विनीतवत् हनुमान तौ वीरौ राघवौ उपागम्य प्रणिपत्य च श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया वाचा आबभाषे यथावत् प्रशशंस च।

**अन्वयार्थ:-** भिक्षुरूप को धारण करने बाद हनुमान ने विनम्रता से उन दोनों वीरों राम और लक्ष्मण के समीप आकर प्रणाम किया और सुमधुर मनोहर वाणी बोले और उचित प्रकार से प्रशंसा की।

**सरलार्थ:-** भिक्षुक वेशधारी हनुमान विनम्रता से राम लक्ष्मण के पास गए। और वहाँ जाकर उसने प्रारम्भ में उन दोनों को प्रणाम किया। उसके बाद अपनी सुमधुर और रम्य वाणी से उन दोनों के साथ वार्तालाप आरम्भ किया और फिर उन दोनों वीरों की उचित प्रकार से स्तुति की।

**तात्पर्यार्थ:-** इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान की विनम्रता को वर्णित किया है। भिक्षुक रूप धारण करने के बाद हनुमान राम लक्ष्मण के आगमन का कारण जानने के लिए उनके समीप गया। वहाँ आकर उसने विनम्रता से पहले उन दोनों को प्रणाम किया। भिक्षुरूप हनुमान ने राम और लक्ष्मण को प्रणाम किया। गृहस्थों को भिक्षुओं के प्रति प्रणाम करना चाहिए ऐसा ज्ञात है। उसके बाद हनुमान ने अपने मधुर वचनों से उन दोनों की उचित प्रकार से प्रशंसा की। उचित प्रकार से प्रशंसा को करके हनुमान ने उन दोनों की मिथ्या स्तुति नहीं की ऐसा महर्षि वाल्मीकि बताना चाहते हैं। उसके बाद उसने अपनी सुमधुर सुमनोहर और रमणीय वाणी से उन दोनों के साथ वार्तालाप आरम्भ किया। इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के वाणी माधुर्य को भी वर्णित किया है।



ध्यान दें:

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सुमनोज्ञा- सुष्टु मनोज्ञं सुमनोज्ञम्, गति समास।
- उपागम्य- उप + गम् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- प्रणिपत्य- प्र + नि + पत् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- आबभाषे- आ + भाष् धातु + लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- प्रशशंस- प्र + शंस् धातु + लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- ततश्च- ततः + च विसर्ग सन्धि।
- विनीतवदुपागम्य- विनीतवत् + उपागम्य जश्त्व सन्धि

प्रयोग परिवर्तन- ततः विनीतवत् हनुमता तौ वीरौ राघवौ उपागम्य प्रणिपत्य च श्लक्ष्णया सुमनोज्ञया वाचा आबभाषे यथावत् प्रशशंसे च।

**संपूज्य विधिवद् वीरौ हनुमान् वानरोत्तमः॥4॥**

**उवाच कामतो वाक्यम् मृदु सत्यपराक्रमौ।**

**अन्वय-** वानरोत्तमः हनुमान् वीरौ सत्यपराक्रमौ राम लक्ष्मणौ विधिवत् संपूज्य कामतः मृदु वाक्यम् उवाच।

**अन्वयार्थः-** वानरों में उत्तम मर्कट श्रेष्ठ हनुमान वीर, सत्य पराक्रमी उन दोनों राम और लक्ष्मण की उचित प्रकार से पूजा सत्कार करके सुग्रीव की इच्छा से मृदु वचनों को कहा।

**सरलार्थः-** हनुमान ने राम और लक्ष्मण के समीप जाकर, प्रारम्भ में विधिवत् उन दोनों का पूजन किया। फिर सुग्रीव की इच्छानुसार उसने अपनी मधुर वाणी से उन दोनों के साथ मृदु वाक्यों को कहना आरम्भ किया।

**तात्पर्यार्थः-** सुग्रीव के आदेश से हनुमान भिक्षु वेश को धारण करके राम और लक्ष्मण के समीप गया। और उन दोनों को प्राप्त कर उसने अतिथि पूजन के विषय में जिस प्रकार की विधि निर्दिष्ट है, उसके अनुसार उन दोनों सत्यपालक का पूजन किया। राम लक्ष्मण दोनों सत्य पराक्रमी हैं, उन दोनों की महिमा को जानते हैं। इसीलिए उन दोनों की हनुमान ने पूजा की। शिष्ट व्यक्ति सदैव ही पूजनीयों का पूजन करते हैं। इसीलिए हनुमान भी पूजनीय राम लक्ष्मण के पूजन से शिष्ट मार्ग का ही पथिक ज्ञात होता है। वस्तुतः हनुमान ने राम के ऊपर उसकी भक्ति से ही उसके पूजन को किया यह भी कहा जा सकता है। पूजा के बाद हनुमान ने जिस लिए सुग्रीव ने उसे यहाँ भेजा उसका स्मरण करके अपने मधुर वचन से वह कहना आरम्भ किया। हनुमान वानरों में श्रेष्ठ है इससे महर्षि हनुमान की महिमा को सूचित करते हैं।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- संपूज्य- सम् + पूज् धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- वानरोत्तमः- वानराणाम् उत्तमः वानरोत्तमः - षष्ठी तत्पुरुष
- उवाच- वच् धातु + लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

## रामायण



ध्यान दें:

- सत्यपराक्रमौ- सत्यम् एव पराक्रमः ययोस्तौ सत्यपराक्रमौ।- बहुव्रीहि समास।

## सन्धि युक्त शब्द

- विधिवद्वीरौ - विधिवत् + वीरौ। जश्त्व सन्धि।
- कामतो वाक्यम् - कामतः + वाक्यम् विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** वानरोत्तमेन हनुमता वीरौ सत्यपराक्रमौ रामलक्ष्मणौ विधिवत् संपूज्य कामतः मृदु वाक्यम् ऊचे।

राजर्षिदेवप्रतिमौ तापसौ संशितव्रतौ॥5॥

देशम् कथम् इमम् प्राप्तौ भवन्तौ वरवर्णिनौ।

त्रासयन्तो मृगगणान् अन्यांश्च वनचारिणः॥6॥

**अन्वय-** राजर्षिदेवप्रतिमौ संशितव्रतौ वरवर्णिनौ, मृगगणान् अन्यान् वनचारिणः च त्रासयन्तौ भवन्तौ तापसौ इमं देशं कथं प्राप्तौ।

**अन्वयार्थः-** राज ऋषियों और देवताओं की आकृति के जैसे, तीक्ष्ण व्रत के पालक, ब्रह्मचारियों में श्रेष्ठ और हिरणों का समूह जिस वनचारी से त्रासित होता है। अपने तेज को धारण करके आप तपस्वी इस प्रदेश किस कारण से आए।

**सरलार्थः-** हनुमान ने उन दोनों राम लक्ष्मण की पूजा, प्रशंसादि करके उन दोनों से पूछा कि राजर्षियों और देवताओं की जिस प्रकार की आकृति होती है। उस प्रकार की आकृति वाले आप दोनों कठोर व्रत के पालक हैं। किन्तु आप दोनों ब्रह्मचारी वनस्थान को, मृगों को और अन्य वनचारी जीवों को भयभीत करते हुए किस प्रकार से इस दुर्गम देश को आए हैं।

**तात्पर्यार्थः-** राम लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत की ओर आ गए। इसीलिए प्रस्तुत श्लोक में हनुमान ने उन दोनों के आगमन का कारण पूछा। देवर्षियों और देवताओं की जैसी आकृति होती है, राम लक्ष्मण के शरीर की भी वैसी ही आकृति थी। और वे दोनों तपस्वी कठोर व्रत पालक थे। ब्रह्मचर्य पालन से ब्रह्मचारियों में महान तेज उत्पन्न होता है, जिससे साधारण व्यक्ति कुछ त्रस्त होते हैं। इसीलिए राम लक्ष्मण के ब्रह्मचर्य तेज के प्रभाव से वन में स्थित मृग और अन्य वन्य जीव भयभीत हुए। इसीलिए हनुमान ने उन दोनों से पूछा कि सुन्दर आकृति वाले और ब्रह्मचर्य तेज से विशिष्ट आप दोनों तपस्वी, जहाँ साधारण व्यक्ति नहीं आते हैं वैसे इस दुर्गम देश में कैसे आए। वस्तुतः प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण के शारीरिक सौन्दर्य को, कठोर व्रत का पालक को और ब्रह्मचर्य तेज के प्रभाव को वर्णित किया है।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- राजर्षिदेवप्रतिमौ - राजर्षयः च देवाश्च राजर्षिदेवाः। इतरेतरद्वन्द्व समास।
- संशितव्रतौ - संशितौ तीक्ष्णौ व्रतौ ययोस्तौ संशितव्रतौ - बहुव्रीहि समास।
- वरवर्णिनौ- वरौ च तौ वर्णिनौ- कर्मधारय समास।
- त्रासयन्तौ- त्रास धातु + णिच् प्रत्यय + शतृ प्रत्यय प्रथमा बहुवचन।
- मृगगणान् - मृगानां गणाः मृगगणाः षष्ठी तत्पुरुष।



- वनचारिणः - वने चरन्ति।

### सन्धि युक्त शब्द

- अन्यांश्च - अन्यान् +च हल सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** राजर्षिदेवप्रतिमाभ्यां संशितव्रताभ्यां वरवर्णिभ्यां, मृगगणान् अन्यान् वनचारिणः च त्रासयद्भ्यां तापसाभ्याम् अयं देशः कथं प्राप्तः।

**पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्षमाणौ समन्ततः।**

**इमाम् नदीं शुभजलां शोभयन्तौ तरस्विनौ॥7॥**

**धैर्यवन्तो सुवर्णाभौ कौ युवाम् चीरवाससौ।**

**निःश्वसन्तौ वरभुजौ पीडयन्ताविमाः प्रजाः॥8॥**

**अन्वय-** समन्ततः पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्षमाणौ इमां शुभजलां नदीं शोभयन्तौ तरस्विनौ धैर्यवन्तौ सुवर्णाभौ चीरवाससौ निःश्वसन्तौ वरभुजौ इमाः वन्याः प्रजाः पीडयन्तौ युवां कौ।

**अन्वयार्थः-** चारों ओर पम्पा तीर पर वृक्षों को देखते हुए और इस पवित्र जल वाली नदी को सुशोभित करते हुए अतिबलशाली, धैर्यशाली, स्वर्ण कान्ति शरीर वाले, जीर्ण वस्त्रधारी और अपने लम्बी श्वास खींचने से थके हुए, सुन्दर भुजाओं वाले, अपने प्रभाव से वन्य जीवों को पीड़ित करते हुए आप दोनों कौन हैं।

**सरलार्थः-** हनुमान ने राम और लक्ष्मण से पूछा कि पम्पा सरोवर के तट पर स्थित वृक्षों को देखते हुए और इस पवित्र स्वच्छ पम्पा नदी को अपने सौन्दर्य से अलंकृत करते हुए अत्यन्त बलशाली, स्वर्ण जैसी कान्ति विशेष शरीर वाले, धैर्यवान, जीर्ण वस्त्रों को धारण करते हुए, वन में संचरण करने से थके हुए, सुन्दर भुजाओं से सम्पन्न इन वन्य जीवों को अपने दुःख दर्शन से पीड़ित करते हुए आप दोनों कौन हैं।

**तात्पर्यार्थः-** प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने, जहाँ हनुमान राम लक्ष्मण के परिचय को जानने के लिए आए' उस स्थान को वर्णित किया है। और वह स्थान पम्पा सरोवर तीर है। पम्पा सरोवर का जल अत्यन्त पवित्र था। अत्यन्त बलवान उन दोनों राम लक्ष्मण ने पम्पा सरोवर के तट पर बड़े वृक्षों को देखा था। उन दोनों के सौन्दर्य से वह सरोवर शोभित हुआ।

स्वर्ण की जैसी कान्ति होती है वैसी ही कान्ति उन दोनों के शरीर में थी। किन्तु इस प्रकार की कान्ति से युक्त शरीर होने पर भी उन दोनों के परिधान अत्यन्त जीर्ण थे। सुन्दर बाहु विशिष्ट आप दोनों पूरे दिन को व्याप्त कर इस स्थान को प्राप्त करने के लिए वन में संचार कर रहे हैं। इसीलिए वन संचरण से दोनों अत्यन्त थक गए। उन दोनों का यह थका हुआ रूप देखकर वन्य जीव भी पीड़ित हुए। इसलिए हनुमान ने पूछा कि पम्पा सरोवर के तट पर वृक्षों को देखा और अपने सौन्दर्य से उस सरोवर को सुशोभित करने वाले, स्वर्ण के समान आकृति वाले भी जीर्ण वस्त्रधारी विशाल भुजाओं से सम्पन्न वन संचरण से थके हुए और अपने दुःख के दर्शन से अन्य वन्य जीवों को पीड़ित करने वाले आप दोनों कौन हैं, आपका क्या परिचय है, किस कारण से इस दुर्गम देश को आए। वस्तुतः यहाँ पम्पा सरोवर के विस्तार के कारण उसके लिए नदी का प्रयोग किया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- पम्पातीररुहान्- पम्पायाः तीरं पम्पातीरम्- षष्ठी तत्पुरुष समास



ध्यान दें:

## रामायण



ध्यान दें:

- वीक्ष्माणौ- वि + ईक्ष् धातु + शानच् प्रत्यय, प्रथमा द्विवचन।
- धैर्यवन्तौ- धैर्यम् अस्य अस्ति। धैर्य + मतुप्
- सुवर्णाभौ - सुवर्णा आभा ययोस्तौ सुवर्णाभौ - बहुव्रीहि समास।
- चीरवाससौ - चीरं वासः ययोस्तौ - बहुव्रीहि समास।
- वरभुजौ- वरौ भुजौ ययोस्तौ- बहुव्रीहि समास।
- पीडयन्तौ - पीड धातु + शत् प्रत्यय। प्रथमा द्विवचन।

## सन्धि युक्त शब्द

- पीडयन्ताविमाः - पीडयन्तौ + इमाः। अच् सन्धि।

## प्रयोग परिवर्तन-

- समन्ततः पम्पातीररुहान् वृक्षान् वीक्ष्मणाभ्याम् इमां शुभजलां नदीं शोभयद्भ्यां तरस्विभ्यां धैर्यवद्भ्यां सुवर्णाभ्यां चीरवासोभ्यां निःश्वसद्भ्यां वरभुजाभ्याम् इमाः वन्याः प्रजाः पीडयद्भ्यां युवाभ्यां काभ्यां भूयते।

सिंहविप्रेक्षितौ वीरौ महाबलपराक्रमौ।

शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनौ॥१॥

अन्वय- सिंहविप्रेक्षितौ शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनौ महाबलपराक्रमौ वीरौ युवां कौ।

**अन्वयार्थः-** सिंह के समान दृष्टि, सिंह के समान बल और पराक्रम, इन्द्र के धनुष के समान धनुष को ग्रहण करके, शत्रुओं को नष्ट करने की शक्ति रखते हुए, महा बलशाली, महा पराक्रमी आप दोनों वीर कौन हैं।

**सरलार्थः-** सुग्रीव सचिव हनुमान राम लक्ष्मण से पूछते हैं की सिंह से अत्यधिक बलवान इन्द्र के धनुष के जैसे धनुष को लेकर शत्रुओं के नाशक, महाबलशाली वीर आप दोनों कौन हैं।

**तात्पर्यार्थः-** प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के मुख से राम लक्ष्मण की वीरता को वर्णित किया है। जैसे पशुओं के राजा सिंह की दृष्टि के सामने स्थित होना सदैव भयंकर होता है, उसी प्रकार राम लक्ष्मण के द्वारा देखना था। आप दोनों सिंह से भी अधिक बलवान थे। महाबलशाली आप दोनों के पराक्रम से शत्रु भी भयभीत हुए। इन्द्र के धनुष का लक्ष्य जैसे कभी व्यर्थ नहीं होता, वैसे ही आप दोनों के धनुष का लक्ष्य भी व्यर्थ नहीं होता है। इसीलिए हनुमान ने उन दोनों से पूछा कि सिंह से भी अधिक बलशाली, महापराक्रमी इन्द्र धनुष के समान धनुर्धारी आप दोनों कौन हैं, अथवा आप दोनों का क्या परिचय है, किस कारण से इस दुर्गम देश में आए।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सिंहविप्रेक्षितौ - सिंहस्य विप्रेक्षितं प्रेक्षणं - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- महाबलपराक्रमौ - महत् च तत् बलं महाबलम्- कर्मधारय समास
- शक्रचापनिभे - शक्रस्य चापः। - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- शत्रुनाशनौ- शत्रूणां नाशनौ -षष्ठी तत्पुरुष समास।

## प्रयोग परिवर्तन-

- सिंहविप्रक्षितौ शक्रचापनिभे चापे गृहीत्वा शत्रुनाशनाभ्यां महाबलपराक्रमाभ्यां वीराभ्यां युवाभ्यां काभ्यां भूयते।

**अलंकार आलोचना-** इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हो वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय चाप है। उपमान शक्रचाप है। सादृश्यवाचक पद है। सादृश्य धर्म शत्रुनाशकत्वम् है। इस श्लोक में चार अंश है इसीलिए पूर्णोपमा है।

**श्रीमन्तौ रूपसंपन्नौ वृषभश्रेष्ठविक्रमौ।**

**हस्तिहस्तोपमभुजौ द्युतिमन्तौ नरर्षभौ॥10॥**

**अन्वय-** श्रीमन्तौ रूपसंपन्नौ वृषभश्रेष्ठविक्रमौ हस्तिहस्तोपमभुजौ द्युतिमन्तौ नरर्षभौ युवां कौ।

**अन्वयार्थ:-** कान्तिमान, सौन्दर्य से युक्त, सांड के समान पराक्रमी, हाथी की सूंड के समान हाथ वाले, तेजस्वी, मनुष्यों में श्रेष्ठ आप दोनों कौन हैं

**सरलार्थ:-** वानरों में श्रेष्ठ हनुमान ने राम लक्ष्मण से पूछा कि कान्ति मान, सौन्दर्य युक्त, उत्तम सांड के पराक्रम के सदृश पराक्रमी, हाथी की सूंड के समान भुजाओं वाले, मनुष्यों में श्रेष्ठ आप दोनों कौन हैं।

**तात्पर्यार्थ:-** प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि हनुमान के माध्यम से राम लक्ष्मण के सौन्दर्य और वीरता की प्रशंसा करते हैं। राम लक्ष्मण वन में रहते हुए, वन में प्राप्त भोजन को खाते हुए, फिर भी राज पुत्र के समान कान्तिमान और सौन्दर्यशाली थे। सांडों में श्रेष्ठ सांड का जैसा पराक्रम होता है, ये दोनों उसी प्रकार पराक्रमशाली थे। हाथी की सूंड में जैसी शक्ति होती है, उन दोनों की भुजाओं में वैसी ही शक्ति थी। ये दोनों ब्रह्मचर्य व्रत के पालन से महा तेजस्वी थे। ये दोनों मनुष्यों में श्रेष्ठ थे। इसीलिए हनुमान ने पूछा कि इस प्रकार से सौन्दर्यवान, ऐसे शक्तिमान आप दोनों कौन हैं, आप दोनों का परिचय क्या है, किस कारण से आप दोनों इस दुर्गम देश को आए।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- रूपसंपन्नौ- रूपेण संपन्नौ इति- तृतीय तत्पुरुष समास
- वृषभश्रेष्ठविक्रमौ- वृषभेषु श्रेष्ठः वृषभश्रेष्ठः सप्तमी तत्पुरुष समास। वृषभश्रेष्ठस्य विक्रमः वृषभश्रेष्ठविक्रमः- षष्ठी तत्पुरुष समास।
- हस्तिहस्तोपमभुजौ- हस्तिनः हस्तौ हस्तिहस्तौ इति षष्ठी तत्पुरुष समास। हस्तिहस्तौ उपमा ययौस्तौ हस्तिहस्तोपमभुजौ इति- बहुव्रीहि समास।
- नरर्षभौ- नरेषु ऋषभौ नरर्षभौ - सप्तमी तत्पुरुष समास।

**प्रयोग परिवर्तन-** श्रीमद्भ्यां रूपसंपन्नाभ्यां वृषभश्रेष्ठविक्रमाभ्यां हस्तिहस्तोपमभुजाभ्यां द्युतिमद्भ्यां नरर्षभाभ्यां (युवाभ्यां काभ्यां भूयते)।

**अलंकार आलोचना-** इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और



**ध्यान दें:**



ध्यान दें:

लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हो वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय भुजौ है। उपमान हस्तिहस्तौ है। सादृश्यवाचक पद ही उपमा है। सादृश्यधर्म शक्तिमत्त्वम् है। सादृश्यधर्म के नहीं होने से इस श्लोक में लुप्तोपमा है।



### पाठगत प्रश्न

1. हनुमान किसके वचन से जानने के लिए ऋष्यमूक पर्वत गए?
2. हनुमान किस पर्वत से गए?
3. हनुमान किसका पुत्र था?
4. हनुमान क्या रूप धारण करके रामलक्ष्मण के समीप गया?
5. हनुमान ने किस प्रकार की वाणी से राम लक्ष्मण की प्रशंसा की?
6. राम लक्ष्मण ने किन को त्रासित करके उस देश को प्राप्त किया?
7. राम लक्ष्मण ने किस नदी के तीर पर वृक्षों को देखा था?
8. पम्पानदी किस प्रकार की थी?
9. राम लक्ष्मण किस को पीड़ित कर रहे थे?
10. राम लक्ष्मण ने कैसे धनुष को धारण किया था?
11. राम लक्ष्मण की भुजाएँ कैसी थीं?
12. राम हनुमान का प्रथम संवाद रामायण के किस काण्ड में है?
 

क. किष्किन्धाकाण्डे	ख. अरण्यकाण्डे
ग. सुन्दरकाण्डे	घ. युद्धकाण्डे
13. हनुमान किस पर्वत से राम लक्ष्मण के समीप गया।
 

क. हिमालयः	ख. विन्ध्यः
ग. ऋष्यमूकः	घ. अयोध्या
14. हनुमान ने क्या रूप को धारण किया।
 

क. मनुष्यरूपम्	ख. भिक्षुरूपम्
ग. ब्राह्मणरूपम्	घ. राजरूपम्
15. राम लक्ष्मण किस नदी के तीर पर उपस्थित थे।
 

क. गंगा	ख. यमुना
ग. पद्मा	घ. पम्पा



ध्यान दें:

16. हस्तिहस्तोपमभुजौ यहाँ कौन-सा अलंकार है?

- |               |                    |
|---------------|--------------------|
| क. रूपकालंकार | ख. दृष्टान्तालंकार |
| ग. उपमालंकार  | घ. अनुप्रासालंकार  |

17. क-स्तम्भ के साथ ख-स्तम्भ मिलाओ-

- | क- स्तम्भ   | ख- स्तम्भ    |
|-------------|--------------|
| 1. पुप्लुवे | क. भाषितवान् |
| 2. रामायणम् | ख. कपिः      |
| 3. आबभाषे   | ग. उक्तवान   |
| 4. पम्पा    | घ. प्राप     |
| 5. हनुमान्  | ङ. जगाम      |
| 6. भेजे     | च. पर्वतः    |
| 7. ऋष्यमूकः | छ. वाल्मीकिः |
| 8. उवाच     | ज. शुभजला    |



### पाठ सार

वनवास काल में सीता को ढूँढ़ने हेतु सहायता प्रार्थना के लिए श्री राम भाई लक्ष्मण के साथ सुग्रीव के पास पम्पा सरोवर के तट पर मिलने गए। वहाँ से कुछ दूर ऋष्यमूक पर्वत पर वानरों के राजा सुग्रीव भाई बाली के भय से छिपकर निवास करते थे। उस सुग्रीव ने दूर से धनुष बाण इत्यादि शस्त्रों से युक्त बड़ी भुजाओं से सम्पन्न दो तपस्वियों को देखा। इसीलिए उसने सोचा कि उसके भाई बाली ने उसे मारने के लिए यहाँ दो शस्त्रधारी भेजे। इसीलिए वह अत्यन्त डर गया। उसका सचिव हनुमान था। इसीलिए पम्पा सरोवर के तट पर स्थित दो तपस्वी किस कारण से यहाँ आए हैं, यह जानने के लिए सुग्रीव ने हनुमान को आदेश दिया। और हनुमान राजा की आज्ञानुसार अपने वानर रूप को छोड़कर भिक्षुक के वेश से उन दोनों के पास गए।

वहाँ जाकर उसने सर्वप्रथम अतिथि ज्ञान से उन दोनों को प्रणाम किया। फिर विधि के अनुसार उन दोनों का पूजन करके अपने सुमधुर मनोहर वचनों से उन दोनों की प्रशंसा करनी आरम्भ की। राम लक्ष्मण अपने ब्रह्मचर्य तेज से वन में स्थित मृगों और अन्य जीवों को पीड़ित कर रहे थे। उनके सौन्दर्य प्रभाव से पवित्र जल वाला पम्पा सरोवर भी शोभित हो रहा था। पूरे दिन को बिताकर वे दोनों भ्राता वन में भ्रमण करके थक गए। उन दोनों के इस प्रकार के कष्ट को देखकर तो अन्य वन्य जीव भी दुःखी हुए। उन दोनों के शरीर की कान्ति स्वर्ण के समान थी, किन्तु उन दोनों के परिधान में केवल दो जीर्ण वस्त्र थे। उन दोनों का धनुष इन्द्र के धनुष के समान लक्ष्य भेद था। हाथी की सूंड के समान बल युक्त हाथों वाले वे दोनों रूप सम्पन्न राम लक्ष्मण सभी मनुष्यों में श्रेष्ठ थे। यह इस पाठ का सार है।

### आपने क्या सीखा

- गृहस्थों के प्रति भिक्षुओं को प्रणाम करना चाहिए।



ध्यान दें:

- अतिथि सदैव पूजनीय है।
- यदि ब्रह्मचर्य का यथोचित पालन करें तो शरीर में महान तेज उत्पन्न होता है
- किसी का भी परिचय जानकर उसके साथ मधुर वार्तालाप करना चाहिए।
- किसी की भी झूठी प्रशंसा नहीं करनी चाहिए।



### पाठान्त प्रश्न

1. राम लक्ष्मण के साथ हनुमान के प्रथम साक्षात्कार के विषय में संक्षेप में लिखिए?
2. हनुमान कैसे भिक्षुक के वेश से राम लक्ष्मण के पास गया?
3. वहाँ जाने के बाद हनुमान ने क्या-क्या किया। सप्रसंग वर्णित कीजिए?
4. राम लक्ष्मण किस प्रकार से वन्य जीवों को पीड़ित कर रहे थे?
5. राम लक्ष्मण के धनुर्विषय पर संक्षेप से कुछ आलोचित कीजिए?
6. चक्रचापनिभे चापे यहाँ जो अलंकार है, उस विषय में संक्षेप से लिखिए?



### पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. सुग्रीव का
2. ऋष्यमूक से
3. वायु का
4. भिक्षु रूप
5. सुमधुर और मनोहर
6. मृगों के समूह और अन्य वन्यजीव कों
7. पम्पा नदी
8. पवित्र जल
9. प्रजा को
10. इन्द्र के धनुष के समान
11. हाथी की सूंड के समान
12. क
13. ग
14. ख
15. घ
16. ग
17. 1. ड
2. छ
3. क
4. ज
5. ख
6. घ
7. च
8. ग



ध्यान दें:

## 13

## हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा

त्रेता युग के चन्द्र श्री राम थे। पुरुषोत्तम श्री राम प्रसिद्ध हैं। इससे हम श्री राम के वीरता और सौन्दर्य के विषय में कुछ विचार सकते हैं। हम तो अब सब जगह राम कीर्तन को करते हैं और उससे हमें महान आनन्द होता है। हम साधारण जन यदि उनके कीर्तन से आनन्द करते हैं तो भक्त हनुमान ने निःस्वार्थ भक्ति से अपने प्रभु राम का कैसे गुण कीर्तन किया इसके विचार से ही हमें आनन्द उत्पन्न होता है। अवश्य ही यह हम सभी भारतीयों को जानना चाहिए। इस पाठ में हम उस विषय को जानेंगे। वह राम कैसे वीर थे और उसका सौन्दर्य किस प्रकार का था यह जानकर आनन्द का अनुभव होगा। इस पाठ में 13 श्लोक हैं।



## उद्देश्य

- इस पाठ को पढ़कर आप समर्थ होंगे;
- राम के सौन्दर्य विषय में;
- राम महान वीर थे यह जान पाने में;
- राम के सभी अस्त्र कैसे थे इस विषय में जानने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए, जानने में;
- व्याकरण विषयक कुछ ज्ञान को प्राप्त करने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए यह जानने में;
- उपमा अंलकार के विषय में कुछ ज्ञान को प्राप्त करने में;

## 13.1 ) मूलपाठ

प्रभया पर्वतेन्द्रोऽसौ युवयोरवभासितः।  
राज्यार्हावमरप्रख्यौ कथं देशमिहागतौ॥1॥

हनुमान द्वारा राम  
लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

पद्मपत्रेक्षणौ वीरौ जटामण्डलधारिणौ।  
अन्योन्यसदृशौ वीरौ देवलोकादिहागतौ॥12॥

यदृच्छयेव संप्राप्तौ चन्द्रसूर्यौ वसुंधराम्।  
विशालवक्षसौ वीरौ मानुषौ देवरूपिणौ॥13॥

सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ इव गोवृषौ।  
आयताश्च सुवृत्ताश्च बाहवः परिघोपमाः॥14॥

सर्वभूषणभूषार्हाः किमर्थम् न विभूषिताः।  
उभौ योग्यावहं मन्ये रक्षितुम् पृथिवीम् इमाम्॥15॥

ससागरवनां कृत्स्नां विन्ध्यमेरुविभूषिताम्।  
इमे च धनुषी चित्रे श्लक्ष्णे चित्रानुलेपने॥16॥

प्रकाशेते यथेन्द्रस्य वज्रे हेमविभूषिते।  
संपूर्णाश्च शितैर्बाणैस्तूणाश्च शुभदर्शनाः॥17॥

जीवितान्तकरैर्घोरैर्ज्वलारिव पन्नगैः।  
महाप्रमाणौ विपुलौ तप्तहाटकभूषणौ॥18॥

खड्गावेतौ विराजेते निर्मुक्तभुजगाविव।  
एवं मां परिभाषन्तं कस्माद् वै नाभिभाषतः॥19॥

सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद् वानरपुंगव।  
वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद् भ्रमति दुःखितः॥20॥

प्राप्तोऽहं प्रेशितस्तेन सुग्रीवेण महात्मना।  
राज्ञा वानरमुख्यानां हनुमान् नाम वानरः॥21॥

युवाभ्याम् स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति।  
तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम्॥22॥

भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नं सुग्रीवप्रियकारणात्।  
ऋष्यमूकादिह प्राप्तं कामगं कामचारिणम्॥23॥

### 13.2 ) अब मूल पाठ को समझें।

प्रभया पर्वतेन्द्रोऽसौ युवयोरवभासितः।  
राज्यार्हावमरप्रख्यौ कथं देशमिहागतौ॥11॥

अन्वय- युवयोः प्रभया असौ पर्वतेन्द्रः अवभासितः, तादृशौ राज्याहो अमरप्रख्यौ युवां इह देशं कथम् आगतौ।

अन्वयार्थः- आप दोनों राम लक्ष्मण की दीप्ति से यह पर्वत राज प्रकाशित हुआ। उन जैसे राज्य के योग्य, देवताओं के समान पराक्रम वाले आप दोनों यहाँ इस प्रदेश में कैसे, किस हेतु आए हो।



### हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

**सरलार्थ:-** हनुमान ने राम लक्ष्मण से पूछा कि जिन दोनों की दीप्ति से यह ऋष्यमूक नामक पर्वत प्रकाशित हो गया, उन दोनों जैसे दीप्तिमान राज सिंहासन के योग्य, देवताओं के समान आकृति वाले आप दोनों किस कारण से इस देश को आए हो।

**तात्पर्यार्थ:-** राम लक्ष्मण ने वनवास किया। इसीलिए वन में जो भोजन प्राप्त करते थे उसे ही वे दोनों खाते थे। फिर भी उन दोनों की जो कान्ति थी उस कान्ति से सम्पूर्ण ऋष्यमूक पर्वत प्रकाशित हुआ। उन दोनों के दर्शन से ज्ञात होता था की वो दोनों राज सिंहासन के योग्य हैं और देवताओं का जैसा पराक्रम होता है। वैसा ही पराक्रम राम लक्ष्मण का था। किन्तु फिर भी ये दोनों तपस्वी होकर वन में घूम रहे थे। इसीलिए आश्चर्य से हनुमान ने उन दोनों से पूछा की इस प्रकार कान्ति युक्त राज सिंहासन के योग्य, पराक्रमी आप दोनों राजसिंहासन को त्यागकर किस कारण से इस दुर्गम देश को आए हो। अर्थात् राज्य का भोग आपके लिए उचित है, वनवास अनुचित ऐसा हनुमान का आशय है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अवभासितः - अव+भास् धातु+क्त प्रत्यय प्रथम एकवचन
- राज्याहौ - राज्याय अर्हः राज्यार्हः। चतुर्थी तत्पुरुषसमास।

### सन्धि युक्त शब्द

- पर्वतेन्द्रोऽसौ - पर्वतेन्द्रः + असौ। विसर्ग सन्धि।
- इहागतौ- इह + आगतौ। सवर्णदीर्घसन्धि।
- राज्यार्हावमरप्रख्यौ- राज्यार्हौ + अमरप्रख्यौ अच् सन्धि

**प्रयोग परिवर्तन-** युवयोः प्रभा अमुं पर्वतेन्द्रम् अवभासितवती, तादृशाभ्यां राज्यार्हाभ्याम् अमरप्रख्याभ्यां युवाभ्यां इह देशः कथम् आगतः।

**पद्मपत्रेक्षणौ वीरौ जटामण्डलधारिणौ।**

**अन्योन्यसदृशौ वीरौ देवलोकादिहागतौ॥12॥**

**अन्वय-** पद्मपत्रेक्षणौ जटामण्डलधारिणौ अन्योन्यसदृशौ वीरौ देवलोकात् इह देशं कथं आगतौ।

**अन्वयार्थ:-** कमलपत्तों के सदृश नेत्रों वाले, जटाधारी, एक-दूसरे के समान महाबलशाली, स्वर्गलोक से इस देश को कैसे यहाँ आए।

**सरलार्थ:-** भिक्षु वेशधारी हनुमान ने राम से पूछा की कमल पत्तों के जैसे नेत्रों वाले, जटाओं को धारण करने वाले, तपस्वी, एक समान महाबलशाली आप दोनों देवलोक से इस दुर्गम प्रदेश को किस कारण से आए।

**तात्पर्यार्थ:-** जैसे कमल के पत्ते देखने में अत्यन्त रमणीय होते हैं, वैसे ही सुन्दर राम लक्ष्मण दोनों के नेत्र थे। एवं सौन्दर्यवान राम लक्ष्मण जटाधारी थे। और एक-दूसरे के समान थे। अर्थात् लक्ष्मण राम के समान वीर और सुन्दर था और राम लक्ष्मण के समान वीर और सुन्दर थे। उन दोनों को देखने से ज्ञात होता था कि वे दोनों देवलोक से ही यहाँ आए। इसीलिए वानरों में श्रेष्ठ हनुमान ने उन दोनों से पूछा की इस प्रकार से सौन्दर्य युक्त, जटाधारी, तपस्वी, आप दोनों देवलोक को त्यागकर किस कारण

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

से इस दुर्गम देश को आए।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- पद्मपत्रेक्षणौ - पद्मस्य पत्रं पद्मपत्रम्, षष्ठी तत्पुरुष समास।
- जटामण्डलधारिणौ- जटयाः मण्डलं जटामण्डलम्, षष्ठी तत्पुरुष समास। धृधातोः - इन् प्रत्यय प्रथमा द्विवचन।
- अन्योन्यसदृशौ- अन्योन्येन सदृशौ। तृतीया तत्पुरुष समास।

**प्रयोग परिवर्तन-** पद्मपत्रेक्षणाभ्यां जटामण्डलधारिभ्याम् अन्योन्यसदृशाभ्यां वीराभ्यां देवलोकात् इह देशं कथं आगतः।

**अलंकार आलोचना-** इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हो वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय ईक्षणे अर्थात् नेत्र है। उपमान पद्मपत्रे है। सादृश्यवाचक पद यहाँ नहीं है। सादृश्य धर्म सुन्दरत्वम् है। इस श्लोक में सादृश्यवाचक पद का और सादृश्यधर्म के नहीं होने से यहाँ लुप्तोपमा है।

**यदृच्छयेव संप्राप्तौ चन्द्रसूर्यौ वसुंधराम्।**

**विशालवक्षसौ वीरौ मानुषौ देवरूपिणौ॥13॥**

**अन्वय-** यदृच्छया वसुंधरां संप्राप्तौ चन्द्रसूर्यौ इव स्थितौ देवरूपिणौ विशालवक्षसौ वीरौ मानुषौ देवलोकात् इह देशं कथम् आगतौ।

**अन्वयार्थ:-** अपनी इच्छा से पृथ्वी को प्राप्त कर चन्द्रमा और सूर्य के समान स्थित है, देवताओं के समान रूप सम्पन्न विशाल नेत्रों वाले, महा पराक्रमी मनुष्य देवलोक से इस प्रदेश को कैसे आए।

**सरलार्थ:-** जैसे चन्द्रमा सूर्य अपनी इच्छा से राम लक्ष्मण के वेश में इस पृथ्वी पर आकर स्थित है। वैसे ही देवताओं के समान रूप सम्पन्न विशाल नेत्रों वाले, पराक्रमी आप दोनों राम लक्ष्मण से वानरों में श्रेष्ठ हनुमान ने पूछा की आप दोनों देवलोक को त्याग कर इस प्रदेश में किस कारण से आए हो।

**तात्पर्यार्थ:-** प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण को चन्द्रमा सूर्य के समान प्रदर्शित किया है। राम लक्ष्मण के दर्शन से ज्ञात होता था कि चन्द्रमा और सूर्य अपनी इच्छा से देवलोक को त्याग कर मनुष्य रूप में इस पृथ्वी पर आकर स्थित है। जैसे वीरों का वक्ष स्थल बड़ा होता है, वैसे ही उन दोनों का वक्षप्रदेश था। जैसे देवताओं का रूप रमणीय होता है, जिसके दर्शन से सभी को आनन्द होता है, वैसे ही रमणीय रूप उन दोनों का था। इसीलिए ये दोनों साधारण व्यक्ति नहीं हैं ऐसा हनुमान को ज्ञात हुआ। उनसे पूछा कि चन्द्रसूर्य के समान विशाल नेत्रों वाले सुन्दर आप दोनों स्वर्गलोक को त्यागकर इस दुर्गम देश में किस कारण से आए हो।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- चन्द्रसूर्यौ - चन्द्रश्च सूर्यश्च चन्द्रसूर्यौ । इतरेतर द्वन्द्वसमास।

- विशालवक्षसौ - विशालं वक्षः ययोस्तौ - बहुव्रीहि समास।
- देवरूपिणौ - देवस्य रूपं देवरूपम् षष्ठी तत्पुरुष समास। देव + इन् प्रथमा द्विवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- यदृच्छयेव- यदृच्छया + इव गुण सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** यदृच्छया वसुंधरां संप्राप्ताभ्यां चन्द्रसूर्याभ्याम् इव स्थिताभ्यां देवरूपिभ्यां विशालवक्षोभ्यां वीराभ्यां मानुषाभ्यां देवलोकात् इह देशः कथम् आगतः।

**सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ इव गोवृषौ।**

**आयताश्च सुवृत्ताश्च बाहवः परिघोपमाः॥14॥**

**सर्वभूषणभूषार्हाः किमर्थम् न विभूषिताः।**

**उभौ योग्यावहं मन्ये रक्षितुम् पृथिवीम् इमाम्॥15॥**

**ससागरवनां कृत्स्नां विन्ध्यमेरुविभूषिताम्।**

**अन्वय-** अहं हनुमान् सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ गोवृषौ इव युवाम् उभौ इमां ससागरवनां विन्ध्यमेरुविभूषितां कृत्स्नां पृथिवीम् रक्षितुं योग्यौ मन्ये, अतः युवयोः आयताः सुवृत्ताः परिघोपमाः सर्वभूषणभूषार्हाः बाहवः किमर्थं न विभूषिताः।

**अन्वयार्थः -** मैं हनुमान सिंह के समान कन्धे वाले, महा उत्साही, नवीन वृषभ के समान मद से युक्त, पराक्रमी आप दोनों इस सागर सहित, वनों की, विन्ध्य मेरु से सुशोभित इस सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने के लिए योग्य हो ऐसा मेरा विचार है, इसीलिए आप दोनों विस्तृत गदा के समान सभी आभूषण के योग्य भुजाओं को किसलिए अलंकृत नहीं करते हो।

**सरलार्थः-** हनुमान राम लक्ष्मण की प्रशंसा करते हुए पूछते हैं की सिंह के समान कन्धों वाले, नए वृषभ के समान मद से युक्त आप दोनों इस सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने योग्य हो, किन्तु आप दोनों ऐसी विस्तृत हस्त पुष्ट गदा के जैसी भुजाओं को किसलिए अलंकारों से अलंकृत नहीं करते हो।

**तात्पर्यार्थः-** प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने राम लक्ष्मण की देश रक्षण सामर्थ्य को वर्णित किया है। जैसे सिंह के स्कन्ध स्थिर और भयंकर होते हैं, वैसे ही कन्धे उन दोनों के भी थे। उन दोनों का उत्साह भी महान था। जैसे मद से युक्त नवीन वृषभ बहुत पराक्रमी होता है और जो कुछ भी कर सकता है, उसी प्रकार की सामर्थ्य उन दोनों में थी। इसलिए हनुमान ने उन दोनों से कहा कि इस प्रकार सामर्थ्यवान तुम दोनों सागरों और जंगल सहित विन्ध्य पर्वत से सुशोभित सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने में समर्थ हो। राम लक्ष्मण की भुजाएँ लम्बी गदा के समान थी। और जैसे सर्प का शरीर विस्तृत होता है वैसे उन दोनों की भुजा विस्तृत थी। अगर उनकी भुजाओं में कोई भी अलंकार होता तो वह अलंकार वहाँ शोभा देता। किन्तु हनुमान को आश्चर्य हुआ कि इस प्रकार की सुन्दर भुजाओं में कैसे इन दोनों ने आभूषण को धारण नहीं किया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सिंहस्कन्धौ - सिंहस्य स्कन्धः सिंहस्कन्ध, षष्ठी तत्पुरुष समास।
- महोत्साहौ - महान् उत्साहः ययोः तौ - बहुव्रीहि समास।

### हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



**ध्यान दें:**

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

- समदाविव - समदौ + इव अच्छसन्धि।
- आयताश्च - आयताः + च। विसर्ग सन्धि।
- सुवृत्ताश्च - सुवृत्ताः + च। विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** मया हनुमता सिंहस्कन्धौ महोत्साहौ समदौ गोवृषौ इव युवाम् उभौ इयं ससागरवना विन्ध्यमेरुविभूषिता कृत्स्ना पृथिवी रक्षितुं योग्यावहः मन्येते, अतः युवयोः आयतान् सुवृत्तान् परिघोपमान् सर्वभूषणभूषार्हान् बाहून् किमर्थं न विभूषितवन्तौ।

**अलंकार आलोचना-** इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय रामलक्ष्मणौ है। उपमान समदो गोवृषौ है। सादृश्यवाचक पद इव है। सादृश्यधर्म महोत्सवम् है। इस श्लोक में लुप्तोपमा है।

**इमे च धनुषी चित्रे श्लक्ष्णे चित्रानुलेपने॥16॥**

**प्रकाशेते यथेन्द्रस्य वज्रे हेमविभूषिते।**

**अन्वय-** इमे चित्रे श्लक्ष्णे चित्रानुलेपने हेमविभूषिते धनुषी इन्द्रस्य वज्रे यथा तथा प्रकाशेते।

**अन्वयार्थ:-** इस में बहुत से चित्र, चिकने, स्वर्णादि से बने हुए चित्र रूप विशिष्ट अनुलेपन से स्वर्ण से अलंकृत धनुष इन्द्र के वज्र के समान प्रकाशित होते हैं।

**सरलार्थ:-** हनुमान ने राम लक्ष्मण के धनुष की प्रशंसा करते हुए उन दोनों से कहा कि जैसे इन्द्र का वज्र है वैसे ही आप दोनों के ये धनुष बहुत वर्णों वाले चिकने और स्वर्ण से अलंकृत है।

**तात्पर्यार्थ:-** इस श्लोक में हनुमान ने राम लक्ष्मण के धनुष की प्रशंसा की। उन दोनों के धनुष में अनेक वर्ण अर्थात् रंग थे। स्वर्ण से निर्मित जो चित्र रूप है, धनुष के मध्य में चित्र रूप से अनुलेपन किया था। और स्वर्ण से सजे हुए वे धनुष चिकने थे। अर्थात् वे धनुष के दर्शन से भी रमणीय थे। जैसे इन्द्र के वज्र को किसी के द्वारा भी नहीं देखा गया, इसीलिए वह अद्भुत है। उसी प्रकार इस लोक में इस प्रकार के धनुष सामान्यतः नहीं देखे जाते, इसीलिए ये धनुष भी अद्भुत थे।

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- चित्रानुलेपने - चित्रेण अनुलेपने चित्रानुलेपने - तृतीय तत्पुरुष समास।
- हेमविभूषिते - हेम्ना विभूषिते हेमविभूषिते - तृतीय तत्पुरुष समास।

सन्धि युक्त शब्द

- यथेन्द्रस्य - यथा + इन्द्रस्य, गुण सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** आभ्यां चित्राभ्यां श्लक्षणाभ्यां चित्रानुलेपनाभ्यां धनुर्भ्याम् इन्द्रस्य वज्राभ्यां यथा तथा प्रकाशयते।

**अलंकार आलोचना-** इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय धनुषी है। उपमान वज्र है। सादृश्यवाचक पद यथा है। सादृश्यधर्म शत्रुनाशकत्वम् है। इस श्लोक में लुप्तोपमा है।

**संपूर्णाश्च शितैर्बाणैस्तूणाश्च शुभदर्शनाः॥17॥**

**जीवितान्तकरैर्घोरैर्ज्वलद्भिरिव पन्नगैः।**

**अन्वय-** शितैः जीवितान्तकरैः पन्नगैः इव घोरैः ज्वलद्भिः बाणैः तूणाः संपूर्णाः अत एव शुभदर्शनाः सन्ति।

**अन्वयार्थः-** तीक्ष्ण, शत्रु के जीवन का विध्वंसक, सर्प के समान भयंकर, ज्वाला के समान प्रकाशमान, बाणों से पूर्ण तूणीर बहुत ही सुन्दर देखने योग्य है।

**सरलार्थः-** हनुमान ने राम लक्ष्मण के बाणों और तूणीरों की प्रशंसा करते हुए उन दोनों से कहा कि आप दोनों के बाण बहुत तीक्ष्ण, सर्प के समान शत्रुनाशक और भयंकर, उन जैसे बाणों से आप दोनों का तूणीर भरा है। इसीलिए वे तूणीर भी देखने योग्य है।

**तात्पर्यार्थः-** प्रस्तुत इस श्लोक में हनुमान राम लक्ष्मण के बाणों को देखकर आश्चर्य चकित हुआ। इसीलिए उनके बाणों की प्रशंसा की, वे बाण बहुत तीक्ष्ण है, अर्थात् यदि किसी के भी ऊपर प्रयोग करे तो उसका मरना निश्चित होता है। शत्रु अगर सर्प को छूता है तो पल भर में ही वह सर्प अपने विष से उस शत्रु का विनाश कर देता है। उसी प्रकार उन दोनों के बाण भी पल भर में ही शत्रुविनाशक थे। और उनके बाण भयंकर भी थे जिनके दर्शन मात्र से ही शत्रु के मन में भय उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार के प्रकाशमान बाणों से उन दोनों का तूणीर भरा हुआ था। इसीलिए वैसे असाधारण बाणों से अलंकृत सुशोभित उन दोनों के तूणीर भी सुन्दर दिखाई देते थे।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- संपूर्णाः - सम् + पूरधातु + क्त प्रत्यय प्रथमा बहुवचन।
- शुभदर्शनाः - शुभं दर्शनं येषां ते शुभदर्शनाः - बहुव्रीहि समास।
- जीवितान्तकरैः - अन्तं कुर्वन्ति इति अन्तकराः। षष्ठी तत्पुरुष समास।

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

- ज्वलद्धिः - ज्वल् धातु + शत् प्रत्यय तृतीय बहुवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- संपूर्णाश्च - संपूर्णाः + च। विसर्ग सन्धि।
- शितैर्बाणैः - शितैः + बाणैः। विसर्ग सन्धि
- तूणाश्च - तूणाः + च। विसर्ग सन्धि
- जीवितान्तकरैर्घोरैः - जीवितान्तकरैः + घोरैः। विसर्ग सन्धि
- घोरैर्ज्वलद्धिः - घोरैः + ज्वलद्धिः। विसर्ग सन्धि
- ज्वलद्धिरिव - ज्वलद्धिः + इव। विसर्ग सन्धि

**प्रयोग परिवर्तन-** शितैः जीवितान्तकरैः पन्नगैः इव घोरैः ज्वलद्धिः बाणैः तूणैः संपूर्णैः अत एव शुभदर्शनैः भूयन्ते।

**अलंकार आलोचना-** इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय तावत् बाणाः है। उपमान पन्नगाः है। सादृश्यवाचक पद इव है। सादृश्य धर्म जीवितान्तकरत्वम् अर्थात् शत्रुजीवननाशकत्वम् है। इस श्लोक में चारों अंश है इसीलिए पूर्णोपमा है।

**महाप्रमाणौ विपुलौ तप्तहाटकभूषणौ॥18॥**

**खड्गावेतौ विराजेते निर्मुक्तभुजगाविव।**

**अन्वय-** महाप्रमाणौ विपुलौ तप्तहाटकभूषणौ एतौ खड्गौ निर्मुक्तभुजगौ इव विराजेते।

**अन्वयार्थः-** अति विस्तृत एवं तपे हुए स्वर्ण से अंकित ये दोनों खड्ग केंचुली त्यागे हुए सर्प के समान शोभित हो रही है।

**सरलार्थः-** हनुमान राम लक्ष्मण के खड्ग की प्रशंसा करते हुए उन दोनों से कहते हैं की आप दोनों की तलवार बहुत विस्तृत हैं एवं वह पक्के स्वर्ण से अंकित थी। और केंचुली छोड़े हुए सर्प के समान वे दोनों खड्ग थी।

**तात्पर्यार्थः-** प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के मुख से राम लक्ष्मण की खड्ग का वर्णन किया है। उन दोनों की तलवार विस्तृत थी। और वे दोनों पुष्ट थे। जो उनके शत्रुओं का विनाश कर सकते थे। वहाँ पक्के स्वर्ण से तलवार के बीच में अंकित था। इसीलिए उन दोनों के खड्ग के दर्शन भी अत्यन्त रमणीय थे। जब सर्प केंचुली को त्यागता है फिर वह सर्प पूर्व से भी अधिक चिकना होता है। उसी प्रकार उन दोनों की तलवारें चिकनी थी।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- महाप्रमाणौ- महत् प्रमाणं ययोः तौ महाप्रमाणौ। बहुव्रीहि समास।

- तप्तहाटकभूषणौ - तप्तं च तत् हाटकं तप्तहाटकम् - कर्मधारय समास।
- निर्मुक्तभुजगौ - निर्मुक्तो च तौ भुजगौ निर्मुक्तभुजगौ- कर्मधारय समास।

### सन्धि युक्त शब्द

- खड्गावेतौ - खड्गौ + एतौ। अच् सन्धि।
- निर्मुक्तभुजगाविव - निर्मुक्तभुजगौ + इव।

**प्रयोग परिवर्तन-** महाप्रमाणाभ्यां विपुलाभ्यां तप्तहाटकभूषणाभ्याम् एताभ्यां खड्गाभ्यां निर्मुक्तभुजगाभ्याम् इव विराज्यते।

**अलंकार आलोचना-** इस श्लोक में उपमा अलंकार है। उपमा अलंकार के चार अंश होते हैं। और वे उपमेय, उपमान, सादृश्यवाचक पद, सादृश्य धर्म है। उपमा दो प्रकार की होती है- पूर्णोपमा और लुप्तोपमा। जहाँ ये चारों अंश ही रहते हों वह पूर्णोपमा होती है। और जहाँ ये चारों के मध्य कोई एक अथवा उससे अधिक अंश न रहता हो वह लुप्तोपमा होती है। यहाँ उपमेय खड्गौ है। उपमान निर्मुक्तभुजगौ है। सादृश्यवाचक पद इव है। सादृश्यधर्म चिक्कणत्वं है। इस श्लोक में लुप्तोपमा है।

**एवं मां परिभाषन्तं कस्माद् वै नाभिभाषतः॥19॥**

**अन्वय-** एवं परिभाषन्तं मां कस्माद् वै युवां न अभिभाषतः।

**अन्वयार्थः-** अनेक प्रकार से कहते हुए मुझ हनुमान से किस कारण से आप दोनों ने कुछ नहीं कहा।

**सरलार्थः-** इस प्रकार राम लक्ष्मण की प्रशंसा के बाद हनुमान ने कुछ आश्चर्यचकित होकर उन दोनों से पूछा कि मैंने इतनी देर तक बहुत कुछ कहा, किन्तु आप दोनों ने कैसे मेरे लिए कुछ भी नहीं कहा।

**तात्पर्यार्थः-** हनुमान ने इतनी देर तक राम लक्ष्मण के वीरता की, सौन्दर्य की, उन दोनों की भुजाओं की, धनुष की, बाण और खड्ग की बहुत प्रशंसा की, किन्तु वे दोनों राम लक्ष्मण यह सब सुनकर भी मौन ही रहे कुछ भी नहीं कहा। इसीलिए हनुमान ने कुछ चकित होकर उन दोनों से कहा- की मैंने इतनी देर तक बहुत कुछ कहा, किन्तु आप दोनों ने मुझसे कुछ भी नहीं कहा।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परिभाषन्तम् - परि + भाष् धातु + शत् प्रत्यय, द्वितीय एकवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- कस्माद् - कस्मात् + वै, जश्त्व सन्धि
- नाभिभाषतः - न + अभिभाषतः। सवर्ण दीर्घ सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** एवं परिभाषन् अहं कस्माद् वै युवाभ्यां न अभिभाष्ये।

**सुग्रीवो नाम धर्मात्मा कश्चिद् वानरपुंगव।**

### हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



**ध्यान दें:**

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

वीरो विनिकृतो भ्रात्रा जगद् भ्रमति दुःखितः॥20॥

अन्वय- सुग्रीवः नाम कश्चित् वानरपुंगवः वीरः धर्मात्मा भ्रात्रा विनिकृतः दुःखितः जगत् भ्रमति।

अन्वयार्थः- सुग्रीव नाम वाला कोई वानरों में श्रेष्ठ शूरवीर, धार्मिक अपने भाई से अलग होकर दुःखी होता हुआ जगत् का भ्रमण करता है।

सरलार्थः- हनुमान ने सुग्रीव के विषय में राम लक्ष्मण से कहा की सुग्रीव धर्म का पालन करने वाले वानरों में उत्तम है, वह महान वीर अपने भाई से अलग होकर दुःखी होता हुआ विश्व का भ्रमण करता है।

तात्पर्यार्थ- सुग्रीव के द्वारा भेजा गया हनुमान राम लक्ष्मण के पास गया, और वहाँ उन दोनों के वीरत्व, सौन्दर्य आदि को देखकर जाना की ये साधारण व्यक्ति नहीं हैं। इसीलिए उन दोनों को बाली ने नहीं भेजा उसका निश्चय हुआ। इसीलिए अपने राजा सुग्रीव की स्तुति करके उसके विषय में कहा की सुग्रीव ही वानरों में उत्तम और महाबलशाली वानर है। वह एक महान धार्मिक है। किन्तु उसके भाई बाली ने किसी कारण से उसे छोड़ दिया। वह बाली आज भी उसे मारने के लिए प्रयत्न करता है। इसीलिए सुग्रीव अब दुःखी होकर भाई के भय से सारे विश्व का भ्रमण करता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वानरपुंगवः - वानरेषु पुंगव वानरपुंगवः - सप्तमी तत्पुरुष समास।
- विनिकृतः - वि + नि + कृ धातु + क्त प्रत्यय, प्रथमा एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- सुग्रीवो नाम - सुग्रीवः + नाम, विसर्ग सन्धि।
- कश्चिद्वानरपुंगव - कश्चित् + वानरपुंगव। जश्त्वसन्धि
- जगद्भ्रमति - जगत् + भ्रमति। जश्त्व सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- सुग्रीवेण नाम्ना केनचित् वानरपुंगवेन वीरेण धर्मात्मना भ्रात्रा विनिकृतेन दुःखितेन जगत् भ्रम्यते।

प्राप्तोऽहं प्रेषितस्तेन सुग्रीवेण महात्मना।

राज्ञा वानरमुख्यानां हनुमान् नाम वानरः॥21॥

अन्वय- तेन वानरमुख्यानां राज्ञा महात्मना सुग्रीवेण प्रेषितः अहं हनुमान् नाम वानरः त्वां प्राप्तः अस्मि।

अन्वयार्थः- मैं वानरों के मुख्य राजा महाबुद्धिमानी सुग्रीव के द्वारा भेजा हनुमान नाम का वानर तुम दोनों को प्राप्त हूँ।

सरलार्थः- राम लक्ष्मण के स्वरूप को जानकर हनुमान ने अपने विषय में उन दोनों से कहा की मेरा नाम हनुमान है, वानरों के राजा महात्मा सुग्रीव ने मुझे यहाँ भेजा। इसीलिए मैं आप दोनों के पास आया।

तात्पर्यार्थः- पूर्व श्लोक में हनुमान ने अपने राजा सुग्रीव के विषय में कहा। इसीलिए प्रस्तुत इस



श्लोक में हनुमान ने राम लक्ष्मण से अपने परिचय को कहना आरम्भ किया। हनुमान ने विनम्र होकर उन दोनों से कहा कि मेरा नाम हनुमान है। मैं एक वानर हूँ। वानर राज महात्मा सुग्रीव के आदेशानुसार मैं आप दोनों के समीप आया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- महात्मना - महान् आत्मा यस्य स - बहुव्रीहि समास
- वानरमुख्यानाम् - वानरेषु मुख्याः वानरमुख्याः - षष्ठी तत्पुरुष समास

### सन्धि युक्त शब्द

- प्राप्तोऽहम् - प्राप्तः + अहम्, विसर्ग सन्धि
- प्रेषितस्तेन - प्रेषितः + तेन, विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन** - मया तेन वानरमुख्यानां राज्ञा महात्मना सुग्रीवेण प्रेषितेन हनुमता नाम वानरेण त्वां प्राप्तेन भूयते।

**युवाभ्याम् स हि धर्मात्मा सुग्रीवः सख्यमिच्छति।**

**अन्वय-** स हि धर्मात्मा सुग्रीवः युवाभ्यां सह सख्यम् इच्छति।

**अन्वयार्थः-** वह धर्मपरायण सुग्रीव नामक राजा आप दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करता है।

**सरलार्थः-** वानर राज सुग्रीव ने हनुमान को कैसे राम लक्ष्मण के समीप भेजा इस प्रश्न पर हनुमान ने कहा कि- सुग्रीव आप दोनों का मित्र होने की इच्छा करता है।

**तात्पर्यार्थः-** हनुमान का परिचय जानने के बाद, सुग्रीव ने हनुमान को यहाँ भेजा, ऐसा श्री राम ने जाना। इसीलिए उन्होंने सुग्रीव के द्वारा हनुमान को यहाँ भेजने के कारण को जानने की इच्छा की। इसीलिए हनुमान ने उनसे कहना आरम्भ किया था। हनुमान ने कहा कि वानर राज सुग्रीव राम लक्ष्मण के साथ मित्रता करने की इच्छा करता है। इसीलिए उसने आप दोनों के परिचय को जानने के लिए मुझे यहाँ भेजा।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सख्यम् - सखि + ष्यञ प्रत्यय द्वितीय एकवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- स हि - सः + हि। विसर्ग सन्धि

**प्रयोग परिवर्तन-** तेन हि धर्मात्मना सुग्रीवेण युवाभ्यां सह सख्यम् इष्यते।

**तस्य मां सचिवं वित्तं वानरं पवनात्मजम्॥22॥**

**भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नं सुग्रीवप्रियकारणात्।**

**ऋष्यमूकादिह प्राप्तं कामगं कामचारिणम्॥23॥**

**अन्वय-** भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नं सुग्रीवप्रियकारणात् ऋष्यमूकात् इह प्राप्तं कामगं कामचारिणं तस्य

### हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

## हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

सचिवं पवनात्मजं वानरं मां वित्तम्।

**अन्वयार्थः-** भिक्षु के वेश में सुग्रीव के प्रिय के लिए ऋष्यमूक नामक पर्वत से यहाँ आया अपनी इच्छा से कहीं जाने योग्य कोई रूप धारण करने योग्य उस सुग्रीव का सचिव पवन पुत्र वानर मुझे हनुमान जानों।

**सरलार्थः-** हनुमान ने राम लक्ष्मण से अपने विषय में कहा कि मैं वायु पुत्र हनुमान वानर राज सुग्रीव का सचिव हूँ। आप दोनों का परिचय जानना ही उसका इच्छित कार्य है। इसीलिए उसे करने के लिए भिक्षु के वेश में ऋष्यमूक पर्वत से यहाँ आया। मैं अपनी इच्छा से सब जगह जा सकता हूँ। और कोई भी रूप धारण कर सकता हूँ।

**तात्पर्यार्थः-** वानर राज सुग्रीव राम लक्ष्मण के साथ मित्रता को स्थापित करना चाहता है। इसीलिए उसने हनुमान को यहाँ भेजा ऐसा हनुमान के मुख से श्री राम ने जाना। किन्तु सुग्रीव के साथ हनुमान का क्या सम्बन्ध है, इस प्रश्न पर हनुमान ने उन दोनों से कहा कि मैं वायु पुत्र हनुमान वानर राज सुग्रीव का सचिव हूँ। आप दोनों का परिचय जानना वानरराज सुग्रीव का इष्ट कार्य है। इसीलिए मैं आप दोनों के परिचय को जानने के लिए भिक्षु के रूप को धारण करके ऋष्यमूक पर्वत से आप दोनों के समीप आया। मैं इच्छानुसार जहाँ कहीं भी जा सकता हूँ। और इच्छानुसार कोई भी रूप धारण कर सकता हूँ। वस्तुतः प्रस्तुत इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान की साधारण से अधिक योग्यता को वर्णित किया है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वित्तम् - विद् धातु, लोट् लकार, मध्यम पुरुष द्विवचन।
- पवनात्मजम् - पवनस्य आत्मजः पवनात्मजः - षष्ठी तत्पुरुष समास
- भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नम् - भिक्षुरूपेण प्रतिच्छन्नः भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नः - तृतीय तत्पुरुष समास।
- सुग्रीवप्रियकारणात् - सुग्रीवस्य प्रियं सुग्रीवप्रियम् - षष्ठी तत्पुरुष समास।  
सुग्रीवप्रियमेव कारणम् सुग्रीवप्रियकारणम् - कर्मधारय समास।
- कामचारिणम् - कामं चरति इति कामचारी।

### सन्धि युक्त शब्द

- ऋष्यमूकादिह - ऋष्यमूकात् + इह। जप्त्वं सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** भिक्षुरूपप्रतिच्छन्नः सुग्रीवप्रियकारणात् ऋष्यमूकात् इह प्राप्तः कामगः कामचारी तस्य सचिवः पवनात्मजः वानरः अहं विद्यै।



### पाठगत प्रश्न

1. किससे पर्वत प्रकाशित हुआ?
2. राम लक्ष्मण के नेत्र कैसे थे?

3. राम लक्ष्मण किस लोक से यहाँ आए?
4. चन्द्रमा सूर्य कहाँ प्राप्त हुए?
5. राम लक्ष्मण किसके समान महा उत्साही थे?
6. राम लक्ष्मण की भुजाएँ किसके जैसी थीं?
7. राम लक्ष्मण किसकी रक्षा करने के लिए योग्य थे?
8. उन दोनों के धनुष कैसे थे?
9. उन दोनों के धनुष किसके समान प्रकाशित होते हैं?
10. उन दोनों के तूणीर किससे पूर्ण थे?
11. उन दोनों की खड्ग किसके समान थीं?
12. सुग्रीव किससे अलग हुआ?
13. सुग्रीव क्या इच्छा करता है?
14. हनुमान किसके जैसा था?
15. पद्मपत्रेक्षणौ..... यहाँ कौन सा अलंकार है?
  - क. दृष्टान्त अलंकार
  - ख. उपमा अलंकार
  - ग. रूपक अलंकार
  - घ. उत्प्रेक्षा अलंकार
16. राज्यार्हावमरप्रख्यौ कथं देशमिहागतौ - किसकी उक्ति है?
  - क. सुग्रीव की
  - ख. हनुमान की
  - ग. राम की
  - घ. लक्ष्मण की
17. विन्ध्यमेरुविभूषिता किसका विशेषण है?
  - क. पम्पा नदी का
  - ख. सीता का
  - ग. पृथ्वी का
  - घ. लंका का

### हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

18. बाणों को किसके द्वारा उपमित किया गया है।
- क. सर्प के  
ख. वज्र के  
ग. केचुली त्यागे सर्प के  
घ. हाथी की सूंड के
19. हनुमान किसका सचिव है।
- क. राम का  
ख. वायु का  
ग. बाली का  
घ. सुग्रीव का
20. क. स्तम्भ से ख. स्तम्भ मिलाओ।
- | क. स्तम्भ            | ख. स्तम्भ      |
|----------------------|----------------|
| 1. मन्ये             | क. संचरति      |
| 2. पद्मपत्रे         | ख. बाहवः       |
| 3. चन्द्रसूर्यौ      | ग. गोवृषौ      |
| 4. प्रकाशते          | घ. ईक्षणे      |
| 5. समदौ              | ङ सुग्रीवः     |
| 6. विराजेते          | च. राजेते      |
| 7. सर्वभूषणभूषार्हाः | छ. जानीतम्     |
| 8. भ्रमति            | ज. चिन्तयामि   |
| 9. दुःखितः           | झ. शोभेते      |
| 10. वित्तम्          | ञ. रामलक्ष्मणौ |



पाठ सार

सुग्रीव के आदेशानुसार हनुमान अपने वानर रूप को छिपाकर भिक्षु के वेश से पम्पा सरोवर के तट पर स्थित राम लक्ष्मण के पास गए। वहाँ जाकर उसने अपनी मनोहर वाणी से उन दोनों की प्रशंसा करना आरम्भ किया। उन दोनों की कान्ति से ऋष्यमूक पर्वत प्रकाशित हो गया। राज सिंहासन के योग्य वे कैसे तपस्वी के वेश में इस दुर्गम प्रदेश को आए ऐसा हनुमान को पूछना था। दोनों जटाधारियों के नेत्र कमल के पत्ते के समान थे। उन दोनों के दर्शन से ज्ञात होता है कि जैसे चन्द्रमा और सूर्य अपनी

इच्छा से मनुष्य के रूप में इस पृथ्वी पर आ गए। पशुओं के राजा सिंह से भी अधिक बलवान, नवीन वृषभ के समान महा उत्साही वे दोनों सागर वन सहित विन्ध्य पर्वत से सुशोभित इस सम्पूर्ण पृथ्वी की रक्षा करने योग्य है, ऐसा हनुमान का विश्वास था। किन्तु उसे आश्चर्य हुआ की राम लक्ष्मण की भुजाएँ गदा के समान सुदृढ़ थीं। जिन्हें किसी भी अलंकार से अलंकृत किया जाए तो वे भुजाएँ शोभित होती थी। परन्तु फिर भी इस प्रकार की सुन्दर भुजाओं में उन्होंने कोई भी अलंकार धारण नहीं किया।

इन्द्र के वज्र के समान उन दोनों के धनुष पक्के स्वर्ण से अंकित थे। सर्प के समान शत्रु प्राण के विनाशक, भयंकर प्रकाशमान बाणों से उन दोनों के तूणीर भरे हुए थे। इसीलिए हनुमान ने उस कारण को पूछकर राजा सुग्रीव के विषय में कहना आरम्भ किया। फिर उस सुग्रीव के सचिव ने अपने परिचय को देकर सुग्रीव ने ही तुम दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करते हुए उसे यहाँ भेजा ऐसा कहा। यह सब कहकर उसने पुनः उन दोनों को कुछ नहीं कहा।

### आपने क्या सीखा

- प्रकाशमान प्रकाश से उसके सम्पर्क में आयी वस्तु भी प्रकाश को प्राप्त करती है।
- प्रशंसा योग्य व्यक्ति की उचित रूप से प्रशंसा करनी चाहिए।
- राज्य सिंहासन योग्य व्यक्ति को राज्य का भार अवश्य ढोना चाहिए।
- अपने परिचय से पूर्व प्रारम्भ में अपने राजा का परिचय देना चाहिए।
- अपने राजा की प्रशंसा सब जगह करनी चाहिए।



### पाठान्त प्रश्न

1. राम लक्ष्मण की भुजाओं के विषय में हनुमान की उक्ति की सप्रसंग आलोचना करें।
2. राम लक्ष्मण के शस्त्रों का यथा ग्रन्थानुसार वर्णन कीजिए।
3. राम लक्ष्मण के बाण कैसे थे यथा ग्रन्थानुसार आलोचना कीजिए।
4. संपूर्णाश्च शितैर्बाणैः.....यहाँ जो अलंकार है उसके विषय में संक्षेप में लिखिए।
5. हनुमान ने सुग्रीव के विषय में ओर अपने विषय में उन दोनों के पास में क्या कहा, सप्रसंग लिखें।
6. हनुमान में क्या क्या सामर्थ्य था?



### पाठगत प्रश्नों के उत्तर

#### उत्तर तालिका

1. राम लक्ष्मण की प्रभा से
2. कमल के पत्ते के समान
3. देवलोक से

### हनुमान द्वारा राम लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

हनुमान द्वारा राम  
लक्ष्मण की प्रशंसा



ध्यान दें:

4. पृथ्वी को
5. मदयुक्त वृषभ के समान
6. विस्तृत और सभी आभूषण से भूषित योग्य
7. समुद्र वनो विन्ध्य मेरु से सुशोभित पृथ्वी की
8. विचित्र चिकने और चित्र अनुलेपन युक्त
9. इन्द्र के वज्र के समान
10. सर्प के समान जीवन विनाशक भयंकर तीक्ष्ण बाण
11. केंचुली त्यागे सर्प के समान
12. भाई से
13. राम लक्ष्मण के साथ मित्रता
14. कहीं भी जाने योग्य और कोई भी रूप धारण करने में सक्षम
15. (ख)
16. (ख)
17. (ग)
18. (क)
19. (घ)
20. 1. (ज)
2. (घ)
3. (ज)
4. (च)
5. (ग)
6. (झ)
7. (ख)
8. (क)
9. (ड)
10. (छ)



ध्यान दें:

## 14

## राम द्वारा हनुमान की प्रशंसा

ऐन्द्र आदि नौ व्याकरण है ऐसा प्रसिद्ध है। हनुमान तो उन सभी व्याकरणों को जानता था। 'सोऽयं नवव्याकरणार्थवेत्ता' वाल्मीकि का वचन उसका प्रमाण है। व्याकरण छोड़कर भी शिक्षादि अनेक शास्त्रों का उनको ज्ञान है। हनुमान ज्ञान का अनन्त सागर था। स्वयं सब कुछ जानने वाले श्री राम ने इस विषय में उसकी प्रशंसा की। उसकी वाणी इस प्रकार मधुर थी की उसके मनोहर वचनों से परम आनन्द श्री राम भी आनन्दित हुए। हनुमान वानर राज सुग्रीव का दूत था। श्री राम ने कहा कि इस जैसा दूत किसी भी राजा का हो तो उस राजा की अवश्य ही सिद्धि होगी। इस पाठ में हम हनुमान के उस ज्ञान के विषय में जानकर आनन्द का अनुभव करें।

इस पाठ में 12 श्लोक हैं।



## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे;

- हनुमान ज्ञान के महासागर थे, ऐसा जानने में;
- हनुमान चारों वेदों के ज्ञाता थे, ऐसा जानने में;
- बातचीत के समय में वाक्य प्रयोग किस प्रकार से करना चाहिए इस विषय में बोध प्राप्त करने में;
- राजा का दूत कैसा होना चाहिए इस ज्ञान जान पाने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए जानने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए इस विषय में जानने में;
- व्याकरण विषयक कुछ ज्ञान प्राप्त करने में;

राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा

ध्यान दें:

## 14.1 ) मूलपाठ

एवमुक्त्वा तु हनुमांस्तौ वीरौ रामलक्ष्मणौ  
 वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किञ्चन॥24॥  
 एतच्छ्रुत्वा वचन्तस्य रामो लक्ष्मणम् अब्रवीत्।  
 प्रहृष्टवदनः श्रीमान् भ्रातरं पार्श्वतः स्थितम्॥25॥  
 सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।  
 तमेव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकमुपागतः॥26॥  
 तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम्।  
 वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तम् अरिन्दम्॥27॥  
 नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।  
 नासामवेदविदुषः शक्यम् एवं विभाषितुम्॥28॥  
 नूनं व्याकरणं कृत्स्नम् अनेन बहुधा श्रुतम्।  
 बहु व्याहरताऽनेन न किञ्चिद् अपशब्दितम्॥29॥  
 न मुखे नेत्रयोवापि ललाटे च भ्रवोस्तथा।  
 अन्येष्वपि च गात्रेषु दोषः संविदितः क्वचित्॥30॥  
 अविस्तरमसंदिग्धम् अविलम्बितम् प्रुतम्।  
 उरःस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमेस्वरे॥31॥  
 संस्कारक्रमसंपन्नाम् अुताम् अविलम्बिताम्।  
 उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहर्षिणीम्॥32॥  
 अनया चित्रया वाचा त्रिस्थानव्यंजनस्थया।  
 कस्य नाराध्यते चित्तम् उद्यतासेररेरपि॥33॥  
 एवंविधो यस्य दूतो न भवेत् पार्थिवस्य तु।  
 सिद्धयन्ति हि कथं तस्य कार्याणां गतियोऽनघ॥34॥  
 एवंगुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः।  
 तस्य सिद्धयन्ति सर्वेऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिताः॥35॥

## 14.2 ) अब मूल पाठ को समझें

एवमुक्त्वा तु हनुमांस्तौ वीरौ रामलक्ष्मणौ  
 वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किञ्चन॥24॥

अन्वय- वाक्यज्ञः वाक्यकुशलः हनुमान् तौ एवम् उक्तवा तु पुनः किञ्चन न उवाच।

अन्वयार्थः- वाक्य प्रयोग में निपुण हनुमान ने उन दोनों राम लक्ष्मण से इस प्रकार कहकर पुनः कुछ नहीं कहा।

सरलार्थः- वाक्य प्रयोग में कुशल हनुमान ने राम लक्ष्मण से इस प्रकार सब कुछ कहकर पुनः कुछ नहीं कहा। मौन हो गया।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान की वाक् कुशलता का वर्णन किया है। हनुमान ने राम लक्ष्मण के समीप आकर उन दोनों के रूप की वीरता की प्रशंसा की। और उन दोनों के



राम द्वारा हनुमान की प्रशंसा



ध्यान दें:

धनुष बाणों और खड्ग की भी बहुत प्रशंसा की। और अपने एवं अपने राजा के विषय में उन दोनों से कहा। सुग्रीव के द्वारा उसके यहाँ भेजने के कारण को भी उनसे कहा। वह इतनी देर तक सब कुछ कहकर चुप हो गया। जिस रूप से वाक्य विन्यास से उसने उनके विषयों की प्रशंसा की उससे हनुमान महान वाक्यों को जानने वाला, और वाक्य प्रयोग में निपुण था ऐसा ज्ञात होता है। फिर सब कुछ कहकर वह चुप हो गया दोबारा कुछ भी नहीं कहा।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- उक्त्वा - वच् धातु + क्त्वा प्रत्यय
- वाक्यज्ञः - वाक्यं जानाति। ज्ञा धातु + क प्रत्यय।
- वाक्यकुशलः - वाक्ये कुशलः वाक्यकुशलः -सप्तमी तत्पुरुष समास।
- उवाच - वच् धातु, लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

**सन्धि युक्त शब्द**

- हनुमांस्तौ - हनुमान् + तौ। हल सन्धि।
- वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः - वाक्यज्ञः + वाक्यकुशलः। विसर्ग सन्धि।
- पुनर्न - पुनः + न। विसर्ग सन्धि।
- नोवाच - न + उवाच। गुण सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** वाक्यज्ञेन वाक्यकुशलेन हनुमता तौ एवम् उक्त्वा तु पुनः किञ्चन न ऊचे।

**एतच्छ्रुत्वा वचन्तस्य रामो लक्ष्मणम् अब्रवीत्।**

**प्रहृष्टवदनः श्रीमान् भ्रातरं पार्श्वतः स्थितम्॥25॥**

**अन्वय-** तस्य एतत् वचः श्रुत्वा प्रहृष्टवदनः श्रीमान् रामः पार्श्वतः स्थितं भ्रातरं लक्ष्मणम् अब्रवीत्।

**अन्वयार्थः-** उस हनुमान के इस प्रकार के वचनों को सुनकर प्रफुल्लित मुख से श्री राम ने पास में स्थित भाई लक्ष्मण को बोला।

**सरलार्थः-** हनुमान के मुख से उस सुग्रीव के विषय में सब सुनकर श्री राम आनन्दित हुए। उनका भाई लक्ष्मण पास में था। उस लक्ष्मण को उन्होंने कुछ कहना आरम्भ किया।

**तात्पर्यार्थः-** इतने समय तक राम ने मौन होकर हनुमान के महान भाषण को सुना। इसीलिए उन्होंने अब कहना आरम्भ किया। हनुमान के इन सभी वचनों को सुनकर राम बहुत आनन्दित हुए। राम के पास में उसका भाई लक्ष्मण था। राम अपने पास में स्थित भाई को कुछ कहने के लिए उद्यत हुए। इतनी देर तक अपने विषय में प्रशंसा आदि को सुनने से साधारण व्यक्तियों का मन चंचल होता है। परन्तु राम अपनी प्रशंसा को सुनकर भी बिना विचलित हुए मौन ही रहे। इससे राम का धीरत्व सिद्ध होता है।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- अब्रवीत् - धातु + लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- प्रहृष्टवदनः - प्रहृष्टं वदनं यस्य सः - बहुव्रीहि समास।
- स्थितम् - स्था धातु + क्त प्रत्यय द्वितीय एकवचन।

राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा



ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

- एतच्छ्रुत्वा - एतत् + श्रुत्वा। श्रुत्व सन्धि।
- वचस्तस्य - वचः + तस्य। विसर्ग सन्धि।
- रामो लक्ष्मणम् - रामः + लक्ष्मणम्। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- तस्य एतत् वचः श्रुत्वा प्रहृष्टवदनेन श्रीमता रामेण पार्श्वतः स्थितः लक्ष्मणः अब्रूयत्।

सचिवोऽयं कपीन्द्रस्य सुग्रीवस्य महात्मनः।

तमेव काङ्क्षमाणस्य ममान्तिकमुपागतः॥26॥

अन्वय- अयं कपीन्द्रस्य महात्मनः सुग्रीवस्य सचिवः तम् एव काङ्क्षमाणस्य मम अन्तिकम् इह आगतः।

अन्वयार्थः- यह वानरों के राजा महाबुद्धिमान्नी सुग्रीव का सचिव उस सुग्रीव की इच्छा से मुझ राम के पास यहाँ आया।

सरलार्थः- हनुमान के वचनों को सुनकर आनन्दित राम ने भाई को कहा कि मैं सुग्रीव के लिए यहाँ आया और वानरों के राजा सुग्रीव का सचिव यह हनुमान मेरे पास आया।

तात्पर्यार्थः- श्री राम हनुमान के वचनों को सुनकर आनन्दित हुए। राम लक्ष्मण वानरराज सुग्रीव के साथ ही साक्षात्कार करने के लिए इस देश को आए। और यहाँ उस सुग्रीव का सचिव हनुमान स्वयं उन दोनों के पास आ गया। इसीलिए श्री राम ने आनन्दित होकर पास में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि मैं सुग्रीव की इच्छा करता हुआ यहाँ आया और यह हनुमान उस वानरराज सुग्रीव का ही सचिव मेरे पास आ गया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कपीन्द्रस्य - कपीनाम् इन्द्रः कपीन्द्रः - षष्ठी तत्पुरुष समास।
- काङ्क्षमाणस्य - काङ्क्ष धातु + शानच् प्रत्यय, षष्ठी एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- सचिवोऽयम् - सचिवः + अयम्। विसर्ग सन्धि।
- ममान्तिकम् - मम् + अन्तिकम्। सवर्ण दीर्घ सन्धि।
- इहागतः - इह + आगतः - सवर्ण दीर्घ सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- अनेन कपीन्द्रस्य महात्मनः सुग्रीवस्य सचिवेन तम् एव काङ्क्षमाणस्य मम अन्तिकम् आगतम्।

तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम्।

वाक्यज्ञं मधुरैर्वाक्यैः स्नेहयुक्तम् अरिन्दम्॥27॥

अन्वय- सौमित्रे! तं सुग्रीवसचिवं कपिं वाक्यज्ञम् अरिन्दमं स्नेहयुक्तम् मधुरैः वाक्यैः अभ्यभाष।

अन्वयार्थः- हे लक्ष्मण! तुम शत्रुदमन सुग्रीव सचिव कपिवर हनुमान से, जो बात के मर्म को



ध्यान दें:

समझने वाले हैं तुम स्नेह पूर्वक मीठी वाणी में बातचीत करो।

**सरलार्थ:-** राम ने पास में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि - हे लक्ष्मण! सुग्रीव सचिव हनुमान जैसे स्नेह से युक्त है वैसे ही मधुर वचनों से बात की।

**तात्पर्यार्थ:-** राम ने पास में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि - सुग्रीव का सचिव यह हनुमान महान ज्ञानी है। वाक्य प्रयोग के विषय में इसकी महती निपुणता है। यह हनुमान शत्रुओं का नाशक है। हे सुमित्रा पुत्र लक्ष्मण! हनुमान के साथ तुम मधुर वचनों से ही बात करो, जिससे वह स्नेह युक्त हो। वस्तुतः यदि मन्त्री स्नेह युक्त होता है तो उसका राजा भी स्नेही होता है। अगर राजा स्नेही होता है तो कार्य शीघ्र सम्पन्न होता है। इसीलिए हनुमान स्नेही हो तो जिस कार्य के लिए राम लक्ष्मण यहाँ आए वह कार्य सिद्ध होगा।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अभ्यभाष - अभि + भाष् धातु लोट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन।
- सुग्रीवसचिवम् - सुग्रीवस्य सचिवः सुग्रीवसचिवः- षष्ठी तत्पुरुष समास।
- स्नेहयुक्तम् - स्नेहेन युक्तः स्नेहयुक्तः। तृतीय तत्पुरुष समास।

### सन्धि युक्त शब्द

- मधुरैर्वाक्यैः - मधुरैः + वाक्यैः, विसर्ग सन्धिः।

**प्रयोग परिवर्तन-** सौमित्रे! स सुग्रीवसचिवः कपिः वाक्यज्ञः अरिन्दमः स्नेहयुक्तः मधुरैः वाक्यैः अभिभाष्यताम्।

**नानृग्वेदविनीतस्य नायजुर्वेदधारिणः।**

**नासामवेदविदुषः शक्यम् एवं विभाषितुम्॥28॥**

**अन्वय-** अनृग्वेदविनीतस्य अयजुर्वेदधारिणः असामवेदविदुषः एवं विभाषितुं न शक्यम्।

**अन्वयार्थ:-** अनृग्वेदविनीतस्य से अभिप्राय है- ऋग्वेद के अभ्यास से रहित यजुर्वेद को न जानने वाला ऊह रहस्य आदि गान विशेष को न जानने वाला इस प्रकार की बातचीत नहीं कर सकता।

**सरलार्थ:-** राम ने हनुमान के पाण्डित्य से मुग्ध होकर लक्ष्मण को कहा कि जो सम्पूर्ण ऋग्वेद को नहीं जानता है, जिसने सम्पूर्ण यजुर्वेद का अध्ययन नहीं किया है। जो सामवेद का विद्वान नहीं है, वह इस प्रकार के पाण्डित्य पूर्ण वाक्यों को नहीं बोल सकता है। अर्थात् हनुमान सभी वेदों के ज्ञाता है।

**तात्पर्यार्थ:-** यह श्लोक रामायण के प्रसिद्ध श्लोकों में से एक है। इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के महाज्ञानित्व और सर्ववेदज्ञत्व को वर्णित किया है। राम हनुमान के ज्ञान को और वाक्य प्रयोग में दक्षता को देखकर चकित हुए। इसीलिए उन्होंने भाई लक्ष्मण को कहा कि जो गुरु के पास में श्रद्धा पूर्वक स्वरादि को मन्त्रों में प्रयोग करके और समझकर ऋग्वेद को नहीं पढ़ता है, वह इस प्रकार के ज्ञानपूर्ण वचनों को नहीं कह सकता है और जिसने यजुर्वेद को सम्यक् रूप से नहीं पढ़ा अर्थात् यजुर्वेद के प्रत्येक अनुवाक में अन्य अनुवाक का सांकर्य है। इसीलिए जो वह धारण नहीं कर सकता वह इस प्रकार के वचनों को नहीं कह सकता है। और जिसने नियम पूर्वक सामवेद का अध्ययन नहीं किया, अर्थात् सामवेद में बहुत से रहस्य आदि से गर्भित गान हैं, जो उनको गाना नहीं जानता है, वह इस प्रकार के वचनों को नहीं कह सकता है।

राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा

ध्यान दें:

हनुमान ने ऋग्वेद को श्रद्धापूर्वक पढ़ा, यजुर्वेद का भी सम्यक् अध्ययन किया, और सामवेद को भी नियमपूर्वक पढ़ा है ऐसा श्री राम कहना चाहते हैं। सामान्यतः संसार में इस प्रकार के विद्वान् दुर्लभ हैं। राम जैसे महान ज्ञानी हनुमान की प्रशंसा करते हैं। इसीलिए हनुमान साधारण प्रतीत नहीं होते हैं।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनृग्वेदविनीतस्य- ऋग्वेदस्य विनीतः ऋग्वेदविनीतः- षष्ठी तत्पुरुष समास। न ऋग्वेदविनीतः न् तत्पुरुष समास।
- अयजुर्वेदधारिणः - यजुर्वेदं धारयति इति यजुर्वेदधारी। न यजुर्वेदधारी- न् तत्पुरुष समास
- असामवेदविदुषः - सामवेदस्य विद्वान् सामवेदविद्वान् - षष्ठी तत्पुरुष समास।, न सामवेद विद्वान् असामवेदविद्वान् - न् तत्पुरुष समास।
- विभाषितुम् - वि+ भाष् धातु+ तुमुन् प्रत्यय।

## सन्धि युक्त शब्द

- नानृग्वेदविनीतस्य - न + अनृग्वेदविनीतस्य। सवर्णदीर्घ सन्धि।
- नायजुर्वेदधारिणः - न + अयजुर्वेदधारिणः। सवर्णदीर्घ सन्धि।
- नासामवेदविदुषः - न + असामवेदविदुषः। सवर्णदीर्घ सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- अनृग्वेदविनीतः अयजुर्वेदधारी असामवेदविद्वान् एवं विभाषितुं न शक्नुयात्।

नूनं व्याकरणं कृत्स्नम् अनेन बहुधा श्रुतम्।

व्यवहारताऽनेन न किञ्चिद् अपशब्दितम्॥29॥

अन्वय- नूनम् अनेन कृत्स्नं व्याकरणं बहुधा श्रुतम्। अत एव बहु व्याहरता अनेन किञ्चित् न अपशब्दितम्।

अन्वयार्थः- हनुमान ने सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र को अनेकों बार पढ़ा। इसीलिए अनेक प्रकार से कहकर भी कुछ अपशब्द नहीं कहा।

सरलार्थः- हनुमान की विद्वता से मुग्ध राम ने लक्ष्मण को कहा की - हनुमान ने सम्पूर्ण व्याकरण को अनेकों बार पढ़ा। इसीलिए उसने इतनी देर तक बहुत कुछ कहा, किन्तु एक भी अपशब्द का प्रयोग नहीं किया।

तात्पर्यार्थः- इससे पूर्व के श्लोक में राम ने हनुमान की वेद विद्वता के विषय में कहा। इसीलिए अब उसके व्याकरण ज्ञान के विषय में कहते हैं। राम ने समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि यह हनुमान न केवल वेद को ही जानता है, इसने तो सम्पूर्ण व्याकरण शास्त्र को बहुत बार पढ़ा है। इसीलिए कौन से शब्द साधु है, कौन से शब्द असाधु है इसका उसको ज्ञान है। और किस शब्द का क्या अर्थ है इसका भी उसको ज्ञान है। इसीलिए उसने इतने समय तक बहुत कुछ कहा, किन्तु एक भी अपशब्द का प्रयोग नहीं किया। सभी शब्दों में कौन प्रत्यय है और कौन प्रकृति यह हनुमान सम्यक् रूप से जानता है। इसीलिए उसने सभी साधु शब्दों को अपने-अपने अर्थ में प्रयुक्त किया। वस्तुतः इस श्लोक से हनुमान वेद-व्याकरण इत्यादि सभी विषयों को जानते हैं ऐसा महर्षि वाल्मीकि ने वर्णित किया है।



ध्यान दें:

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- श्रुतम् - श्रु धातु + क्त प्रत्यय।
- व्याहरता - वि + आ + ह धातु + शतृ प्रत्यय तृतीय एकवचन।
- अपशब्दितम् - अप + शब्द धातु + क्त प्रत्यय, नपुंसकलिङ्।

### सन्धि युक्त शब्द

- व्याहरताऽनेन - व्याहरता अनेन। सवर्णदीर्घ सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** नूनम अयं कृत्सनं व्याकरणं बहुधा श्रुतवान्। अत एव बहु व्याहरन् अयं किञ्चित् न अपशब्दितवान्।

न मुखे नेत्रयोश्चापि ललाटे च भ्रुवोस्तथा।

अन्येष्वपि च सर्वेषु दोषः संविदितः क्वचित्॥30॥

**अन्वय-** अस्य मुखे नेत्रयोः ललाटे भ्रुवोः च तथा अन्येषु सर्वेषु अंगेषु न क्वचित् दोषः संविदितः।

**अन्वय अर्थ-** इस हनुमान के मुख में शरीर में नेत्रों में, मस्तक और भौंह पर तथा सभी अंगों में कोई भी विकार नहीं दिखा।

**सरलार्थ:-** श्री राम ने भाई लक्ष्मण को कहा कि हनुमान ने इतनी देर तक बहुत कुछ कहा। किन्तु उसके किसी भी अंग में कोई भी दोष नहीं दिखा। इसका अर्थ है कि हनुमान ने शिक्षाशास्त्र को अच्छी प्रकार से जाना है।

**तात्पर्यार्थ:-** इस श्लोक में महर्षि वाल्मीकि ने हनुमान के शिक्षा शास्त्र के ज्ञान को वर्णित किया है। साधारण व्यक्ति जब बातचीत करते हैं तब उनके मुख, ललाट इत्यादि अंगों में अलग-अलग विकार दिखाई देता है। अगर बातचीत के समय अंगों में विकार होता है तो शिक्षा शास्त्र में वह बोलने का दोष कहलाता है। किन्तु राम ने कहा हनुमान का यह दोष नहीं था। हनुमान ने राम लक्ष्मण के समीप आकर बहुत कुछ कहा। किन्तु उसके मुख पर, दोनों आंखों में, मस्तक पर, और भौंह किसी भी अंगों में कोई भी विकार नहीं हुआ। उससे ज्ञात होता है कि हनुमान ने शिक्षाशास्त्र को भी सम्यक् रूप से पढ़ा। इसीलिए वह दोषों को सम्यक् रूप से जानता है। और यहाँ राम भी सूक्ष्मदर्शी हैं ऐसा ज्ञात होता है। इसीलिए ही बातचीत के समय में हनुमान के अंगों में विकार नहीं हुआ, इस सूक्ष्म विषय को भी उन्होंने देख लिया।

### सन्धि युक्त शब्द

- नेत्रयोश्चापि - नेत्रयोः + च + अपि। विसर्ग सन्धि, सवर्णदीर्घ सन्धि।
- भ्रुवोस्तथा - भ्रुवोः + तथा। विसर्ग सन्धि।
- अन्येष्वपि - अन्येषु + अपि। यण् सन्धि

**प्रयोग परिवर्तन-** अस्य मुखे नेत्रयोः ललाटे भ्रुवोः च तथा अन्येषु सर्वेषु अंगेषु न क्वचित् दोषं संविदितवान् अहम्।

अविस्तरमसंदिग्धम् अविलम्बितम् श्रुतम्।

उरःस्थं कण्ठगं वाक्यं वर्तते मध्यमेस्वरे॥31॥

**अन्वय-** अस्य अविस्तरम् असंदिग्धम् अविलम्बितम् अव्यथम् उरःस्थं कण्ठगं मध्यमस्वरं वाक्यं वर्तते।

राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा



ध्यान दें:

**अन्वयार्थ:-** हनुमान विस्तार रहित, सन्देह से रहित, अविलम्बित, पीड़ा न देने वाले हृदय से मध्यम स्वर से युक्त वाक्य को कहता है।

**सरलार्थ:-** श्री राम ने हनुमान द्वारा प्रयुक्त वाक्य की प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण को कहा की हनुमान ने जो जो वाक्य प्रयोग किया, वह वाक्य बहुत विस्तृत नहीं है।, सन्देह रहित है, बहुत तेज उच्चारित भी नहीं है, और सुनने में कष्ट दायक भी नहीं है, मध्यम स्वर से प्रयुक्त है।

**तात्पर्यार्थ:-** प्रस्तुत श्लोक में राम ने हनुमान की वाक्य रचना के सौन्दर्य को वर्णित किया है। साधारण व्यक्ति जो वाक्य को प्रयोग करते हैं वह बहुत विस्तृत होता है। और क्या अक्षर को प्रयोग करे इसे जानने में कहीं सन्देह होता है। कुछ व्यक्ति तो वाक्य को अत्यंत तेज उच्चारित करते हैं, इसीलिए वह सुनने से कानों में पीड़ा उत्पन्न होती है, अर्थात् सुनने में अत्यन्त कटु होता है। शिक्षाशास्त्र के अनुसार ये भी बोलने में दोष है। इस प्रकार का एक भी दोष हनुमान को नहीं था। हनुमान ने जिस-जिस वाक्य को प्रयुक्त किया वह अत्यन्त संक्षिप्त, और इस प्रकार से उसने वर्णों को प्रयोग किया जिससे वर्णबोध में राम को कोई भी संदेह उत्पन्न नहीं हुआ। और उसने वाक्यों को भी बहुत तेज उच्चारित नहीं किया। उससे वे वाक्य सुनने में मधुर थे। और उसने सदैव ही मध्यम स्वर से वाक्यों का प्रयोग किया। वाक्य प्रयोग के विषय में शिक्षाशास्त्र में कहे गए दोष हनुमान में नहीं थे ऐसा महर्षि वाल्मीकि ने इस श्लोक में वर्णित किया है।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- अविस्तरम् - अविद्यमानः विस्तरः यस्मिन् तत्। बहुव्रीहि समास।
- असन्दिग्धम् - न सन्दिग्धम् असन्दिग्धम्। न् तत्पुरुष समास।
- अविलम्बितम् - न विलम्बितम् । न् तत्पुरुष समास।
- अव्यर्थम् - न विद्यते व्यथा यस्मात् तत् - बहुव्रीहि समास।
- मध्यतस्वरम् - मध्यमः स्वरः यस्य तत् - बहुव्रीहि समास।

**प्रयोग परिवर्तन-** अस्य अविस्तरेण असन्दिग्धेन अविलम्बितेन अव्यथेन उरःस्थेन कण्ठगेन मध्यमस्वरेण वाक्येन वत्यते।

**संस्कारक्रमसंपन्नाम् अुताम् अविलम्बिताम्।**

**उच्चारयति कल्याणीं वाचं हृदयहर्षिणीम्॥32॥**

**अन्वय-** अयं संस्कारक्रमसंपन्नाम् अुताम् अविलम्बितां हृदयहर्षिणीं कल्याणीं वाचम् उच्चारयति।

**अन्वयार्थ:-** यह हनुमान संस्कारक्रम से सम्पन्न, अति शीघ्र उच्चारण से रहित, विलम्ब के बिना उच्चारित हृदय को हर लेने वाली मधुर कल्याणकारी वाणी को कहता है।

**सरलार्थ:-** राम ने हनुमान की वाणी की प्रशंसा करते हुए लक्ष्मण को कहा कि हनुमान वाणी के क्रम में शिक्षा व्याकरण आदि संस्कारों को जानता है, और जिन वर्णों का प्रयोग करता है, उनके ध्वंस को करता है। शीघ्रता से उच्चारण नहीं करता, विलम्ब से उच्चारित नहीं करता है। और उसकी वाणी को सुनने से हृदय में आह्लाद् होता है।

**तात्पर्यार्थ:-** इस श्लोक में राम समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को हनुमान के द्वारा प्रयुक्त वाणी की महत्ता को कहते हैं। अगर वर्णों को शीघ्र उच्चारित करते हैं तो, जिन वर्णों को उचित प्रकार से कहा, वे भी विध्वंस होते हैं, अर्थात् उचित प्रकार से सुनाई नहीं देते हैं। और अगर दो शब्दों के बीच में अत्यन्त

राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा



ध्यान दें:

विलम्ब हो तो वाक्य का अर्थ समझ नहीं आता। हनुमान की वाणी तो क्रम से शिक्षा-व्याकरण-इत्यादि संस्कारों को उत्पन्न करती है, अर्थात् हनुमान की वाणी शिक्षा-व्याकरण इत्यादि शास्त्र की दृष्टि से उचित है। और अतिशीघ्र उच्चारण से रहित है, इसीलिए उचित रूप से प्रयुक्त वर्णों का विध्वंस न करती है। और उसके दो शब्दों के मध्य उच्चारण में अत्यन्त विलम्ब नहीं है, इसीलिए शब्दों के बीच में सम्बन्ध था। इन को छोड़कर भी बहुत से गुण उसकी वाणी में थे। इस प्रकार के गुणों से युक्त उसकी वाणी को सुनकर राम बहुत आनंदित हुए।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- संस्कारक्रमसंपन्नाम् - संस्काराणां क्रमः संस्कारक्रमः - षष्ठी तत्पुरुष समास। संस्कारक्रमे संपन्ना संस्कारक्रमसम्पन्ना - सप्तमी तत्पुरुष समास।
- अविलम्बिताम् - न विलम्बिता - न् तत्पुरुष समास।
- हृदयहर्षिणीम् - हृदयं हर्षयति इति।

**प्रयोग परिवर्तन-** अनेन हनुमता संस्कारक्रमसंपन्ना अुता अविलम्बिता हृदयहर्षिणी कल्याणी वाक् उच्चार्यते।

**अनया चित्रया वाचा त्रिस्थानव्यंजनस्थया।**

**कस्य नाराध्यते चित्तम् उद्यतासेररेरपि॥33॥**

**अन्वय-** अनया चित्रया त्रिस्थानव्यंजनस्थया वाचा उद्यतासेः अपि कस्य अरेः चित्तं न आराध्यते।

**अन्वयार्थः-** तीनों स्थानों में उर-कण्ठ-मूर्धा से उच्चारित वाणी उद्यत तलवार को भी किस शत्रु के मन के अनुकूल नहीं होती।

**सरलार्थः-** राम ने हनुमान की वाणी की प्रशंसा की- उसकी वाणी वक्ष, कण्ठ और मूर्धा तीनों स्थानों से उच्चारित है, इसलिए उसकी वाणी विस्मयकारी है, यदि तलवार को धारण कर मारने के लिए प्रवृत्त शत्रु के प्रति इस प्रकार की वाणी का प्रयोग करें तो वह शत्रु भी सन्तुष्ट होता है।

**तात्पर्य अर्थ-** इस श्लोक में राम समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को हनुमान के द्वारा प्रयुक्त वाणी की सामर्थ्य को कहते हैं। वर्ण तीन प्रकार के होते हैं उदात्त, अनुदात्त और स्वरित। उदात्त वर्ण का उच्चारण सिर से होता है। अनुदात्त वर्ण का उच्चारण वक्ष से होता है। और स्वरित वर्ण का उच्चारण कण्ठ से होता है। यदि उदात्त अनुदात्त स्वरित इन स्वरों के साथ वर्णों का प्रयोग करते हैं तो वह वर्ण साधु होता है। हनुमान की वाणी सिर-वक्ष-कण्ठ इत्यादि स्थानों से उच्चारित थी। हनुमान ने उदात्त-अनुदात्त-स्वरित इन स्वरों के साथ ही वर्णों को प्रयोग किया ऐसा ज्ञात है। तलवार को धारण कर मारने के लिए उद्यत शत्रु के प्रति कोई व्यक्ति यदि इस प्रकार के मनोहर वचनों का प्रयोग करता है, तब वह शत्रु भी उन वचनों से अत्यन्त सन्तुष्ट होता है। पुनः उसकी हानि नहीं करता। इस प्रकार का सामर्थ्य हनुमान की वाणी में था।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- त्रिस्थानव्यंजनस्थया - त्रीणि च तानि स्थानानि - इतरेतरद्वन्द्व समास।
- त्रिस्थानेषु व्यंजनं त्रिस्थानव्यंजनम् - सप्तमी तत्पुरुष समास।
- आराध्यते - आ + राध धातु।
- उद्यतासेः - उद्यतः असिः येन स उद्यतासिः इति - बहुव्रीहि समास

राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा



ध्यान दें:

सन्धि युक्त शब्द

- नाराध्यते - न + आराध्यते। सवर्ण दीर्घ सन्धि।
- उद्यतासेररेः - उद्यतासेः + अरेः विसर्ग सन्धि।
- अरेरपि - अरेः + अपि। विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** इयं चित्रा त्रिस्थानव्यंजनस्था वाक् उद्यतासेः अपि कस्य अरेः चित्तं न आराध्नोति।

एवंविधो यस्य दूतो न भवेत् पार्थिवस्य तु।  
सिद्ध्यन्ति हि कथं तस्य कार्याणां गतियोऽनघ॥34॥

**अन्वय-** हे अनघ! यस्य पार्थिवस्य एवंविधः दूतः न भवेत् तस्य कार्याणां गतयः कथं सिद्ध्यन्ति।

**अन्वयार्थः-** हे निष्पाप लक्ष्मण! जिस पार्थिव राजा का इस प्रकार का एवं इस प्रकार के गुणों से युक्त दूत नहीं होगा उस राजा के कार्यों का फल कैसे सिद्ध होता है।

**सरलार्थः-** राम ने समीप में स्थित भाई लक्ष्मण को कहा कि जिस राजा का हनुमान के जैसा महाविद्वान् वाक्यों में कुशल सभी वेदों का ज्ञाता दूत होता है, वह राजा यदि दूत के अनुसार कार्य को करता है तो उसके सभी कार्यों की अवश्य सिद्धि होती है।

**तात्पर्यार्थः-** इस श्लोक में राम हनुमान के दूतत्व की प्रशंसा करते हैं। यदि दूत ज्ञानी, चतुर, बातचीत में कुशल होता है तो राजा के कार्य अत्यन्त सुगमता से होते हैं। उसके कार्य शीघ्र ही सिद्ध होते हैं। अज्ञानी दूत तो शत्रुओं के पास में राजा के गुप्त तत्व को कह देता है। इसीलिए यदि दूत अज्ञानी हो तो राजा की हानि ही होती है। वानर राज सुग्रीव का दूत हनुमान था। वह महाज्ञानी, वाक् निपुण, सभी वेदों को जानने वाला और व्याकरण शिक्षा इत्यादि शास्त्रों को जानने वाला था। इसीलिए राम ने भाई लक्ष्मण को कहा कि- इस प्रकार के गुणों से सम्पन्न हनुमान के जैसा दूत जिस राजा का है, उस राजा के सभी कार्य अवश्य ही सिद्ध होते हैं, एक भी कार्य निष्फल नहीं होता है। इस श्लोक में राम ने भाई लक्ष्मण को 'अनघ' से सम्बोधित किया। अनघ का अर्थ है- जिसका कोई पाप नहीं है वह। इसीलिए लक्ष्मण पूरी तरह से पाप रहित था लक्ष्मण की महत्ता भी यहाँ सिद्ध होती है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनघ - अविद्यमानम् अघं यस्मिन् सः। बहुव्रीहि समास।

सन्धि युक्त शब्द

- एवंविधो यस्य - एवंविधः + यस्य। विसर्ग सन्धि।
- दूतो न - दूतः + न विसर्ग सन्धि।
- गतयोऽनघ - गतयः + अनघ। विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** हे अनघ! यस्य पार्थिवस्य एवंविधेन दूतेन न भूयतां तस्य कार्याणां गतिभिः कथं सिद्ध्यते।

एवंगुणगणैर्युक्ता यस्य स्युः कार्यसाधकाः।  
तस्य सिद्ध्यन्ति सर्वेऽर्था दूतवाक्यप्रचोदिताः॥35॥



राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा



ध्यान दें:

**अन्वय-** यस्य कार्यसाधकाः एवंगुणगुणैः युक्ताः स्युः, तस्य सर्वे अर्थाः दूतवाक्यप्रचोदिताः सन्तः सिध्यन्ति।

**अन्वयार्थः-** जिस राजा के कर्मचारी विद्वान, चतुर, वाक् निपुण आदि गुणों से युक्त होते हैं, उस राजा के सभी कार्य दूत वाक्यों के अनुसार करें तो सिद्ध होते हैं।

**सरलार्थः-** राम ने हनुमान के विषय में लक्ष्मण को कहा की- किसी राजा का यदि हनुमान के सदृश विद्वान, वाक् निपुण कार्यकर्ता होता है तब यदि उस कार्यकर्ता के वाक्यों के अनुसार कार्य को किया जाए तो वह कार्य अवश्य ही पूर्ण होता है।

**तात्पर्य अर्थ-** सभी वेदों का ज्ञाता, वाणी माधुर्य, बातचीत में निपुण, व्याकरण शिक्षा इत्यादि शास्त्रों का ज्ञाता इत्यादि अनेक गुण हनुमान में थे। और हनुमान वानरराज सुग्रीव का सचिव था। इसीलिए राम ने भाई लक्ष्मण को कहा कि जिस राजा का इस प्रकार के गुणों से युक्त हनुमान के जैसा कर्मचारी होता है, वह राजा यदि उस कार्य सहायक अर्थात् सचिव के निर्देशानुसार कार्य को सम्पादित करता है, तब उसके कार्य अवश्य ही सिद्ध होते हैं। इसीलिए राजा को उसके जैसे गुणों से सम्पन्न सचिव की ही नियुक्ति करनी चाहिए यह भी ज्ञात होता है। यदि राज कार्य के लिए अज्ञानी सचिव की नियुक्ति करे तो राजा के सभी कार्य निष्फल होते हैं। और इससे राजा सुग्रीव को भी शीघ्र ही अभीष्ट लाभ होगा राम ने सूचना दी। वस्तुतः राम ने हनुमान की प्रशंसा की, उससे हनुमान को अत्यन्त प्रसन्नता हुई।

**व्याकरणात्मक टिप्पणही**

- युक्ताः - युज् धातु + क्त प्रत्यय, प्रथमा बहुवचन।
- स्युः - अस् धातु, लोट् लकार प्रथम पुरुष बहुवचन।
- कार्यसाधकाः - कार्य साधयन्ति इति।
- दूतवाक्यप्रचोदिताः - दूतवाक्येन प्रचोदिताः - तृतीय तत्पुरुष समास।

**सन्धि युक्त शब्द**

- गुणगणैर्युक्ताः - गुणगणैः + युक्ताः विसर्ग सन्धि।
- युक्ता यस्य - युक्ताः + यस्य। विसर्ग सन्धि।
- सर्वेऽर्थाः - सर्वे + अर्थाः। पूर्वरूप सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** यस्य कार्यसाधकैः एवंगुणगुणैः युक्तैः भवेयम्, तस्य सर्वेः अर्थैः दूतवाक्यप्रचोदितैः सद्भिः सिध्यते।



**पाठगत प्रश्न**

1. हनुमान किसका सचिव था?
2. कौन इस प्रकार के वचनों को कहने में सक्षम नहीं होता?
3. किस शास्त्र को हनुमान ने अनेक बार सुना?
4. हनुमान के किन अंगों में विकार नहीं है?

राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा



ध्यान दें:

5. हनुमान ने किस प्रकार के वाक्य को कहा?
6. हनुमान की वाणी कैसी थी?
7. हनुमान की तीन स्थानों से उच्चारित विचित्र वाणी किसके चित्त को प्रसन्न करती है?
8. अगर हनुमान जैसा दूत हो तो राजा का क्या सिद्ध होता है?
9. राजा के कार्य कैसे सिद्ध होते हैं?
10. 'वाक्यज्ञो वाक्यकुशलः पुनर्नोवाच किंचन' यहाँ वाक्यज्ञ इससे क्या निर्दिष्ट है।
 

क. लक्ष्मण	ख. हनुमान
ग. राम	घ. बाली
11. राम लक्ष्मण किसको ढूँढने के लिए पम्पा नदी के तीर पर आए।
 

क. सुग्रीव को	ख. बाली को
ग. हनुमान को	घ. सीता को
12. सौमित्रे इससे किसका सम्बोधित किया है
 

क. राम	ख. हनुमान
ग. सुग्रीव	घ. लक्ष्मण
13. तमभ्यभाष सौमित्रे सुग्रीवसचिवं कपिम् - यह किसकी उक्ति है।
 

क. लक्ष्मण की	ख. हनुमान की
ग. राम की	घ. सुग्रीव की
14. अविस्तरम् असन्दिग्धम् अविलम्बितम् अव्यथम्' वाक्य किसका है
 

क. सुग्रीव का	ख. राम का
ग. हनुमान का	घ. लक्ष्मण का
15. क-स्तम्भ से ख-स्तम्भ मिलाओ-
 

क-स्तम्भ	ख-स्तम्भ
1. प्रहृष्टवदन	क. समीपम्
2. सौमित्रिः	ख. विद्यते
3. अन्तिकम्	ग. श्री राम
4. महावैयाकरण	घ. वदति
5. मध्यमस्वरम्	ङ लक्ष्मणः
6. वर्तते	च. हनुमता सदृशः
7. हृदयहर्षिणी	छ. हनुमान
8. उच्चारयति	ज. सन्तोष्यते



राम द्वारा हनुमान  
की प्रशंसा



ध्यान दें:



पाठान्त प्रश्न

1. राम ने पास में स्थित भाई को क्या कहा सप्रसंग लिखिए।
2. हनुमान के व्याकरण ज्ञान के विषय में राम की उक्ति को ग्रन्थानुसार आलोचित कीजिए?
3. नानृग्वेदविनीतस्य.....श्लोक की संक्षेप से व्याख्या कीजिए।
4. हनुमान की वाणी के सौन्दर्य को वर्णित कीजिए।
5. हनुमान के शिक्षाशास्त्र ज्ञान के विषय में राम की उक्ति को ग्रन्थानुसार आलोचित कीजिए।
6. हनुमान के दूतत्व विषय में राम ने क्या कहा?



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. वानरों के राजा महात्मा सुग्रीव का
  2. ऋग्वेद को न पढ़ने वाला, यजुर्वेद का अभ्यास नहीं करने वाला, सामवेद को न जानने वाला
  3. व्याकरण शास्त्र को
  4. मुख, नेत्र, मस्तक, भौंह तथा अन्य सभी अंगों में
  5. अविस्तारी, असन्दिग्ध, अविलम्बित, अव्यथम्, हृदय, कण्ठ, मूर्धा और मध्यम स्वर से युक्त
  6. संस्कार क्रम से सम्पन्न, अद्भुत, अविलम्बित, कल्याणकारी और हृदय को हरने वाली
  7. मरने के लिए प्रवृत्त शत्रु को भी
  8. कार्यो का परिणाम सिद्ध होता है
  9. दूतवचनानुसार कार्य करके
- |          |       |       |       |       |
|----------|-------|-------|-------|-------|
| 10. ख.   | 11. क | 12. घ | 13. ग | 14. ग |
| 15. 1. ग | 2. ड  | 3. क  | 4. छ  | 5. झ, |
| 6. ख     | 7. ज  | 8. घ  | 9. च  | 10. ज |



ध्यान दें:

15

## राम सुग्रीव की मित्रता

वनवास के समय में लंकेश्वर रावण ने माता सीता का अपहरण किया। फिर श्री राम ने सुग्रीव के साथ मित्रता करके सुग्रीव के शत्रु बाली को मार दिया। उसके बाद वानर सेना की सहायता से और हनुमान की सहायता से रावण को मारकर सीता की रक्षा की ऐसा हम सभी जानते हैं। किन्तु सुग्रीव के साथ किस प्रकार से उसकी मित्रता हुई इस विषय में हम बहुत ही अज्ञानी हैं। उस ही विषय को हम इस अन्तिम पाठ में जानते हैं। सुग्रीव के साथ मित्रता करने की इच्छा को लक्ष्मण से कहते हुए हनुमान अपने राजा की विजय अवश्य होगी ऐसा विचारकर अत्यन्त आनन्दित हुआ। इस विषय को स्पष्ट रूप से जानने के लिए अब हम अन्तिम चार श्लोक पढ़ें।



### उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- लक्ष्मण की वाक् निपुणता के विषय जानने में;
- हनुमान की राजा के ऊपर कितनी प्रीति थी ऐसा जानने में;
- श्लोक में स्थित पदों का अन्वय किस प्रकार से करना चाहिए ऐसा जानने में;
- व्याकरण विषयक कुछ ज्ञान को प्राप्त करने में;
- श्लोकों की व्याख्या किस प्रकार से करनी चाहिए इस विषय में;

### 15.1 ) मूलपाठ

एवम् उक्तस्तु सौमित्रिः सुग्रीवसचिवम् कपिम्।  
अभ्यभाषत वाक्यज्ञो वाक्यज्ञम् पवनात्मजम्॥३६॥  
विदिता नौ गुणा विद्वन सुग्रीवस्य महात्मनः।  
तमेव चावाम् मार्गावः सुग्रीवम् प्लवगेश्वरम्॥३७॥



ध्यान दें:

यथा ब्रवीषि हनुमान् सुग्रीव वचनादिह।  
तत् तथा हि करिष्यावो वचनात् तव सत्तम॥38॥  
तत् तस्य वाक्यम् निपुणम् निशम्य।  
प्रहृष्ट रूपः पवनात्मजः कपिः।  
मनः समाधाय जयोपपत्तौ  
सख्यं तदा कर्तुमियेष ताभ्याम्॥39॥

## 15.2 ) अब मूल पाठ को समझें

एवम् उक्तस्तु सौमित्रिः सुग्रीवसचिवम् कपिम्।  
अभ्यभाषत वाक्यज्ञो वाक्यज्ञम् पवनात्मजम्॥36॥

अन्वय- रामेण एवम् उक्तः वाक्यज्ञः सौमित्रिः वाक्यज्ञं सुग्रीवसचिवं पवनात्मजं कपिम् अभ्यभाषत।

अन्वयार्थः- राम के द्वारा कहे हुए वाक्यों में निपुण लक्ष्मण ने वाक्य तात्पर्यज्ञ सुग्रीव के सचिव वानरराज पवन पुत्र वानर हनुमान को कहा।

सरलार्थः- जब राम ने लक्ष्मण के समीप में हनुमान की प्रशंसा की, फिर उस लक्ष्मण ने राम के वचनानुसार वायु पुत्र से वानर राज सुग्रीव के सचिव से, महाज्ञानी हनुमान के साथ वार्तालाप को करना आरम्भ किया।

तात्पर्यार्थः- राम ने इतने समय तक लक्ष्मण के पास में हनुमान की बहुत प्रशंसा की। इसीलिए सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण ने राम के वचन से हनुमान की महत्ता को जाना, फिर उन्होंने अब वायु नन्दन हनुमान के साथ बातचीत करना आरम्भ किया। हनुमान की वाक् कुशलता पूर्व में ही वर्णित है। इस श्लोक से तो महर्षि वाल्मीकि ने लक्ष्मण की भी वाक् कुशलता को वर्णित किया है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सुग्रीवसचिवम् - सुग्रीवस्य सचिवः इति-षष्ठी तत्पुरुष समास।
- अभ्यभाषत- अभि + भाष् धातु लङ् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- सौमित्रिः - सुमित्रा + इञ् प्रत्यय।

### सन्धि युक्त शब्द

- वाक्यज्ञो वाक्यज्ञम् - वाक्यज्ञः + वाक्यज्ञम्। विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन- रामेण एवम् उक्तेन वाक्यज्ञेन सौमित्रिणा वाक्यज्ञः सुग्रीवसचिवः पवनात्मजः कपिः अभ्यभाष्यत।

विदिता नौ गुणा विद्वन सुग्रीवस्य महात्मनः।  
तमेव चावाम् मार्गावः सुग्रीवम् प्लवगेश्वरम्॥37॥

अन्वय- हे विद्वन नौ महात्मनः सुग्रीवस्य गुणाः विदिताः अत एव आवां तं प्लवगेश्वरं सुग्रीवम् एव मार्गावः।



ध्यान दें:

**अन्वय अर्थ-** हे महाज्ञानी हम दोनों राम लक्ष्मण महाबुद्धिशाली सुग्रीव के गुणों को जानते हैं। इसीलिए हम दोनों राम लक्ष्मण उस वानर राज सुग्रीव को ही खोज रहे हैं।

**सरलार्थ:-** लक्ष्मण ने हनुमान के प्रति कहा कि हे महाज्ञानी हनुमान हम दोनों वानर राज सुग्रीव की महत्ता को जानते हैं, इसीलिए हम दोनों उस सुग्रीव की खोज करते हैं।

**तात्पर्यार्थ:-** वानर राज सुग्रीव की खोज के लिए राम लक्ष्मण ऋष्यमूक पर्वत के समीप आए। और वहाँ आकर हनुमान के साथ साक्षात्कार हुआ। हनुमान ने उन दोनों से सुग्रीव की बहुत प्रशंसा की। और कहा कि सुग्रीव उन दोनों के साथ मित्रता करना चाहता है। इसीलिए उसे यहाँ भेजा। इसीलिए लक्ष्मण ने राम के आदेशानुसार हनुमान को कहा कि महात्मा सुग्रीव के गुणों को हम दोनों जानते हैं। हम दोनों तो सुग्रीव के साथ साक्षात्कार करने के लिए इस दुर्गम देश को आए। इस श्लोक में लक्ष्मण ने हनुमान के द्वारा पूछे 'तुम दोनों इस दुर्गम देश को कैसे आए' इस प्रश्न का भी उत्तर दे दिया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विदिता: - विद् धातु + क्त प्रत्यय प्रथमा बहुवचन ।
- मार्गाव: - मार्ग धातु लट् लकार उत्तम पुरुष द्विवचन।
- प्लवगेश्वरम् - प्लवगानाम् ईश्वर: इति षष्ठी तत्पुरुष समास।

### सन्धि युक्त शब्द

- विदिता नौ - विदिता: + नौ। विसर्ग सन्धि।
- चावाम् - च + आवाम् सवर्णदीर्घसन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** हे विद्वान नौ महात्मनः सुग्रीवस्य गुणाः विदिताः अत एव आवाभ्यां स प्लवगेश्वरः सुग्रीवः एव मार्ग्यते।

यथा ब्रवीषि हनुमान् सुग्रीव वचनादिह।

तत् तथा हि करिष्यावो वचनात् तव सत्तम॥३४॥

**अन्वय-** हे हनुमन् सुग्रीववचनात् यथा यत् त्वम् इह ब्रवीषि, तत् तव वचनात् आवां करिष्यावः।

**अन्वयार्थ:-** हे हनुमान सुग्रीव के वचन से जैसे सुग्रीव मित्रता की इच्छा करता है जो की तुमने यहाँ कहा, वह मित्रता को तुम्हारे वचन अनुसार करेगा।

**सरलार्थ:-** लक्ष्मण ने हनुमान को कहा कि वानर राज सुग्रीव हम दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करता है, इसीलिए तुम को यहाँ भेजा। इसीलिए हम दोनों भी तुम्हारे वचन के अनुसार उनके साथ मित्रता को स्वीकार करना चाहते हैं।

**तात्पर्यार्थ:-** हनुमान ने राम लक्ष्मण से कहा कि वानर राज सुग्रीव तुम्हारे साथ मित्रता करना चाहते हैं। इसलिए उसे यहाँ उन दोनों के पास भेजा। राम लक्ष्मण भी उस सुग्रीव के साथ मिलने के लिए यहाँ आए। इसलिए वे दोनों वानरराज सुग्रीव की मित्रता को स्वीकार करना चाहते हैं। इसलिए लक्ष्मण ने हनुमान को कहा कि हे हनुमान तुमने कहा कि सुग्रीव हम दोनों के साथ मित्रता करना चाहता है, तुम्हारे वचनों के अनुसार हम वैसा ही करेंगे। इस श्लोक में लक्ष्मण ने हनुमान के लिए सत्तम् सम्बोधित किया। सत्तम

राम सुग्रीव की  
मित्रता



ध्यान दें:

इसका अर्थ है जो सज्जनों में भी श्रेष्ठ हो।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- ब्रवीषि - ब्रू धातु लट् लकार मध्यम पुरुष एकवचन।
- सुग्रीववचनात् - सुग्रीवस्य वचनं इति। षष्ठी तत्पुरुष समास।
- सत्तम - सत्सु उत्तमः। सत् + तमप् प्रत्यय।

**सन्धि युक्त शब्द**

- सुग्रीववचनादिह - सुग्रीववचनात् + इह। जश्त्व सन्धि।
- करिष्यावो वचनात् - करिष्यावः + वचनात्। विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-** हे हनुमन् सुग्रीववचनात् यथा यत् त्वया इह ब्रूयते, तत् तव वचनात् आवाभ्यां करिष्यते।

तत्तस्य वाक्यम् निपुणम् निशम्य।

प्रहृष्ट रूपः पवनात्मजः कपिः।

मनः समाधाय जयोपपत्तौ

सख्यं तदा कर्तुमियेष ताभ्याम्॥३९॥

**अन्वय-** प्रहृष्टरूपः पवनात्मजः कपिः तस्य तत् वाक्यं निपुणं निशम्य जयोपपत्तौ मनः समाधाय ताभ्यां सख्यं कर्तुम् इयेष।

**अन्वयार्थः-** पवन पुत्र हनुमान लक्ष्मण के निपुण वाक्यों को सुनकर सुग्रीव की विजय सिद्धि का मन में विचार कर तुम दोनों राम लक्ष्मण मित्रता को करने के लिए इच्छित हो ऐसा जानकर हृदय से आनन्दित हुआ।

**सरलार्थः-** राम लक्ष्मण भी सुग्रीव के साथ मित्रता करना चाहते हैं हनुमान ने लक्ष्मण के मुख से सुना। उससे सुग्रीव की विजय अवश्य होगी ऐसा विचार कर वह बहुत आनन्दित हुआ। इसलिए वह राम लक्ष्मण के साथ मित्रता करना चाहता है।

**तात्पर्यार्थः-** राम लक्ष्मण भी सुग्रीव के साथ मित्रता करना चाहते हैं ऐसा लक्ष्मण के मुख से हनुमान ने जाना। राम लक्ष्मण के समीप दिव्य धनुष-तलवार-बाण- इत्यादि शस्त्र हैं। और उन दोनों में महान वीरत्व है, जो साधारण नहीं है यह सब हनुमान ने जाना। इसलिए इस प्रकार के वीर यदि वानरों के राजा सुग्रीव के मित्र हो तो बाली के साथ युद्ध में उन दोनों की सहायता से सुग्रीव की अवश्य ही विजय होगी वह निश्चित हुआ। इसलिए वह पवन पुत्र हनुमान उस विषय में गूढ़ चिन्तन करके बहुत आनन्दित हुआ। इसलिए उसने राम लक्ष्मण के साथ मित्रता को करने के लिए विचार किया। प्रस्तुत श्लोक से हनुमान जैसे दूत सदैव राजा के हित आकांक्षी होते हैं ऐसा जानते हैं। इसलिए उसने आरम्भ में राजा सुग्रीव की विजय किस प्रकार से होगी ऐसा सोचा।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- निश्मय- नि + शम् धातु + ल्यप् प्रत्यय।



- प्रहृष्टरूपः - प्रहृष्टं रूपं यस्य स - बहुव्रीहि समास।
- समाधाय- सम् + आ + धा धातु + ल्यप् प्रत्यय।
- जयोपपत्तौ - जयस्य उपपत्तिः। षष्ठी तत्पुरुष समास।
- इयेष -इष् धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।

**प्रयोग परिवर्तन-** प्रहृष्टरूपेण पवनात्मजेन कपिना तस्य तत् वाक्यं निपुणं निशम्य जयोपपत्तौ मनः समाधाय ताभ्यां सख्यं कर्तुम् इषे।

**छन्द परिचय-** इस श्लोक में उपजाति छन्द है। उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में ग्यारह अक्षर होते हैं। एवं चार चरण एक श्लोक में होते हैं। उस सम्पूर्ण श्लोक में 44 अक्षर होते हैं।



### पाठगत प्रश्न

1. लक्ष्मण ने किसको कहा?
2. लक्ष्मण कैसा था?
3. राम लक्ष्मण को किसके गुण विदित है?
4. सुग्रीव की खोज में कौन आया?
5. हनुमान ने कहाँ चित्त को लगाया?
6. हनुमान ने क्या करने की इच्छा की?
7. तत्तस्य वाक्यं निपुणं निशम्य ..... श्लोक में कौन सा छन्द है।
8. अभ्यभाषत वाक्यज्ञो वाक्यज्ञं पवनात्मजम् यहाँ वाक्यज्ञ से कौन निर्दिष्ट है  
क. लक्ष्मण  
ख. हनुमान  
ग. राम  
घ. सुग्रीव
9. हनुमान ने किस शास्त्र को बहुत बार सुना था?  
क. न्यायशास्त्र  
ख. व्याकरणशास्त्र  
ग. ज्योतिषशास्त्र  
घ. शिक्षाशास्त्र

### राम सुग्रीव की मित्रता



**ध्यान दें:**



ध्यान दें:

10. तमेव चावां मार्गावः सुग्रीवं प्लवगेश्वरम् यह किसकी उक्ति है।  
 क. राम की  
 ख. हनुमान की  
 ग. लक्ष्मण की  
 घ. बाली की
11. तत्तथा हि करिष्यावो वचनात्तव सत्तम - यहाँ सत्तम से किसको सम्बोधित किया गया है।  
 क. राम  
 ख. हनुमान  
 ग. लक्ष्मण  
 घ. सुग्रीव
12. मनः समाधाय जयोपपत्तौ सख्यं तदा कर्तुम् इयेष ताभ्याम् यहाँ हनुमान ने किसकी विजय उत्पत्ति के लिए मनः समाधत्तवान् ऐसा कहा।  
 क. राम की  
 ख. बाली की  
 ग. रावण की  
 घ. सुग्रीव की
13. क-स्तम्भ से ख-स्तम्भ को मिलाओ।
- |                  |                   |
|------------------|-------------------|
| <b>क- स्तम्भ</b> | <b>ख- स्तम्भ</b>  |
| 1. प्लवगेश्वरः   | क. अन्विषावः      |
| 2. मार्गावः      | ख. सम्पादयिष्यावः |
| 3. ब्रवीषि       | ग. सुग्रीवः       |
| 4. करिष्यावः     | घ. इष्टवान्       |
| 5. इयेष          | ङ आत्थ            |



**पाठ सार**

भिक्षुरूपधारी हनुमान के हृदय को हरने वाले वचनों को सुनकर श्री राम अत्यन्त आनन्दित हुए। इसलिए उन्होंने पास में स्थित भाई को लक्षित करके हनुमान के पाण्डित्य की बहुत प्रशंसा की। हनुमान ने सुग्रीव के विषय में उन दोनों को कहकर सुग्रीव के सचिव के रूप में अपना परिचय दिया। फिर कहा कि सुग्रीव तुम दोनों के साथ मित्रता की इच्छा करता है इसलिए उसे यहाँ भेजा। वे दोनों भाई तो सुग्रीव

से मिलने के लिए ही वहाँ गए। इसीलिए वे दोनों उस वाक्य को सुनकर आनन्दित हुए। फिर वाक्यों में निपुण, वाग्मी लक्ष्मण ने राम के आदेशानुसार वाक् निपुण हनुमान को कहा कि हम दोनों महात्मा वानरराज सुग्रीव के गुणों के विषय में जानते हैं, हम दोनों तो उस सुग्रीव को ही खोजते हुए यहाँ आ गए।

सुग्रीव राम लक्ष्मण के साथ मित्रता को चाहता है जो हनुमान ने कहा उसके अनुसार ही लक्ष्मण ने सुग्रीव की मित्रता को स्वीकार किया। और वह सुनकर हनुमान ने विचार किया कि इस प्रकार के दिव्य शस्त्रधारी वीर यदि सुग्रीव के मित्र होंगे तब बाली के साथ युद्ध में अवश्य ही सुग्रीव की विजय होगी। इसलिए अपने राजा की विजय के विषय में सोचकर उसको महान आनन्द हुआ। वह भी उनके साथ मित्रता करने को इच्छुक हुआ। यह पाठ का सार है।

### आपने क्या सीखा

- जिसकी सहायता से कार्य सिद्ध होगा उसके साथ अवश्य ही मित्रता करनी चाहिए।
- गुणों को सम्यक् रूप से जानकर ही अपरिचितों के साथ मित्रता करनी चाहिए।
- स्थिति के आरम्भ में राजा की विजय के विषय में ही चिन्तन करना चाहिए।



### पाठान्त प्रश्न

1. लक्ष्मण ने हनुमान को क्या कहा। सप्रसंग लिखिए।
2. राम लक्ष्मण सुग्रीव के साथ मित्रता करेंगे यह सुनने के बाद हनुमान कैसे आनन्दित हुआ।
3. तत्स्य वाक्यं निपुणं निशम्य... श्लोक की व्याख्या कीजिए।

### 15.3 ) सन्दर्भ सूची

श्रीवाल्मीकिमहामुनिप्रणीतं रामायणम्। (रामप्रणीत-रामायणतिलक, शिवसहायप्रणीत-रामायणशिरोमणि, गोविन्दराजप्रणीत-रामायणभूषणेति टीकात्रयेणोपस्कृतम् तच्च कट्टिभिः श्रीनिवासशास्त्रिभिः संशोधितपाठान्तरैः टिप्पण्यादिभिश्च समलंकृतम् तथा सातडिमुखोपाध्यायशर्मणा विनिर्मिता विशदभूमिकया श्लोकानुक्रमण्या च सनाथीकृतम्।)2006। प्रकाशक- प्रो. वेम्पटि कुटुम्ब शास्त्री। प्रकाशनम्- राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्।



### पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1. सुग्रीव सचिव पवन पुत्र हनुमान को
2. वाक् निपुण
3. महात्मा सुग्रीव का
4. राम लक्ष्मण
5. विजय उत्पत्ति
6. राम लक्ष्मण के साथ मित्रता

### राम सुग्रीव की मित्रता



ध्यान दें:

राम सुग्रीव की  
मित्रता



ध्यान दें:

7. उपजाति छन्द
8. (क)
9. (ख)
10. (ग)
11. (ख)
12. (घ)
13. 1. (ग)  
2. (क)  
3. (ङ)  
4. (ख)  
5. (घ)

## कर्ण का परिताप



ध्यान दें:

### कर्णभारम्

जिन कवियों के द्वारा साधारण विषयों को भी असाधारण रूप से प्रतिपादित कर सहृदयों के मन में आनन्द को उत्पन्न किया जाता है उस प्रकार का कवि कौशल ही काव्य है। श्रव्य दृश्य के भेद से काव्य दो प्रकार का है। दृश्य काव्यों में से एक नाटक है। नट अभिनय से यह प्रदर्शित करते हैं। उस नाटक को देखने से सभी के मन में अनायास ही साहित्य रस का उदय होता है। नाटक को अभिनीत किया जाता है इस कारण से उसे पढ़कर पाठक के मन में साक्षात् नाटक के चित्र ही दिखाई देते हैं। नाटक के देखने से तो पढ़ने के परिश्रम के बिना ही आनन्द की अनुभूति होती है। इसी कारण से काव्यों में नाटक अत्यन्त प्रसिद्ध है। इसीलिए कहा गया है काव्यों में नाटक रमणीय है।

नाटकों में भास के नाटक अत्यन्त प्रसिद्ध है। कर्ण भारम नाटक महाभारत को आधार बनाकर रचा गया है। इसी कारण इस नाटक से महाभारत की कथा ज्ञात होती है। इस नाटक से कर्ण के त्याग की महत्ता को द्योतित किया गया है। अपना जीवन संकट में जानते हुए भी कर्ण ने अपने कवच कुण्डल को ब्राह्मणरूपी इन्द्र को सहर्ष दे दिए। कर्ण का यह त्याग बहुत समय से प्रसिद्ध है। इस प्रकार का त्याग सभी मनुष्यों के लिए सीखने का विषय है। और गुरु कृपा के बिना शिक्षा समय आने पर सफल नहीं होती यह भी जामदग्न्य के वृत्तान्त से जानते हैं। इसीलिए इस नाटक से बहुत से नीति शिक्षा विषयक बोध होंगे। यह नाटक छोटा है इसी कारण से बालकों के पढ़ने के लिए सरल होगा। और व्याकरण कोश आदि ज्ञान के साथ इस नाटक का अध्ययन कर सकते हैं।

इस पाठ को पढ़ने से पाठक महाभारत में स्थित कर्ण के रमणीय वृत्तान्त को जानेंगे। नाटक की शैली कैसी है। भास की सरल शैली यहाँ रमणीय ही है। नाटक के अध्ययन से कवि द्वारा छन्दों का व्यवहार कैसे किया गया यह जानकर नाटक से कैसे नीति शिक्षा को प्राप्त करते हैं इस ज्ञान के लिए यह नाटक अत्यन्त उपयोगी है।

### प्रस्तावना

नाटककार का परिचय- महाकवि भास प्राचीनतम संस्कृत दृश्य काव्य रचनाओं में से एक है।

कर्ण का परिताप



ध्यान दें:

उनके नाटक संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध है। वस्तुतः संस्कृत साहित्य के जगत में नाटक के लिए भास ही अत्यन्त प्रसिद्ध है। उन्होंने 13 नाटकों की रचना की। वे हैं-1. प्रतिज्ञायौगन्धरायणम्, 2. अविमारकम्, 3. स्वप्नवासवदत्तम्, 4. प्रतिमानाटक, 5. मध्यमव्यायोगः, 6. पंचरात्रः, 7. अभिषेक, 8. दूतवाक्यम्, 9. दूतघटोत्कचम्, 10. कर्णभारम्, 11. ऊरुभंगम्, 12. बालचरितम्, 13. चारुदत्तम् चेति। संस्कृत वाङ्मय में कवियों के काल और देश के अनुल्लेख से सभी के जैसे भास के काल और देश के विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। फिर भी भास का काल ईसा पू. चतुर्थ शताब्दी से ईसा पू. के अन्दर स्वीकार कर सकते हैं। भास के नाटकों की मातृता केरल में प्राप्त है इस कारण से कुछ विद्वान भास को दक्षिण भारतीय मानते हैं। और भास की कृतियों में उत्तर भारत के स्थानों का अधिकतम वर्णन होने से कुछ विद्वान भास को उत्तर भारतीय मानते हैं। किन्तु अब भी भास का स्थान निश्चित नहीं है।



इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे;

- संस्कृत नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों को जानने में;
- कर्णभारम् नाटक के पात्रों को जानने में;
- चिराचरित नाटक के मंगल को जानने में;
- कर्ण ने कब अर्जुन के लिए प्रस्थान किया। जानने में;
- कुछ कठिन शब्दों को अमरकोष से जान जानने में;
- कुछ विशिष्ट धातु रूप के प्रकृति प्रत्ययों को जानने में;

## 16.1 ) नाटक परिचय

### 16.1.1 ) नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का परिचय

नान्दी-

आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।

देवद्विजन्पादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥

माङ्गल्यशङ्खचन्द्राब्जकोककैरवशंसिनी।

पदैर्युक्ता द्वादशभिरष्टाभिर्वा पदैरुत॥

अर्थ- जहाँ देव, ब्राह्मण, नृपादि की आशीर्वचनों से युक्त स्तुति होती है वह नान्दी कहलाती है। बारह अथवा आठ पदों से शंख, चक्र, पद्मादि मंगल वाचक शब्दों से नान्दी होती है। नान्दी नाटक से पहले उच्चारित करते हैं।

आमुखम् -

नटो विदुषको वापि पारिपाश्विक एव वा।

सूत्रधारेण सहिताः संलापं यत्र कुर्वते॥

चित्रैर्वाक्यैः स्वकार्योत्थैः प्रस्तुताक्षेपिभिर्मिथः।  
आमुखं तत्तु विज्ञेयं नाम्ना प्रस्तावनापि सा॥

अर्थ- जहाँ नट विदूषक अथवा अन्य कोई अभिनेता सूत्रधार के साथ नाटक की कथा के विषय में वार्तालाप करते हैं तब वह आमुख कहलाता है। और उसे प्रस्तावना नाम से भी कहा जाता है।

सूत्रधार-

आसूत्रयन् गुणान् नेतुः कवेरपि च वस्तुना।

रंगप्रसाधनप्रौढः सूत्रधार इवोदितः॥

नाटयस्योपकरणादीनि सूत्रमित्यभिधीयते।

सूत्रं धारयतीत्यर्थे सूत्रधारो मतो बुधैः॥

अर्थ- जो रंग प्रसाधनों में प्रौढ नायक के गुणों को वर्णित करता है वह सूत्रधार कहलाता है। नाटक के उपकरण आदि सूत्र कहलाते हैं, उस सूत्र को जो धारण करता है वह सूत्रधार है ऐसा विद्वानों के द्वारा कहा गया है।

नेपथ्यम्- 'कुशीलवकुटुम्बस्य गृहं नेपथ्यमुच्यते।' नट जहाँ विराम काल में रहते हैं उसे नेपथ्यम् कहते हैं।

स्वगतम्- 'अश्राव्यं खलु यद्वस्तु तदिह स्वगतं मतम्।' जो सभी के द्वारा सुनने योग्य नहीं है, उसे स्वगतम् कहते हैं।

प्रकाशम्- 'सर्वश्राव्यं प्रकाश स्यात्।' जो सभी के द्वारा सुनने योग्य हो उसे प्रकाशम् कहते हैं।

## 16.1.2 ) कर्णभार नाटक के पात्रों का परिचय

कर्णभारम् नाटक का वृत्त महाभारत को उपजीव्य मानकर रचा गया है। महाभारत के शान्ति पर्व और सभा पर्व में यह प्रसंग है। कर्ण इन्द्र को कवच कुण्डल प्रदान करता है। और उस इन्द्र से मायावी शक्ति को प्राप्त करता है। वहाँ इस प्रकार वृत्त को वर्णित किया गया है। महाभारत को उपजीव्य मानकर रचना करने के कारण महाभारत के ही कुछ पात्रों को यहाँ स्वीकार किया गया है।

- कर्णः - सूर्यपुत्र कर्ण, अंगदेश का कौरव सेनापति।
- शल्यः - शल्यराज कर्ण का सारथि।
- भटः - सूचक।
- शक्रः - ब्राह्मणरूपधारी इन्द्र।
- देवदूतः - इन्द्र का सन्देशवाहक।



### पाठगत प्रश्न-1

1. महाकवि भास किसलिए प्रसिद्ध हैं?
2. किस काव्य का आश्रय लेकर इस नाटक को रचा?



ध्यान दें:

कर्ण का परिताप



ध्यान दें:

3. नेपथ्यम् क्या है?
4. कर्ण के सारथि का क्या नाम था?
5. इस नाटक में कितने पात्र हैं?

### 16.2 ) नाटक का मूल पाठ

प्रथमोऽङ्कः।

(नान्द्यन्ते ततः प्रविशति सूत्रधारः)

सूत्रधारः -

नरमृगपतिवर्ष्मालोकनभ्रान्तनारी-

नरदनुजसुपर्वव्रातपाताललोकः।

करजकुलिशपालीभिन्नदैत्येन्द्रवक्षाः

सुररिपुबलहन्ता श्रीधरोऽस्तु श्रिये वः॥१॥

व्याख्या

श्लोकअन्वय-नरमृगपतिवर्ष्मालोकन-भ्रान्त-नारी-नर-दनुज-सुपर्व-व्रात-पाताल-लोकः करज-कुलिश-पालीभिन्नदैत्येन्द्रवक्षाः सुररिपुबलहन्ता श्रीधरः वः श्रिये अस्तु॥१॥

**व्याख्या-** मृगों के पति मृगपति सिंह, नरमृगपति नृसिंह, और उसका जो विग्रह हुआ शरीर उसके अलौकिक दर्शन से स्त्री, पुरुष, दानव, देवगण और पातालवासी चकित हुए। हाथ के वज्र समान नखों के अग्रभाग से हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को विदीर्ण किया जिसने वह। दानव सेनाओं के विनाशक भगवान नृसिंह तुम सब नाटक दर्शकों और श्रोताओं के लिए कल्याणकारी हो। मालिनी छन्द॥१॥

**सरलार्थ-** नान्दी पाठ के बाद सूत्रधार मंच पर प्रवेश करके इस श्लोक को कहता है। इस श्लोक में सूत्रधार भगवान नृसिंह की स्तुति करते हुए सभी के मंगलविधान के लिए प्रार्थना करता है। वह कहता है कि जो नृसिंह को देखकर नर नारी राक्षस देव और पाताल लोकवासी आश्चर्यचकित हुए और जिसने वज्र के समान नाखूनों के अग्रभाग से हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को विदीर्ण किया, दानव सेनाओं के विनाशक वह भगवान श्रीधर विष्णु हम सबका मंगल करें ऐसी कामना है।

#### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- दनुजः - असुरा दैत्यदैतेयदनुजेन्द्रारिदानवाः इति।
- सुपर्वा - अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः। सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः इति॥
- रिपुः - रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हदः इति।

### 16.3 ) मूल पाठ

एवमार्यमिश्रान् विज्ञापयामि। (परिक्रम्य, कर्णं दत्त्वा।) अये किं न खलु मयि विज्ञापनव्यग्रे शब्द इव



श्रूयते। अंग! परश्यामि।

(नेपथ्ये)

भो भो! निवेद्यतां निवेद्यतां महाराजायांगेश्वराय।

सूत्रधारः - भवतु। विज्ञातम्।

संग्रामे तुमुले जाते कर्णाय कलितांजलिः।

निवेदयति सम्भ्रान्तो भृत्यो दुर्योधनाज्ञया॥2॥

(निष्क्रान्तः)

**व्याख्या-** इस प्रकार आर्य कुल शील आदि गुणों से युक्त सभ्य मनुष्य, पूजा के योग्य श्रेष्ठ सामाजिकों को सूचित करता हूँ।

**श्लोक अन्वय-** संग्रामे तुमुले जाते सम्भ्रान्तः भृत्यः दुर्योधनाज्ञया कलितांजलि सन् कर्णाय निवेदयति॥2॥

**व्याख्या-** भयंकर युद्ध में उत्पन्न हुए व्याकुल चित्त राज सेवक दुर्योधन की आज्ञा से हाथ जोड़े हुए कर्ण को सूचित करते हैं। इसका अर्थ भयंकर युद्ध होता है। अनुष्टुप् छन्द॥2॥

**सरल अर्थ-** श्लोक कथन के बाद सूत्रधार सभ्य सामाजिक जनों को, दर्शकों को और पूज्यों को कुछ सूचित करना चाहता है। तब उसने कुछ शब्द सुना। वहाँ किसी ने कहा की अंगाधिपति कर्ण से निवेदन करो।

उसे सुनकर सूत्रधार कहता है- ठीक है, अब मैं समझ गया। उसने क्या समझा श्लोक से कहता है- दुर्योधन की आज्ञा से व्याकुलचित्त सेवक हाथों को जोड़कर महाभयंकर युद्ध के विषय में कर्ण को सूचित करते हैं। यह कहकर सूत्रधार मंच से निकल जाता है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परिक्रम्य - परि + क्रम + क्त्वा + ल्यप् प्रत्यय।
- निवेद्यताम् - नि + विद् + भावे या लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- विज्ञातम् - वि + ज्ञा + क्त प्रत्यय
- निवेदयति- नि + विद् + णिच् प्रथम पुरुष एकवचन।
- भृत्यः - भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः इति।



### पाठगत प्रश्न-2

6. सूत्रधार ने मंगल श्लोक से किसको नमस्कार किया है?
7. आर्या: कौन है?
8. सेवक कब क्या कर्ण को सूचित करते हैं?



ध्यान दें:

## कर्ण का परिताप

## 16.4 ) मूल पाठ

## प्रस्तावना

(ततः प्रविशति भटः)।

भटः - भो भो! निवेद्यतां निवेद्यतां महाराजांगेश्वराय युद्धकाल उपस्थित इति।

करितुरगरथस्थैः पार्थकेतोः पुरस्तात्

मुदितनृपतिसिंहैः सिंहनादः कृतोऽद्य।

त्वरितमरिनिनादैर्दुस्सहालोकवीरः

स्मरमधिगतार्थः प्रस्थितो नागकेतुः॥३॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** पार्थकेतोः पुरस्तात् करितुरगरथस्थैः मुदितनृपतिसिंहैः अद्य सिंहनादः कृतः अतः अरिनिनादैः दुःसहालोकवीरः अधिगतार्थः नागकेतुः त्वरितं समरं प्रस्थितः॥३॥

**व्याख्या-** अर्जुन की ध्वजा के आगे हाथी, अश्वों और रथों पर बैठे उन हर्षयुक्त राजाओं ने आज सिंहगर्जना को किया। इसीलिए शत्रु के शब्दों को सहन करने में असमर्थ, असहनशील परक्रमी, अपराजेय शक्ति वाले नागकेतु, हाथी के चिन्ह वाली ध्वजा है जिसकी उस दुर्योधन ने अत्यन्त तेजी से युद्ध स्थल की ओर प्रस्थान किया। मालिनी छन्द॥३॥

**सरलार्थ-** सूत्रधार के जाने के बाद मंच पर भट प्रवेश करता है। प्रवेश करके वह कहता है कि युद्ध का समय आ गया है इस बात को महाराज कर्ण से निवेदित करो। फिर भट कहता है कि युद्ध में दुर्योधन ने अर्जुन को लक्षित कर प्रस्थान किया। किसलिए प्रस्थान किया शायद- अर्जुन के रथ के पास में स्थित राजा हर्ष युक्त होकर युद्ध के लिए महागर्जना करते हैं। शत्रु गर्जन शब्द को सुनकर उसकी गर्जना को सहने में असमर्थ दुर्योधन ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उपस्थितः - उप + स्था + क्त प्रत्यय।
- प्रस्थितः - प्र + स्था + क्त प्रत्यय।
- करीः - मतंगजो गजो नागः कुंजरो वारणः करी इति।
- तुरगः - घोटके वीतितुरगतुरंगाश्वतुरंगमाः इति।
- सिंहः - सिंहो मृगेन्द्रः पंचास्यो हर्यक्षः केसरी इति।

## 16.5 ) मूल पाठ को समझे।

(परिक्रम्य विलोक्य) अये अंगमहाराजः समरपरिच्छदपरिवृतः शल्यराजेन सह स्वभवनान्निष्क्रम्येत एवाभिवर्तते। भोः किं नु खलु युद्धोत्सवप्रमुखस्य दृष्टपराक्रमस्याभूतपूर्वो हृदयपरितापः।

एष हि-

अत्युग्रदीप्तिविशदः समरेऽग्रगण्यः  
शौर्ये च सम्प्रति सशोकमुपैति धीमान्।  
प्राप्ते निदाघसमये घनराशिरुद्धः  
सूर्यः स्वभारुचिमानिव भाति कर्णः॥१४॥  
यावदपसर्पामि।

(निष्क्रान्तः)

व्याख्या

**व्याख्या-** हे अंगेश्वर अधिपति कर्ण युद्ध के वस्त्रों से शोभित अर्थात् युद्धवेशधारी। शल्यराज के साथ अपने घर से निकलकर यहाँ ही आते हैं। हे युद्धरूपी उत्सव में सर्वप्रमुख सेनापति अत्यन्त पराक्रमी कर्ण का यह अभूतपूर्व मानसिक संन्ताप कैसा।

**श्लोक अन्वय-** अत्युग्रदीप्तिविशदः समरे शौर्ये च अग्रगण्यः धीमान् सम्प्रति सशोकम् उपैति। निदाघसमये प्राप्ते घनराशिरुद्धः स्वभारुचिमान् सूर्यः इव अयम् कर्णः भाति॥१४॥

**व्याख्या-** अत्यन्त पराक्रम से युक्त युद्ध में पराक्रमी बुद्धिमान होकर भी शोक से परितप्त हो रहे हैं। सूर्य के समान कर्ण भी शोभित हो रहा है। जैसे ग्रीष्म काल में सहज प्रकाशित सूर्य जैसे मेघों के द्वारा आच्छादित होकर मलिन कान्ति का हो जाता है वैसे यह कर्ण भी युद्धकाल में शोक से मलिन कान्ति के समान प्रभा हीन प्रतीत हो रहा है। वसन्ततिलका छन्द॥१४॥

**सरलार्थ-** फिर भट मंच की परिक्रमा करके दूर कुछ देखकर कहता है- महाराज कर्ण युद्ध के परिधान को धारण कर शल्यराज के साथ अपने भवन से निकलकर युद्ध स्थल को ही आते हैं। यद्यपि वह योद्धाओं में प्रमुख है। फिर भी उनके मन में अभूतपूर्व चिन्ता दिखाई दे रही है। यह अत्यन्त ही आश्चर्यकारक है। ऐसा कहकर कर्ण कहता है-

शोकग्रस्त कर्ण किस प्रकार से दिखाई दे रहा है भट वर्णित करता है- अत्यन्त दीप्तिमान कर्ण, युद्ध और वीरता में अग्रगण्य, बुद्धिमान भी। किन्तु वह अब शोक से आच्छादित है। जैसे ग्रीष्म काल में सूर्य बादलों से ढका हुआ शोभित नहीं होता, वैसे ही स्वभाव से ही दीप्तिमान शूरवीर कर्ण भी युद्ध के समय पर शोक से ग्रस्त होकर शोभित नहीं होता। ऐसा कहकर कर्ण मंच से निकल जाता है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विलोक्य- वि + लोकि + क्त्वा (ल्यप्) प्रत्यय
- हृदयम् - चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हन्मानसं मनः इति।
- समरः - अस्त्रीयां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ इति।
- अपसर्पामि - अप् + सर्प् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- भाति - भा + लट्, प्रथम, पुरुष एकवचन
- निदाघः - ग्रीष्म उष्मकः। निदाघ उष्णोपगम् उष्ण उष्मागमस्तपः इति।



ध्यान दें:

कर्ण का परिताप



ध्यान दें:

16.6 ) मूल पाठ

(ततः प्रविशति यथानिर्दिष्टः कर्णः शल्यश्च।)

कर्णः

मा तावन्मम शरमार्गलक्षभूता

सम्प्राप्ताः क्षितिपतयः सजीवशेषाः।

कर्तव्यं रणशिरसि प्रियं कुरूणां

द्रष्टव्यो यदि स भवेद्धनंजयो मे॥5॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** मम शरमार्गलक्षभूताः क्षितिपतयः तावत् मा सजीवशेषाः सम्प्राप्ताः। (अद्य) यदि सः धनंजयः मे दृष्टव्यः भवेत् (तर्हि मया) रणशिरसि । कुरूणाम् प्रियं कर्तव्यम् ॥5॥

**व्याख्या-** कर्ण के बाणों के मार्ग पर लक्षित राजाओं का जीवन शेष नहीं रहता। आज युद्ध दिवस में यदि वह अर्जुन मुझे दिखाई देगा तो, युद्ध भूमि में दुर्योधन आदि कुरुवंशीयों के इष्ट कार्य को करूंगा। आज युद्ध में मैं अर्जुन को जीतकर कौरवों के प्रिय को सिद्ध करता हूँ। प्रहर्षिणी छन्द॥5॥

**सरलार्थ-** फिर सारथि शल्य के साथ कर्ण प्रवेश करता है। कर्ण अपनी वीरता का स्मरण कर कहता है कि मेरे साथ जिस राजा ने युद्ध किया वे जीवित नहीं हैं, अर्थात् मैंने युद्ध में सभी राजाओं को पराजित किया और मार दिया। यदि आज युद्ध में अर्जुन दिखाई दे तो आज मैं अर्जुन को मार दूंगा, और उससे दुर्योधनादि कुरुवंशीयों का अभीष्ट होगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कर्तव्यम् - कृ + तव्य प्रत्यय
- दृष्टव्यः - दृश् + तव्य प्रत्यय।



पाठगत प्रश्न-3

9. युद्ध के विषय में कर्ण को कौन सूचित करता है?
10. नागकेतु कौन है?
11. सेवक महाराज अंगेश्वर को क्या सूचित करने के लिए आए?

16.7 ) मूल पाठ

शल्यराज! यत्रासावर्जुनस्तत्रैव चोद्यतां मम रथः।

शल्यः- बाठम्। (चोदयति)

कर्णः- अहो नु खलु।

अन्योन्यशस्त्रविनिपातनिकृत्तगात्र-  
योधाश्ववारणरथेषु महाहवेषु।  
बुद्धान्तकप्रतिमविक्रमिणो ममापि  
वैधुर्यमापतति चेतसि युद्धकाले॥6॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** अन्योन्यशस्त्रविनिपातनिकृत्तगात्रयोधाश्ववारणरथेषु महाहवेषु युद्धकाले  
बुद्धान्तकप्रतिमविक्रमिणः मम अपि चेतसि वैधुर्यम् आपतति॥6॥

**व्याख्या-** परस्पर शस्त्रों के प्रहार से वीर योद्धा, घोड़े, हाथी, रथों को घायल करने वाले, युद्ध समय में क्रोधित यम के समान पराक्रमी है जो उस कर्ण के मन में भी दीनता आ जाती है। वसन्ततिलका छन्द।

**सरलार्थ-** फिर अर्जुन को मारने के लिए कर्ण शल्यराज को कहता है की जहाँ अर्जुन है वहाँ मेरे रथ को ले चलो। शल्यराज वैसा ही करता है। तब कर्ण ने युद्ध समय में उपस्थित शल्य को पहले कभी भी अनुभूत न की गई व्याकुलता को सूचित करता है। कर्ण कहता है- जो युद्ध में शस्त्रों के प्रहार से शत्रु पक्षीय योद्धा के शरीर को काटता है, अश्वो, रथों और हाथियों का नाश करता है और जिसका पराक्रम साक्षात् क्रोधित यम के समान है उस जैसे वीर कर्ण के मन में भी युद्ध के समय पर सन्तान होता है। आश्चर्यकारी है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- चोद्यताम् - चुद् + य लोट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- आपतति- आ + पत् लट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- चेतस - चित्तं तु चेतो हृदयं स्वान्तं हन्मानसं मनः इति।

## 16.8 ) मूल पाठ

भोः कष्टम्।

पूर्वं कुन्त्यां समुत्पन्नो राधेय इति विश्रुतः।  
युधिष्ठिरादयस्ते मे यवीयांसस्तु पाण्डवाः॥7॥  
अयं स कालः क्रमलब्धशोभनो  
गुणप्रकर्षो दिवसोऽयमागतः।  
निरर्थमस्त्रं च मया हि शिक्षितं  
पुनश्च मातुर्वचनेन वारितः॥8॥  
भोः शल्यराज! श्रूयतां ममास्त्रस्य वृत्तान्तः।

व्याख्या-

**श्लोक अन्वय-** पूर्वं कुन्त्यां समुत्पन्नः राधेयः इति विश्रुतः, युधिष्ठिरादयः पाण्डवाः मे यवीयांसः॥7॥



ध्यान दें:

कर्ण का परिताप



ध्यान दें:

**व्याख्या-** पहले कुन्ती नाम की नारी से उत्पन्न राधा द्वारा पालित राधेय नाम से लोक में प्रसिद्ध है। युधिष्ठिर आदि पांच पाण्डु पुत्र मेरे अर्थात् कर्ण के छोटे भाई हैं। इस प्रकार जानते हुए भी उनका हनन होगा किस कारण दीनता अभिव्यक्त हो रही है। अनुष्टुप् छन्द।

**श्लोक अन्वय-** गुणप्रकर्षः क्रमलब्धशोभनः सः कालः अयम् दिवसः आगतः, हि मया शिक्षितम् अस्त्रं निरर्थं च। पुनः च मातुः वचनेन वारितः॥४॥

**व्याख्या-** गुणों से अस्त्रादि में निपुण प्रदर्शन के द्वारा अति उत्कृष्ट दिनों से प्राप्त वह सुन्दर समय अर्जुन के साथ युद्ध के लिए है, यह प्रतीक्षित दिन आ गया, किन्तु मेरे (कर्ण) के द्वारा सीखी गई अस्त्र विद्या विफल है। और माता कुन्ती के वचन से पाण्डवों का वध भी निषिद्ध है। वंशस्थ वृत्त।

**सरलार्थ-** अब कर्ण अपने विरह कारण को निरूपित करते हुए कहता है कि मैं ही कुन्ती का ज्येष्ठ पुत्र हूँ, युधिष्ठिर आदि पांच पाण्डव मेरे अनुज हैं। माता के आदेश से मेरे द्वारा पाण्डव वध निषिद्ध है। फिर भी मैं पाण्डवों को मारने के लिए उद्यत हुआ। और मेरे द्वारा बहुत दिनों से प्रतीक्षित वह समय अब आया जब यह प्रमाणित होगा कि मेरे द्वारा अस्त्रविद्या निरर्थक सीखी गई। इस प्रकार कर्ण ने अपने अस्त्र वृत्तान्त को शल्य के लिए सुनाया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- विश्रुतः - वि + श्रु + क्त प्रत्यय
- शिक्षितम् - शिक्ष + क्त प्रत्यय
- कालः - कृतान्तो यमुनाभ्राता शमनो यमराडयमः। कालो दण्डधरः श्राद्धदेवो वैवस्वतोऽन्तकः॥ इति॥



पाठगत प्रश्न-4

12. राधेय कौन है?
13. अस्त्रवृत्तान्त को कर्ण ने किसके लिए सुनाया?



पाठ सार

- नान्दी पाठ के बाद सूत्रधार ने रंगमंच पर आकर नृसिंह रूप धारी विष्णु के वर्णन से मंगल की कामना की है। वैसे ही उसने कहा- जिस विष्णु के नृसिंह रूप को देखकर नर, राक्षस, देवगण और पातालवासी आश्चर्यचकित हुए, और जिसने अपने वज्र के समान नाखूनों से दैत्यराज हिरण्यकशिपु के हृदय को विदीर्ण किया, दानव सेनाओं का विनाशक वह विष्णु तुम सबका मंगल करें। उस समय ही नेपथ्य में शब्द सुनाई देता है- अंगदेशाधिपति महाराज कर्ण को सूचित करते हैं। नेपथ्य शब्द को सुनकर सूत्रधार कहता है- दुर्योधन की आज्ञा से सेवक 'भयंकर युद्ध होगा' कर्ण के लिए सूचना को देता है। सूत्रधार प्रस्थान करता है। फिर भट आकर अंगदेशाधिपति कर्ण को सूचित करना चाहता है की युद्धकाल आ गया है। अर्जुन की ध्वजा के सामने हाथी, घोड़ों के रथों में स्थित सिंह के समान राजाओं ने सिंहनाद को



ध्यान दें:

किया। शत्रु पक्ष के सहन न करने योग्य सिंहनाद को सुनकर दुर्योधन ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया। उसी समय भट को युद्धवेशधारी कर्ण सारथि शल्यराज के साथ अपने घर निकलते हुए दिखाई दिए। किन्तु कर्ण का मन सन्तप्त दिखा। यह देखकर भट ने कहा कि जैसे ग्रीष्मकाल में बादलों से व्याप्त होकर सूर्य की कान्ति मलिन हो जाती है वैसे ही युद्ध और वीरता में अग्रणी बुद्धिमान कर्ण युद्धकाल में शोक से सन्तप्त होकर शोभित नहीं होते हैं। फिर भट प्रस्थान करता है।

- फिर कर्ण ने अपने सारथि शल्यराज के साथ प्रवेश किया। कर्ण कहता है- इस प्रकार कभी नहीं हुआ कि मेरे बाणों का लक्ष्यभूत राजा कभी जीवित बचा हो। आज यदि युद्ध में अर्जुन दिखाई दे तब अर्जुन की हत्या करके कौरवों के अभीष्ट को पूरा करूंगा। हे शल्यराज, मेरे रथ को अर्जुन के पास ले चलो। फिर कर्ण मन में सोचता है कि जिसकी अतुल्य शक्ति की तुलना कुद्ध यमराज के साथ होती है, और जो युद्ध में शस्त्रप्रहार से योद्धाओं, अश्वों, हाथियों और रथों को विदीर्ण करता है, उस कर्ण के मन में युद्ध के समय पर किसलिए इस प्रकार डर का भाव उत्पन्न हुआ। और पुनः मन में कहता है- पूर्व में मैं कुन्ती से उत्पन्न राधेय इस नाम से प्रसिद्ध हुआ। युधिष्ठिर आदि भाई मेरे छोटे भाई हैं। और अब वह समय आया जिसकी मुझे प्रतीक्षा थी, परन्तु मेरे द्वारा जो अस्त्र विद्या सीखी गई वह बेकार है और कुन्ती के आदेश से पाण्डव वध निषिद्ध है। इस प्रकार कहकर शल्यराज को लक्षित कर उस अस्त्रवृत्तान्त को सुनाया।

### आपने क्या सीखा

- नान्दी, सूत्रधार, प्रस्तावना, नेपथ्यम् इत्यादि नाटक में अधिकता से प्रयुक्त शब्दों का परिचय प्रारम्भ में दिया गया है।
- कर्णभार नाटक की कुछ विशेषताओं की आलोचना की गई है। फिर नाटक के मूल पाठ को उद्धृत करके व्याख्या को किया। वहीं कथासार नीचे दिया गया है।



### पाठान्त प्रश्न

1. नान्दी के लक्षण को विवेचित कीजिए।
2. प्रस्तावना को लक्षण सहित प्रतिपादित कीजिए।
3. भास के पांच नाटकों के नाम लिखिए।
4. सूत्रधार कौन है? लक्षण सहित प्रतिपादित कीजिए।
5. नागकेतु कौन और किसलिए कहा गया?
6. शोक सन्तप्त कर्ण को कवि ने किससे उपमित किया है?
7. कर्ण के हृदय परिताप का क्या कारण है?

कर्ण का परिताप



पाठगत प्रश्नों के उत्तर



ध्यान दें:

उत्तर-1

1. नाटक की रचना के लिए प्रसिद्ध
2. महाभारत
3. कुशीलवकुटुम्ब के घर को नेपथ्य कहते हैं
4. शल्य
5. पांच

उत्तर-2

6. भगवान नृसिंह को
7. कुल, शील आदि गुणों से युक्त सामाजिक जन
8. संग्राम के भयंकर होने पर कर्ण को सूचित करता है की भयंकर युद्ध हो रहा है

उत्तर-3

9. सेवक
10. दुर्योधन
11. अर्जुन के रथ के पास में राजा उल्लासित हैं। दुर्योधन ने अर्जुन को लक्ष्य कर प्रस्थान किया।

उत्तर-4

12. कर्ण
13. शल्य के लिए



## अस्त्र का वृत्तान्त



ध्यान दें:

पूर्व पाठ में नाटक के पारिभाषिक शब्दों को जानना। उसमें नान्दी सूत्रधार नेपथ्यं स्वगतं प्रकाशम् कुछ प्रसिद्ध शब्दों को जानना। युद्ध की वार्ता को जानकर कर्ण ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया। माता कुन्ती के वचनों से बंधा हुआ, गुरु द्वारा शापित कर्ण अपने दुःख को सहने में असमर्थ शल्यराज के लिए कहता है। वहाँ गुरु ने किस कारण से कर्ण को श्राप दिया, कर्ण स्वयं अपने मुख से शल्य से कहता है। इसलिए ही यह कथा अस्त्र का वृत्तान्त कहा जाता है।



### उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- कर्ण का गुरु के समीप जाना;
- कर्ण ने असत्य कहकर कैसे गुरु से अस्त्रविद्या को अर्जित किया इस विषय के जान पाने में;
- कर्ण के गुरु ने कर्ण के झूठ को जानकर कर्ण को क्या श्राप दिया जानने में;
- कुछ कृदन्त रूपों में प्रकृति प्रत्यय का निर्णय कर सकने में;
- कुछ शब्दों के अमर कोश में समानार्थी शब्दों को जानने में;

### 17.1 ) मूल पाठ

शल्यः- ममाप्यस्ति कौतूहलमेनं वृत्तान्तं श्रोतुम्।

कर्णः- पूर्वमेवाहं जामदग्यस्य सकाशं गतवानस्मि।

शल्यः- ततस्ततः

कर्णः- ततः

## अस्त्र का वृत्तान्त



ध्यान दें:

विद्युल्लताकपिलतुंगजटाकलाप-  
मुद्यत्प्रभावलयिनं परशुं दधानम्।  
क्षत्रान्तकं मुनिवरं भृगुवंशकेतुं  
गत्वा प्रणम्य निकटे निभृतः स्थितोऽस्मि॥१॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** विद्युल्लताकपिलतुंगजटाकलापम् उद्यत्प्रभावलयिनं परशुं दधानं क्षत्रान्तकम् भृगुवंशकेतुं मुनिवरं गत्वा प्रणम्य निकटे निभृतः स्थितः अस्मि॥१॥

**व्याख्या-** विद्युत की लता के समान पीली और लम्बी जटा के समूह जिसके हैं वह। प्रभा की परिधि से घिरे हुए, परशु को धारण करने वाले क्षत्रियों के विनाशक भृगु वंश केतु और मुनियों में श्रेष्ठ के पास जाकर और प्रणाम करके चुपचाप एक तरफ खड़ा हो गया। वसन्ततिलका छन्द॥१॥

**सरलार्थ-** शल्य तब कहता है की उसको भी अस्त्र कथा को सुनने के लिए बहुत कौतुहल है। कर्ण कहता है कि वह पहले परशुराम के पास गया। विद्युत लता के समान कपिल वर्ण वाली महान जटा को धारण किए, और हाथ में उज्ज्वल धार वाले परशु को धारण किए, उस क्षत्रिय विनाशक भृगु श्रेष्ठ तपस्वी के पास जाकर और प्रणाम कर वह कर्ण उनके पास मौन स्थित हो गया।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- गत्वा - गम् + क्त्वा प्रत्यय।
- प्रणम्य - प्र + नम् + क्त्वा ल्यप् प्रत्यय।
- विद्युत् - तडित्सौदामिनी विद्युच्चंचला चपला अपि।

## 17.2 ) मूल पाठ

**शल्यः-** ततस्ततः।

**कर्णः-** ततो जामदग्न्येन ममाशीर्वचनं दत्त्वा पृष्टोऽस्मि। को भवान् किमर्थमिहागत इति।

**शल्यः-** ततस्ततः।

**कर्णः-** ततः भगवन्! अखिलान्यस्त्राण्युपशिक्षितुमिच्छामीत्युक्तवानस्मि।

**शल्यः-** ततस्ततः।

**कर्णः-** तत उक्तोऽहं भगवता ब्राह्मणेषूपदेशं करिष्यामि न क्षत्रियाणमिति।

**शल्यः-** अस्ति खलु भगवतः क्षत्रियवंशैः पूर्ववैरम् ततस्ततः।

**कर्णः-** ततो नाहं क्षत्रिय इत्यस्त्रोपदेशं ग्रहीतुमारब्धं मया।

**शल्यः-** ततस्ततः।

**कर्णः-** ततः कतिपयकालातिक्रमे कदाचित् फलमूलसमित्कुशकुसुमाहरणाय गतवता गुरुणा सहानुगतोऽस्मि।

**शल्यः-** ततस्ततः।



ध्यान दें:

**कर्णः-** ततः स गुरुर्वनभ्रमणपरिश्रमान्मदंके निद्रावशमुपगतः।

**शल्यः-** ततस्ततः

**कर्णः-** ततः

कृत्ते वज्रमुखेन नाम कृमिणा दैवान्ममोरुद्वये

निद्राच्छेदभयादसह्यत गुरोधैर्यात् तदा वेदना।

उत्थाय क्षतजाप्लुतः स सहसा रोषानलोद्दीपितो

बुद्ध्वा मां च शशाप कालविफलान्यस्त्राणि ते सन्तिवति॥10॥

**व्याख्या-** कुछ समय के बाद फल, मूल, समिधा, कुश, कुसुम लाने के लिए। वन में भ्रमण करने के परिश्रम से।

**श्लोक अन्वय-** दैवात् वज्रमुखेन कृमिणा मम ऊरुद्वये कृत्ते सति तदा गुरोः निद्राच्छेदभयात् धैर्यात् वेदना असह्यत। ततः क्षतजाप्लुतः सः उत्थाय सहसा रोषानलोद्दीपितः मां बुद्ध्वा ते अस्त्राणि कालविफलानि सन्तु इति मां शशाप॥10॥

**व्याख्या-** अभाग्य से वज्रमुख कीड़े ने मेरी जंघा पर काट लिया उस समय गुरु परशुराम के नींद भंग के भय से धैर्य से उस वेदना को सहन किया। फिर रक्त से गीले हुए महर्षि ने नींद से उठकर क्रोधित होकर कर्ण को क्षत्रिय जानकर समय आने पर कर्ण के अस्त्र निष्फल हों इस प्रकार का श्राप दिया। इस कारण से कर्ण उन्हें भूल गया। शार्दूलविक्रीडितं छन्द॥10॥

**सरल अर्थ-** कर्ण को मौन स्थित देखकर परशुराम ने आशीर्वाद देकर किसलिए वह आया यह पूछा। कर्ण ने तब निवेदन किया कि मैं अखिल अस्त्र शस्त्रों को सीखने के लिए इच्छा करता हूँ। तब परशुराम ने कहा कि ब्राह्मणों को शिक्षित करता हूँ, क्षत्रियों को नहीं। क्योंकि क्षत्रियों के साथ उनके पूर्व वैर है। तब मैं क्षत्रिय नहीं हूँ, मैं ब्राह्मण हूँ इस प्रकार के मिथ्या वचनों को कहकर कर्ण ने अस्त्र विद्या को सीखना आरम्भ किया। फिर एक दिन फल, फूल, कुश, कुसुम आदि को लाने के लिए गुरु परशुराम के साथ गया। गुरु वन में भ्रमण करने के परिश्रम से कर्ण की गोद में सो गए। अभाग्य वश वज्रमुख नामक एक कीड़े ने उसकी जंघा पर काट लिया। किन्तु गुरु की नींद में विघ्न होगा ऐसा विचार कर उसने कीड़े के काटने की पीड़ा को सहा। किन्तु रक्त से गीले हुए गुरु निद्रा से उठकर सब जानकर क्रोधित होकर श्राप दे दिया कि युद्ध काल में तुम्हारे अस्त्र विफल होंगे।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उपशिक्षितुम् - उप + शिक्ष + तुमुन् प्रत्यय
- ग्रहीतुम् - ग्रह + तुमुन् प्रत्यय।
- असह्यत - सह + कर्मणि, लङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- उत्थाय - उत + स्था + क्त्वा, ल्यप् प्रत्यय।
- शशाप - शप् + लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- सहसा - अतर्किते तु सहसा स्यात् इति।
- वेदना - आक्रोशनमभीषंग संवेदो वेदना न ना इति।

## अस्त्र का वृत्तान्त



ध्यान दें:



## पाठगत प्रश्न-1

1. कर्ण की माता कौन है?
2. कर्ण अस्त्र शिक्षा के लिए किसके समीप गया?
3. जामदग्न्य किसे अस्त्र शिक्षा का उपदेश देते हैं?
4. किस नाम के कीड़े ने कर्ण की जंघा पर काटा?
5. परशुराम ने कर्ण को क्या श्राप दिया?

## 17.3 ) मूल पाठ

**शल्यः-** अहो कष्टमभिहितं तत्रभवता।

**कर्णः-** परीक्षामहे तावदस्त्रस्य वृत्तान्तम्। तथा कृत्वा एतान्यस्त्राणि निर्वीर्याणीव लक्ष्यन्ते। अपि च-

इमे हि दैन्येन निमीलितेक्षणा

मुहुः स्वलन्तो विवशास्तुरंगमाः।

गजाश्च सप्तच्छददानगन्धिनो

निवेदयन्तीव रणे निवर्तनम्॥11॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** हि दैन्येन निमीलितेक्षणाः मुहुः स्वलन्तः विवशाः इमे तुरंगमाः सप्तच्छदादगन्धि नः गजाः च रणे निवर्तनं निवेदयन्ति इव॥11॥

**व्याख्या-** दीन भाव से आपन्न घोड़े अपनी आंखों को बन्द करके बार-बार गिर रहे हैं, सप्तपर्ण की गन्ध से युक्त हाथी युद्ध से लौटने का निवेदन कर रहे हैं। युद्ध की ओर जाते हुए घोड़े और हाथी मुझे युद्ध से निकलने के लिए सूचित करते हैं अर्थात् नहीं जाना चाहिए। वंशस्थ छन्द॥11॥

**सरलार्थ-** इस कथा को सुनकर शल्यराज को दुःख हुआ। कर्ण अस्त्र की कथा सत्य है अथवा नहीं परीक्षा के लिए उद्यत हुआ। उसने देखा कि अस्त्र सामर्थ्य रहित ही दिखाई दे रहे हैं। अश्व ले चलने की मुद्रा में हैं, भागने के लिए उनमें उत्साह नहीं है, इसलिए वे स्वलित हो रहे हैं। और हाथी भी दुर्गन्ध युक्त मद को गिराकर युद्ध से निकलने की इच्छा करते हैं।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कष्टम् - स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलम् इति।
- वृत्तान्तः - वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात् इति।

## 17.4 ) मूल पाठ

**कर्णः-** शंखदुन्दुभयश्च निःशब्दाः।

**शल्यः-** भो कष्टं किं नु खल्विदम्।

**कर्णः-** शल्यराज! अलमलं विषादेन।

हतोऽपि लभते स्वर्गं जित्वा तु लभते यशः।  
उभे बहुमते लोके नास्ति निष्फलता रणे॥12॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** रणे वीरः हतः अपि स्वर्गं लभते, जित्वा यशः लभते, लोके उभे बहुमते। रणे निष्फलता नास्ति॥12॥

**व्याख्या-** युद्ध में वीर योद्धा को मृत्यु प्राप्त हो तो भी स्वर्ग लोक को प्राप्त करता है और जीतकर यश को प्राप्त करता है। संसार में वीरों के लिए दोनों ही अभीष्ट हैं। अतः युद्ध करने में निष्फलता नहीं है दोनों में लाभ ही है। अनुष्टुप् छन्द॥12॥

**सरलार्थ-** कर्ण युद्ध में अपने अशुभ लक्षणों को देखकर कहता है - दुन्दुभि शब्द भी सुनाई नहीं दे रहे हैं। शल्यराज कष्ट को प्रकट करता है। कर्ण उसे सांत्वना देता है और कहता है- विषाद मत करो। फिर कर्ण युद्ध में अशुभ लक्षणों की गणना माननीय नहीं है युद्ध में वीरों के लिए जय और पराजय दोनों ही सफलता को प्रदर्शित करती हैं। युद्ध में पराजय हो तो स्वर्ग प्राप्त होता है और यदि विजय हो तो यश प्राप्त होता है। इसलिए युद्ध करने में निष्फलता नहीं है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वाच्यान्तरम् - हतः अपि स्वर्गं लभते कर्तरि। हतेन अपि स्वर्गः लभ्यते कर्मणि।
- रणे निष्फलता न अस्ति कर्तरि- रणे निष्फलतया न भूयते।

### 17.5 ) मूल पाठ

**कर्णः-** अपि च

इमे हि युद्धेष्वनिवर्तिताशा

हया सुपर्णेन समानवेगाः।

श्रीमत्सु काम्बोजकुलेषु जाता

रक्षन्तु मां यद्यपि रक्षितव्यम्॥13॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** हि युद्धेषु अनिवर्तिताशाः सुपर्णेन समानवेगाः श्रीमत्सु काम्बोजकुलेषु जाताः इमे हयाः यद्यपि मया रक्षितव्यम् तथापि ते इदानीं मां रक्षन्तु॥13॥

**व्याख्या-** संग्राम में जो सफलता की आशा को नहीं त्यागते वे गरुड़ के समान वेगी, काम्बोज कुल में उत्पन्न होने के कारण संसार में काबुली नाम से प्रसिद्ध हुए कल तक वे घोड़े मेरे द्वारा रक्षित थे फिर भी अब युद्ध काल में वे मेरी रक्षा करें। उपजाति छन्द॥13॥

**सरलार्थ-** अब अपने शुभ लक्षणों की प्रशंसा करता हुआ कर्ण कहता है- ये घोड़े युद्ध में आशा को नहीं त्यागते, ये गरुड़ के समान द्रुतवेगी काम्बोज देश में उत्पन्न हुए। यद्यपि ये घोड़े कर्ण के द्वारा रक्षणीय हैं, फिर भी अब वे युद्ध में कर्ण की रक्षा करें ऐसी कर्ण की प्रार्थना है।



ध्यान दें:

## अस्त्र का वृतान्त



ध्यान दें:

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- रक्षितव्यम् - रक्ष् + तव्य प्रत्यय।
- सुपर्णः - नागान्तको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः इति।

## 17.6 ) मूल पाठ

**कर्णः-** अक्षयोऽस्तु गोब्राह्मणानाम्। अक्षयोस्तु पतिव्रतानाम्। अक्षयोऽस्तु रणेष्वापरागुखानां योधपुरुषाणाम्। अक्षयोऽस्तु मम प्राप्तकालस्य। एष भोः प्रसन्नोऽस्मि।

समरमुखमसह्यं पाण्डवानां प्रविश्य  
प्रथितगुणगणाढ्यं धर्मराजं च बद्ध्वा।  
मम शरवरेगैरर्जुनं पातयित्वा  
वनमिव हतसिंहं सुप्रवेशं करोमि॥14॥  
शल्यराज! यावद्रथमारोहावः।

**शल्यः-** बाढम्।

(उभौ रथारोहणं नाटयतः)

**कर्णः-** शल्यराज! यत्रासावर्जुनस्तत्रैव चोद्यतां मम रथः।

**व्याख्या-** गो ब्राह्मणों का कल्याण हो, पतिव्रता स्त्रियों का कल्याण हो, युद्ध में पीठ दिखाकर न भागने वाले योद्धा का, सुअवसर प्राप्त किए हुए मुझ कर्ण का भी कल्याण हो।

**श्लोक अन्वय-** पाण्डवानाम् असह्यं समरमुखं प्रविश्य प्रथितगुणगणाढ्यं धर्मराजं बद्ध्वा च मम शरवरेगैः अर्जुनं पातयित्वा हतसिंहं वनम् इव सुप्रवेशं करोमि॥14॥

**व्याख्या-** पाण्डव पुत्रों सहन करने में अशक्य युद्ध में प्रवेश करके प्रसिद्ध गुणों से सम्पन्न धर्मराज युधिष्ठिर को बांध कर और मेरे बाणों की वर्षा से उस अर्जुन को मारकर, जिस वन में सिंह को मार दिया हो जैसे वह वन सुगमता से प्रवेश योग्य होता है उसी प्रकार युद्ध स्थल को करता हूँ। मालिनी छन्द॥14॥

**सरलार्थ-** अपने शुभ को सोचते हुए सभी का कल्याण हो ऐसी कर्ण ने प्रार्थना की। उसने कहा- गो ब्राह्मणों का, सती स्त्रियों का, युद्ध में पीठ न दिखाने वाले योद्धाओं का और मुझ कर्ण का कल्याण हो। अब प्रसन्न होकर कर्ण ने शल्य से उसकी चिकीर्षा को कहता है कि पाण्डवों के युद्ध स्थल को प्रवेश कर प्रख्यात गुणशाली धर्मराज युधिष्ठिर को बांधकर अर्जुन को बाणों की वर्षा से मार दूंगा। और जैसे वन में यदि सिंह मर जाए तो वह वन सभी के लिए निडरता से प्रवेश योग्य होता है, उसी प्रकार पाण्डवों का युद्ध स्थल सभी के लिए प्रवेश योग्य होगा।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- प्रविश्य - प्र + विष् + क्त्वा ल्यप् प्रत्यय
- पातयित्वा - पा + णिच् + क्त्वा प्रत्यय।
- वनम् - अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् इति।



## पाठगत प्रश्न-2

6. युद्ध में किसलिए जय और पराजय में विफलता नहीं है?
7. कर्ण के घोड़े किस देश में उत्पन्न हुए?
8. पाण्डवों में कर्ण किसे मारना चाहता है?



## पाठ सार

- इस पाठ में मुख्य विषय है कर्ण का अस्त्र विद्या की प्राप्ति के लिए जाना। गुरु के पास विद्या की प्राप्ति। और गुरु का श्राप। यह अस्त्र कथा ही कर्ण अपने मुख से शल्यराज को सुनाता है। संक्षेप में वह नीचे वर्णित है।
- कर्ण अस्त्रवृत्तान्त को कहता है-
- पहले कर्ण परशुराम के पास जाकर प्रणाम करके पास में मौन खड़ा हो गया। फिर परशुराम ने पूछा- आप किसलिए यहाँ आए हो। फिर कर्ण ने निवेदन किया कि अखिल अस्त्र विद्या को सीखने के लिए मैं यहाँ आया। फिर परशुराम ने कहा कि ब्राह्मणों को शिक्षित करता हूँ, क्षत्रियों को नहीं। फिर मैं क्षत्रिय नहीं हूँ इस प्रकार कहकर कर्ण ने अस्त्र विद्या को सीखना आरम्भ किया। फिर एक दिन फल, फूल, कुश, कुसुम आदि को लाने के लिए गुरु परशुराम के साथ गया। गुरु वन में भ्रमण करने के परिश्रम से कर्ण की गोद में सो गए। अभाग्य वश बज्रमुख नामक एक कीड़े ने उसकी जंघा पर काट लिया। किन्तु गुरु की नींद में विघ्न होगा ऐसा विचारकर उसने कीड़े के काटने की पीड़ा को सहा। किन्तु रक्त से गीले हुए गुरु निद्रा से उठकर सब जानकर क्रोधित होकर श्राप दे दिया कि युद्ध काल में तुम्हारे अस्त्र विफल होंगे।
- इसी प्रकार अस्त्र वृत्तान्त को कहकर कथा के परीक्षण के लिए कर्ण उद्यत हुआ। वह कहता है कि अस्त्र सामर्थ्य हीन दिखाई दे रहे हैं, अश्व भी दीनता से आंखों को झपक रहे हैं, और हाथी दुर्गन्धपूर्ण मदधारा से युक्त होकर युद्ध से निकलने के लिए सूचित करते हैं। शंखनाद भी सुनाई नहीं दे रहे हैं। किन्तु विषाद मत करो। युद्ध में मृत्यु हुई तो स्वर्ग की प्राप्ति, यदि विजय हुई तो यश प्राप्त होता है, इसलिए युद्ध में निष्फलता नहीं है। और युद्ध में आशा को न त्यागने वाले मेरे द्वारा रक्षणीय गरुड़ के समान वेग वाले अश्व मेरी रक्षा करें। इस प्रकार विचार कर कर्ण का मन प्रसन्न हुआ। प्रसन्न होकर वह कहता है कि पाण्डव सेनाओं के अग्रभाग में प्रवेश करके धर्मराज युधिष्ठिर को बांध कर बाणों से अर्जुन को मार दूंगा। और उससे मरे हुए सिंह के वन के समान युद्धक्षेत्र सभी के लिए प्रवेश योग्य होगा।
- ऐसा विचार कर रथ पर चढ़कर अर्जुन के पास अपने रथ को ले चलो। कर्ण ने शल्यराज को निर्देश दिया।



ध्यान दें:

## अस्त्र का वृत्तान्त



ध्यान दें:

## आपने क्या सीखा

- कर्ण का गुरु के समीप शिक्षा ग्रहण करना
- कर्ण के मिथ्या ब्राह्मण होने पर परशुराम द्वारा श्राप
- कृदन्त रूपों में प्रकृति प्रत्यय



## पाठान्त प्रश्न

1. कर्ण के द्वारा किये गए परशुराम के वर्णन को बताओ?
2. युद्ध में कर्ण के अशुभ लक्षणों को वर्णित कीजिए?
3. कर्ण की श्राप कथा को सविस्तार लिखिए?
4. कर्ण के घोड़ों की विशेषताओं को बताइए?



## पाठगत प्रश्नों के उत्तर

## उत्तर-1

1. कुन्ती
2. जामदग्न्य परशुराम
3. ब्राह्मणों के लिए
4. वज्रमुख
5. समय आने पर वे अस्त्र विफल हो जाएंगे।

## उत्तर-2

6. युद्ध में मृत्यु हुई तो स्वर्ग प्राप्ति और विजय हुई तो यश प्राप्ति।
7. काम्बोज देश में
8. अर्जुन को





ध्यान दें:

## 18

## कवच कुण्डल का दान

पूर्व पाठ में विषय था कि कर्ण अस्त्रों को प्राप्त करने के लिए परशुराम के पास जाता है। यद्यपि उसने अस्त्र विद्या को प्राप्त किया फिर भी गुरु के श्राप को भी प्राप्त किया। इसलिए यह दुःख उसके मन में ही है। फिर भी उसके पास में कवच कुण्डल है। इसलिए वह भी अजेय है। किन्तु कर्ण दानवीर है ऐसा भारत के इतिहास में सुप्रसिद्ध है। वह अपने प्राणभय को जानते हुए भी छद्म वेशधारी भिक्षु के लिए कवच कुण्डल दे देता है। कवि कर्ण के मनोभावों को संतुलित शैली में प्रकट करता है।



इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- इन्द्र के छल को जानने में;
- कर्ण की दान में उदारता को जानने में;
- कवि भास के कवित्व का परिचय प्राप्त करने में;
- नाटक में एक अंक का प्रसंग संस्कृत परम्परा में कैसे उत्पन्न हुआ जानने में;
- विभिन्न शब्दों का प्रयोग कर पाने में;
- व्याकरण विषयों को जानने में;
- यहाँ आए शब्दों को जानकर संस्कृत में लिखने में, बोलने में और उन शब्दों को प्रयोग कर सकने में;

## 18.1) मूल पाठ

(नेपथ्ये)

भो कर्ण! महत्तरं भिक्खं याचेमि। (भो: कर्ण! महत्तरां भिक्षां याचे)।

## कवच कुण्डल का दान



ध्यान दें:

कर्णः- ( आकर्ण्य ) अये वीर्यवान् शब्दः।  
श्रीमानेष न केवलं द्विजवरो यस्मात् प्रभावो महा-  
नकर्ण्य स्वरमस्य धीरनिन्दं चित्रार्नितांगा इव।  
उत्कर्णस्तिमितांचिताक्षवलितग्रीवार्पिताग्रानना-  
स्तिष्ठन्त्यस्ववशांगयष्टि सहसा यान्तो ममैते हयाः॥15॥  
आहूयतां स विप्रः। न। अहमेवाह्वयामि। भगवन्ति इतः।  
व्याख्या-

**श्लोक अन्वय-** एष केवलं द्विजवरः न अपि तु श्रीमान्, यस्मात् महान् प्रभावः, धीरनिन्दं स्वरमाकर्ण्य मम एते हयाः उत्कर्णस्तिमितांचिताक्षवलितग्रीवार्पिताग्राननाः अस्ववशांगयष्टि सहसा यान्तः चित्रार्पिता इव तिष्ठन्ति॥15॥

**व्याख्या-** गम्भीर शब्द को सुनकर यह याचक केवल ब्राह्मणों में श्रेष्ठ नहीं अपितु विशिष्ट शोभा से युक्त है। जिस कारण से उसका महान प्रभाव दिखाई दे रहा है। किसका वह प्रभाव है? जिसके गम्भीर शब्द घोष को सुनकर मेरे चलते हुए घोड़े उत्सुकता से निर्निमेष दृष्टि से गर्दन को टेढ़ी करके उसकी ओर देखते हुए यकायक रूक गए जैसे उनका अपने शरीर पर वश न हो। उनका शरीर चित्र लिखित के समान स्थिर है। याचक के इस प्रभाव से ही मेरे अश्व चित्र के समान निश्चल हुए। शार्दूलविक्रीडित छन्द॥15॥

**सरलार्थ-** इस प्रकार कहकर युद्ध स्थल पर जाने के लिए कर्ण ने शल्य के साथ रथारोहण किया। फिर कर्ण ने शल्य को आदेश दिया। कि जहाँ अर्जुन है वहाँ ही मेरे रथ को ले चलो। उसी समय कर्ण के रास्ते में 'महत्तरां भिक्षां याचे' भिक्षु के द्वारा कहे हुए गम्भीर शब्द को सुनकर कहा- यह कण्ठ स्वर बुद्धिमान और वीर्यवान ब्राह्मण का है, क्योंकि गम्भीर शब्दों को सुनकर मेरे घोड़े उत्सुक होकर सुन्दर नेत्रों से उत्सुकता से निर्निमेष होकर चित्र के समान स्थिर हो गए। उनके अंग अपने वश में नहीं हैं। इस प्रकार कहकर उसने शल्य से कहा जैसे शल्य ब्राह्मण को बुलाता है, परन्तु उसने उसे रोककर स्वयं ही ब्राह्मण को बुलाया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- आकर्ण्य - आ + कर्ण + क्त्वा ल्यप् प्रत्यय।
- यान्तः - या + षत् प्रत्यय पुल्लिङ्ग प्रथमा विभक्ति बहुवचन।
- वाच्यान्तरम् - आहूयतां स विप्रः - भवान् तं विप्रम् आह्वयतु।

### 18.2 ) मूल पाठ को समझे।

( ततः प्रविशति ब्राह्मणरूपेण शक्रः )

शक्रः- भो मेघाः, सूर्येणैव निवर्त्य गच्छन्तु भवन्तः। ( कर्णमुपगम्य )

भो कर्ण! महत्तरं भिक्खं याचेमि। ( भोः कर्ण! महत्तरां भिक्षां याचे। )

कर्णः दृढं प्रीतोऽस्मि भगवन्!

यातः कृतार्थगणनामहमद्य लोके

राजेन्द्रमौलिमणिरंजितपादप 9:।  
विप्रेन्द्रपादरजसा तु पवित्रमौलिः  
कर्णो भवन्तमहमेष नमस्करोमि॥16॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** अद्य लोके राजेन्द्रमौलिमणिरंजितपादपद्मः कृतार्थगणनां यातः तु विप्रेन्द्रपादरजसा पवित्रमौलिः एषः अहम् कर्णः भवन्तं नमस्करोमि॥16॥

**व्याख्या-** संसार में अनेक प्रतापी राजाओं के मुकुट मणि से जिसके चरण कमल सुशोभित होते हैं, वह कर्ण आज ब्राह्मण श्रेष्ठ के चरणों की धूलि से पवित्र मस्तक वाला कृतार्थ होकर आपको नमस्कार करता है। वसन्ततिलका छन्द।

**सरलार्थ-** कर्ण के बुलाने से ब्राह्मणरूपधारी ने मंच पर प्रवेश कर मेघों को लक्ष्य कर कहा की हे मेघ आप सूर्य के साथ ही प्रस्थान करो। फिर उसने कर्ण के पास आकर कहा- हे कर्ण, बहुत बड़ी भिक्षा मांग रहा हूँ। ब्राह्मण को देखकर आनन्दित हुए कर्ण उसके आशीर्वाद के लाभ के लिए उसे नमस्कार करता है और कहता है- राज श्रेष्ठों के मुकुट मणियों से मेरे चरण कमल शोभित होते हैं। संसार में कृतार्थों में से मैं एक ब्राह्मण श्रेष्ठ के चरणों की धूलि से पवित्र मस्तक वाला मैं कर्ण आज आपको नमस्कार करता हूँ।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उपगम्य - उप + गम् + क्त्वा ल्यप् प्रत्यय।
- पद्म - वा पुंसि पद्मं नलिनमरविन्दं महोत्पलम्। सहस्रपत्रं कमलं शतपत्रं कुशेशयम्। इति।
- रजः - रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धुलिः पांसुर्ना न द्वयो रजः इति।

### 18.3 ) मूल पाठ

**शक्रः-** (आत्मगतम्) किं नु खलु मया वक्तव्यं, यदि दीर्घायुर्भवेति वक्ष्ये दीर्घायुर्भविष्यति। यदि न वक्ष्ये मूढ इति मां परिभवति। तस्मादुभयं परिहृत्य किं नु खलु वक्ष्यामि। भवतु दृष्टम्। (प्रकाशम्) भो कर्ण! सुय्ये विअ, चन्दे विअ, हिमवन्ते विअ, सागले विअ, चिट्टदु दे जसो। (भो कर्ण! सूर्य इव, चन्द्र इव, हिमवान् इव, सागर इव तिष्ठतु ते यशः।)

**कर्णः-** भगवन्! किं न वक्तव्यं दीर्घायुर्भवेति। अथवा एतदेव शोभनम्। कुतः-

धर्मो हि यत्नैः पुरुषेण साध्यो

भुजंगजिह्वाचपला नृपाश्रियः।

तस्मात् प्रजापालनमात्रबुद्ध्या

हतेषु देहेषु गुणा धरन्ते॥17॥

भगवन् किमिच्छसि। किमहं ददामि।

**व्याख्या-** मनुष्यों में केवल धर्म ही शास्त्रोक्त विधि निषेध आदि प्रयत्न से साध्य है। राजाओं की राजलक्ष्मी सर्प की जिह्वा के समान चंचल है, इसलिए शरीर के नाश होने पर भी बुद्धि से प्रजा का

### कवच कुण्डल का दान



ध्यान दें:

कवच कुण्डल  
का दान



ध्यान दें:

संरक्षण करने से उसके गुण दया, दक्षिणा आदि रहते हैं। उपजाति छन्द॥17॥

**श्लोक अन्वय-** हि पुरुषेण धर्मः यत्नैः साध्यः, नृपश्रियः भुजंगजिह्वाचपलाः, तस्मात् देहेषु नष्टेषु प्रजापालनमात्रबुद्ध्या गुणाः धरन्ते॥17॥

व्याख्या-

**सरलार्थ-** कर्ण के वचनों को सुनकर इन्द्र ने आत्मगत रूप से कहा कि यदि आशीर्वाद रूप में दीर्घायु हो ऐसा कहूंगा तब वह दीर्घायु होगा। किन्तु नहीं कहूंगा तो मूर्ख है ऐसा विचार कर मेरा उपहास करेगा। इसलिए दोनों को ही छोड़ देना चाहिए। फिर वह प्रकाश में कहता है - हे कर्ण सूर्य के समान, चन्द्र के समान, पर्वत के समान, सागर के समान आपका यश चिरकाल तक रहे। साधारणतया आशीर्वाद रूप में सब दीर्घायु की प्रार्थना करते हैं, किन्तु इस ब्राह्मण ने वैसा नहीं कहा। इसलिए यह सुनकर कर्ण ने कहा- हे ब्राह्मण दीर्घायु हो ऐसा क्यों नहीं कहा? अथवा दीर्घायु की अपेक्षा यह आशीर्वाद ही सुन्दर है। किसलिए- धर्म को परम यत्न से उद्योग से करना चाहिए, धन लक्ष्मी सर्प की जिह्वा के समान चंचल है, इसलिए प्रजापालन के लिए केवल बुद्धि से कार्य का सम्पादन करना चाहिए। शरीर के नष्ट होने के बाद गुण ही रहते हैं, अर्थात् गुणों से ही मनुष्य दीर्घ जीवी होता है, न कि अर्थ से अथवा न ही शरीर का आश्रय लेकर दीर्घकाल तक जीवित रहते हैं। फिर उस ब्राह्मण से कर्ण ने पूछा क्या चाहते हैं।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- यशः - यशः कीर्ति समज्ञा च इति।
- भुजंगः - सर्पः पृदाकुर्भुजगो भुजंगोऽहिर्भुजंगमः॥
- वाच्यान्तरम् - धर्मः हि यत्नैः पुरुषेण साध्यः।



**पाठगत प्रश्न-1**

1. ब्राह्मण रूपी इन्द्र ने कर्ण के लिए क्या आशीर्वाद दिया?
2. इन्द्र किस रूप का आश्रय लेकर कर्ण के समीप आया?
3. कर्ण इन्द्र से किस आशीर्वाद की इच्छा करता है?
4. हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति यह किसकी उक्ति है?
5. भुजंगजिह्वाचपलाः नृपश्रियः वाक्य का क्या अर्थ है?

**18.4 ) मूल पाठ**

शक्रः - महत्तरं भिक्खं याचेमि। ( महत्तरां भिक्षां याचे। )

कर्णः - महत्तरां भिक्षां भवते प्रदास्ये। श्रूयन्तां मद्भिभवाः।

गुणवदमृतकल्पक्षीरधाराभिवर्षि

द्विजवर रुचितं ते तृप्तवत्सानुयात्रम्।

तरुणमधिकमर्थिप्रार्थनीयं पवित्रं

विहितकनकश्रृंग गोसहस्रं ददामि॥18॥

व्याख्या-

**श्लोक अन्वय-** हे द्विजवर, अहम् गुणवदमृतकल्पक्षीरधारभिवर्षि, तृप्तवत्सानुपात्रं तरुणम् अधिकम् आर्थिप्रार्थनीयं विहितकनकश्रृंगं पवित्रं रुचितं गोसहस्रं ते ददामि॥18॥

**व्याख्या-** हे ब्राह्मण श्रेष्ठ, मैं कर्ण अद्भुत गुणों से युक्त, अमृत तुल्य दूध की धारा को बहाने वाली, सन्तुष्ट बछड़ों के साथ, तरुणी युवति, विशेष, याचकों के प्रार्थना योग्य, स्वर्ण से मण्डित सींगों वाली, यज्ञों के लिए पवित्र, सुन्दर हजारों गाँ तुमको समर्पित करता हूँ। मालिनी छन्द॥

**सरलार्थ-** बहुत बड़ी भिक्षा चाहता हूँ ऐसे ब्राह्मण वचन को सुनकर उसकी याचना के संकोच को दूर करने के लिए अपने वैभव को कर्ण ने प्रकट किया। कर्ण कहता है- आपको हजार गायें दे सकता हूँ। कैसी गाय तो गुणों से युक्त अमृत के समान दूध की धारा की वर्षा करती हैं, उनके दूध से वत्स प्रसन्न होते हैं, और लोक यात्रा का निर्वाह भी सम्भव होता है। वो स्वस्थ, सभी धन धान्यों के साथ और जिनके सींग स्वर्ण से अलंकृत हैं।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- प्रदास्ये - प्र + दा + लृट् प्रथम पुरुष एकवचन।
- पवित्रम् - पूतं पवित्रं मेध्यं च वीध्रं तुं विमलार्थकम् इति।
- वाच्यान्तरम् - महतरां भिक्षां याचे।

### 18.5 ) मूल पाठ

शक्रः - गोसहस्रं त्ति। मुहुत्तअं खिरं पिबामि। णेच्छामि कण्ण! णेच्छामि। ( गोसहस्रमिति। मुहूर्तकं क्षीरं पिबामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि )।

कर्णः - किं नेच्छसि भवान इदमपि श्रूयताम्।

रवितुरगसमानं साधनं राजलक्ष्म्या

सकलनृपतिमान्यं मान्यकाम्बोजजातम्।

सुगुणमनिलवेगं युद्धदृष्टापदानं

सपदि बहुसहस्रं वाजिनां ते ददामि॥19॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** रवितुरगसमानं राजलक्ष्म्याः साधनं सकलनृपतिमान्यं मान्यकाम्बोजजातम् सुगुणम् अनिलवेगं युद्धदृष्टापदानं वाजिनां बहु सहस्रं सपदि ते ददामि॥19॥

**व्याख्या-** सूर्य के घोड़ों के समान, राज लक्ष्मी के साधन भूत, सभी राजाओं के द्वारा प्रशंसित, काम्बोज देश में उत्पन्न, अद्भुत गुणों से युक्त, आग के समान तीव्र वेग वाले, युद्धों में जिनका पराक्रम देखा गया है ऐसे पराक्रमी घोड़े हजारों की संख्या में तुमको अर्पित करता हूँ। मालिनी छन्द॥19॥

**सरलार्थ-** कर्ण के द्वारा देने के लिए इच्छित हजार गायों को वह ब्राह्मण नहीं चाहता है। वह कहता है कि हजार गायों को आप देने की इच्छा रखते हैं उससे केवल कुछ समय तक दूध पिऊँगा। इसलिए वह नहीं चाहिए। तब कर्ण बहुत सारे घोड़ों को देने की इच्छा करता हुए कहता है- सूर्य के घोड़ों के

### कवच कुण्डल का दान



ध्यान दें:

कवच कुण्डल  
का दान



ध्यान दें:

समान, राजलक्ष्मी के साधनभूत, सभी राजाओं से प्रशंसित, काम्बोज कुल में उत्पन्न, अद्भुत गुणों से युक्त, वायु के समान वेगवान, युद्ध में पराक्रमी हजारों अश्वों को अब ही देता हूँ।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- क्षीरम् - दुग्धं क्षीरं पयः समम् इति।
- अनिलः - श्वसनः स्पर्शनो वायुर्मातरिश्वा सदागतिः। पृषदश्वो गन्धवहो गन्धवाहानिलाशुगाः इति।

**18.6 ) मूल पाठ**

शक्रः - अश्व इति। मुहूर्तकम् आलुभामि। नेच्छामि कर्णं, नेच्छामि।

कर्णः - किं नेच्छति भगवान्। अन्यदपि श्रूयताम्!

मदसरितकपोलं षट्पदैः सेव्यमानं

गिरिवरनिचयाभं मेघगम्भीरघोषम्।

सितनखदशनानां वारणानामनेकं

रिपुसमरविमर्दं वृन्दमेतद्दामि॥20॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** मदसरितकपोलं षट्पदैः सेव्यमानं गिरिवरनिचयाभं मेघगम्भीरघोषं सितनखदशनानां वारणानां रिपुसमरविमर्दम् एतद् अनेकं वृन्दं ते ददामि।

**व्याख्या-** मद से सिक्त कपोल जिस पर भ्रमर निरन्तर मंडरा रहे हैं, पर्वतों के समान जिसकी आभा अर्थात् कान्ति है। मेघ के समान गम्भीर शब्द है जिसका, श्वेत वर्ण वाले नाखून एवं दांत है जिसके, युद्ध में जो शत्रुओं के विनाशकारक हैं, ऐसे बहुत से हाथियों के समूह का दान करता हूँ। मालिनी छन्द॥20॥

**सरलार्थ-** ब्राह्मण हजारों अश्वों को भी स्वीकार नहीं करता है। वह कहता है। कुछ समय तक ही अश्वारोहण करूंगा। अतः वह नहीं चाहता। तब कर्ण हाथियों के समूह को देने की इच्छा करते हुए कहता है- जिनका गण्डस्थल मद से सिक्त है, मद की गन्ध से भ्रमर मंडराते हैं, पर्वतों के समान जिनकी शोभा है, जिनका गर्जन गम्भीर मेघ के समान है जिनके नाखून और दांत श्वेत वर्ण के हैं और जो युद्ध में शत्रुओं का नाश करते हैं, उस जैसे बहुत से हाथियों को देता हूँ।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- सेव्यमानः - सेव् + ल्यप् + षानच् पु. प्रथमा विभक्ति एकवचन।
- षट्पदः - द्विरेफपुष्पलिंगभृंगषट्पदभ्रमरालयः। इति।
- मेघः - अभ्रं मेघो वारिवाहः स्तनयित्नुर्बलाहकः। धाराधरो जलधरस्तडित्वान्वारिदोऽम्बुभृत्। इति।



ध्यान दें:

## 18.7 ) मूल पाठ

**शक्रः-** गअ त्ति। मुहुत्तअं आलुहामि णेच्छामि कण्ण! णेच्छामि। (गज इति। मुहूर्तकम् आलुभामि नेच्छामि कर्णं नेच्छामि।)

**कर्णः-** किं नेच्छति भवान्। अन्यदपि श्रूयताम्। अपर्याप्तं कनकं ददामि।

**शक्रः-** गहिणअ गच्छामि। (किंचिद् गत्वा।) गृहीत्वा गच्छामि। नेच्छामि कर्ण! नेच्छामि।

**कर्णः-** तेन हि जित्वा पृथिवीं ददामि।

**शक्रः-** पुहुवीए किं करिस्सम्। (पृथिव्या किं करिष्यामि।)

**कर्णः-** तेन ह्यग्निष्टोमफलं ददामि।

**शक्रः-** अग्निष्टोमफलेन किं कय्य। (अग्निष्टोमफलेन किं कार्यम्।)

**कर्णः-** तेण हि मच्छिरो ददामि। (तेन हि मच्छिरो ददामि।)

**शक्रः-** अविहा अविहा। अविहा अविहा!

**कर्णः-** न भेतव्यं न भेतव्यम्। प्रसीदतु भवान्। अन्यदपि श्रूयताम्।

**अंगैः सहैव जनितं मम देहरक्षा**

**देवासुरैरपि न भेद्यमिदं सहस्रैः।**

**देयं तथापि कवचं सहकुण्डलाभ्यां**

**प्रीत्या मया भगवते रुचितं यदि स्यात्॥21॥**

व्याख्या-

**श्लोक अन्वय-** अंगै सह एव जनितं मम देहरक्षा सहस्रैः देवासुरैः अपि यन्न भेद्यं तथापि कुण्डलाभ्यां सह इदं कवचं यदि भगवते रुचितं स्यात् तर्हि मया प्रीत्या देयम्।

**व्याख्या-** शरीर के अंगों के साथ उत्पन्न हुए मेरे शरीर की रक्षा के लिए हजारों शस्त्रधारी देव दानव भी जिनको भेदने के योग्य नहीं है फिर भी वह कवच कुण्डल यदि ब्राह्मण आप की अभिलाषा हो तो मैं कर्ण सहर्ष देता हूँ। यद्यपि इस कवच से मेरे अंगों की रक्षा होती है, फिर भी यदि यह आपको अभीष्ट हो तो उसे भी देता हूँ। वसन्ततिलका छन्द॥21॥

**सरलार्थ-** कर्ण की हाथियों को देने की इच्छा है ऐसा सुनकर याचक कहता है- हाथी पर कुछ समय तक ही आरोहण करूंगा। इसलिए वह नहीं चाहता। तब कर्ण कहता है- इच्छानुसार स्वर्ण देता हूँ। इसे सुनकर स्वर्ण ग्रहण करके चला जाऊंगा ऐसा कहते हुए भी कुछ जाकर याचक फिर से कहता है- स्वर्ण को नहीं चाहता। तब कर्ण ने कहा- जीतकर भूमि को देता हूँ। याचक कहता है- पृथ्वी का क्या करूंगा। पृथ्वी का प्रयोजन नहीं है। तब कर्ण बोलता है- अग्निष्टोम नामक यज्ञ स्वर्गफल देता है वेद विद्वानों को अवश्य ही करना चाहिए। उसके फल को देना चाहता हूँ। इन्द्र कहता है- मेरा अग्निष्टोम से प्रयोजन नहीं है। तब कर्ण कहता है- फिर मेरे सिर को देता हूँ। अर्थात् मेरे प्राणों को ग्रहण करो। तब इन्द्र अनर्थ-अनर्थ ऐसा कहता है। उसे सुनकर डरिए नहीं डरिए नहीं कर्ण सान्तवना देता है। दिए जाने पर और ब्राह्मण के बार-बार मना करने पर ब्राह्मण को देखकर उसके अभिलाषित कवच कुण्डल देने के लिए कर्ण ने जाना। मेरे शरीर की रक्षा के लिए कुण्डलों के साथ कवच मेरे जन्म से ही विद्यमान

कवच कुण्डल  
का दान



ध्यान दें:

है, और यह कवच सहस्रों देवों और असुरों द्वारा भेदने योग्य नहीं है। यदि आपकी इच्छा हो तो कवच कुण्डल भी दे दूंगा।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- श्रूयताम् - श्रु + य + लोट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- भेतव्यम् - भी + तव्य प्रत्यय
- कनकम् - स्वर्ण सुवर्ण कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् इति।



पाठगत प्रश्न-2

6. कर्ण ने कितनी गायें देने के लिए कहा?
7. कर्ण ने कितने घोड़े के दान को कहा?
8. कर्ण ने किसके समूह को देने ही इच्छा की?
9. कर्ण कितने स्वर्ण को देना चाहते हैं?
10. कर्ण किस प्रकार की पृथ्वी को देना चाहते हैं?

18.8 ) मूल पाठ

शक्रः- (सहर्षम्) ददातु ददातु।

कर्णः- (आत्मगतम्) एष एवास्य कामः। किं नु खल्वनेककपटबुद्धेः कृष्णस्योपायः सोऽपि भवतु।  
धिगयुक्तमनुषोचितम्। नास्ति संशयः (प्रकाशम्) गृह्यताम्।

शल्यः- अंगराज! न दातव्यं न दातव्यम्।

कर्णः- शल्यराज! अलमलं वारयितुम्। पष्य

शिक्षा क्षयं गच्छति कालपर्ययात्

सुबद्धमूला निपतन्ति पादपाः ।

जलं जलस्थानगतं च शुष्यति

हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति॥22॥

तस्माद् गृह्यताम् ( निकृत्य ददाति।)

व्याख्या-

श्लोक अन्वय- काल पर्ययात् शिक्षा क्षयं गच्छति सुबद्धमूलाः पादपाः निपतन्ति। जलस्थानगतं जलं शुष्यति च। किन्तु हुतं च दत्तं च तथैव तिष्ठति॥22॥

व्याख्या- बहुत चतुर बुद्धि वाले कृष्ण का ही यह प्रयोजन है। रूकने का कोई प्रयोजन नहीं। मत रोको।



समय के बीत जाने पर शिक्षा नाश को प्राप्त करती है। दृढ़ मूल वाले वृक्ष भी भूमि पर गिर जाते हैं। जलाशय में गया जल भी सूख जाता है। किन्तु जो हवनादि अग्नि में दिया गया एवं दान है वह उचित समय पर सत्पात्र को प्राप्त होता है। वैसे ही अविनाशी रूप में रहता है। अतः हवनादि और दान में दी गई सभी वस्तुओं के द्वारा प्रशस्ति होती है।

**सरलार्थ-** कवच कुण्डल का नाम सुनने से इन्द्र ने हर्ष से कहा- दे दो, दे दो। तब कर्ण मन में कहता है की- यह कवच कुण्डल को ही स्वीकार करने की इच्छा करता है। कपट बुद्धि कृष्ण का ही यह कार्य है। दे दूंगा ऐसा मेरे द्वारा इस विषय में शोक नहीं करना चाहिए। इस प्रकार मन में विचारकर- लीजिए कर्ण ने कहा। शल्यराज उसे रोकते हैं। किन्तु वह कर्ण कहता है- समय बीतने पर शिक्षा नष्ट हो जाती है, मजबूत जड़ वाले वृक्ष भी गिर जाते हैं, जलाशय में गया जल भी समय आने पर सूख जाता है, किन्तु दान और यज्ञ में आहूत सभी ज्यों के त्यों बिना नाश हुए रहता है। फिर कर्ण ने कवच कुण्डल को उतारकर इन्द्र के लिए दे दिए।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- निकृत्य - नि + कृत् + क्त्वा ल्यप् प्रत्यय।
- दातव्यम् - दा + तव्य प्रत्यय।
- निपतन्ति - नि + पत् + लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।
- पादपः - वृक्षो महीरुहः शाखी विटपी पादपस्तरुः इति।

### 18.9) मूल पाठ

**शक्रः-** (गृहीत्वा आत्मगतम्) हन्त गृहीते एते। पूर्वमेवाहमर्जुनविजयार्थं सर्वदेवैर्यत् समर्थितं तदिदानीं मयानुष्ठितम्। तस्मादहमप्यैरावतमारुह्यार्जुनकर्णयोर्द्वन्द्वयुद्धं पश्यामि।

(निष्क्रान्तः।)

**शल्यः-** भो अंगराज! वंचितः खलु भवान्।

**कर्णः-** केन?

**शल्यः-** शक्रेण।

**कर्णः-** न खलु। शक्रः खलु मया वंचितः। कुतः,

अनेकयज्ञाहुतितर्पितो द्विजैः

किरीटवान् दानवसंघमर्दनः।

सुरद्विपस्फालनकर्कशांगुलि-

र्मया कृतार्थः खलु पाकशासनः॥23॥

व्याख्या

**श्लोक अन्वय-** द्विजैः अनेकयज्ञाहुतितर्पितः किरीटवान् दानवसंघमर्दनः सुरद्विपास्फालनकर्कशांगुलिः पाकशासनः मया कृतार्थः खलु॥23॥

### कवच कुण्डल का दान



ध्यान दें:

## कवच कुण्डल का दान



ध्यान दें:

**व्याख्या-** अनेक ब्राह्मणों के द्वारा यज्ञ में दी गई आहुति से तृप्त होता है, मुकुट धारण कर दानव के समूह का नाश करता है। ऐरावत के संचालन से जिसकी अंगुली कठोर हो गई है वह इन्द्र मेरे द्वारा उसके सफल मनोरथों को सम्पादित किया गया है। ब्राह्मणों के अनेक यज्ञ हवियों से जो प्रसन्न होता है वह इन्द्र याचना करने वाला मेरे द्वारा पूर्ण मनोरथ वाला हुआ। वंशस्थ छन्द।।23

**सरल अर्थ-** कवच कुण्डल को ग्रहण कर इन्द्र ने अपने मन में कहा कि पहले ही अर्जुन की विजय के लिए सभी देवों से जो प्रतिज्ञा की अब मेरे द्वारा वह कार्य हो गया। इसलिए मैं अर्जुन और कर्ण के युद्ध को ऐरावत से देखता हूँ। इस प्रकार कहकर इन्द्र निकल गया। शल्य तब कर्ण से कहता है कि इन्द्र ने आपको ठग लिया। तब कर्ण कहता है- मैं इन्द्र के द्वारा नहीं अपितु इन्द्र मेरे द्वारा ठगा गया है। किस प्रकार- जो यज्ञ में बहुत से ब्राह्मणों के द्वारा आहुति दिए जाने से तृप्त है, जो मुकुट को धारण किए दानवों को मारता है, ऐरावत के संचालन से जिसकी अंगुलियाँ कठोर हो गई, वह इन्द्र निश्चय ही आज कर्ण के द्वारा उपकृत है। इसलिए इन्द्र ही कर्ण से ठगा गया है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- गृहीत्वा - ग्रह + क्त्वा प्रत्यय।
- यज्ञः - यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः इति।

## 18.10 ) मूल पाठ

(प्रविष्य ब्राह्मणरूपेण)

**देवदूतः-** भोः कर्ण! कवचकुण्डलग्रहणाज्जनितपश्चात्तापेन पुरन्दरेणानुगृहीतोऽसि। पाण्डवेष्वेकपुरुषवधार्थममोघमस्त्रं विमला नाम शक्तिरियं प्रतिगृह्यताम्।

**कर्णः-** धिग्, दत्तस्य न प्रतिगृह्णामि।

**देवदूतः-** ननु ब्राह्मणवचनाद् गृह्यताम्।

**कर्णः-** ब्राह्मणवचनमिति। न मयातिक्रान्तपूर्वम्। कदा लभेय।

**देवदूतः-** यदा स्मरसि तदा लभस्व।

**कर्णः-** बाढम्। अनुगृहीतोऽस्मि। प्रतिनिवर्ततां भवान्।

**देवदूतः-** बाढम्। (निष्क्रान्तः।)

**कर्णः-** शल्यराज! यावद्रथमारोहावः।

**शल्यः-** बाढम्। (स्थारोहणं नाटयतः।)

**कर्णः-** अये! शब्द इव श्रूयते। किं नु खल्विदम्।

**शंखध्वनिः प्रलयसागरघोषतुल्यः**

**कृष्णस्य वा न तु भवेत् स तु फाल्गुनस्य।**

**नूनं युधिष्ठिरपराजयकोपितात्मा**

पार्थः करिष्यति यथाबलमद्य युद्ध॥24॥

शल्यराज! यत्रासावर्जुनस्तत्रैव चोद्यतां मम रथः।

शल्यः - बाढम्।

व्याख्या-

**श्लोक अन्वय-** प्रलयसागरघोषतुल्यः शंखध्वनिः कृष्णस्य वा न तु भवेत् स तु फाल्गुनस्य भवेत्। युधिष्ठिरपराजयकोपितात्मा पार्थः अद्य यथाबलं युद्धं करिष्यति इति नूनम्॥24॥

**व्याख्या-** कवच और कुण्डल को ग्रहण करने से उत्पन्न पश्चात्ताप से इन्द्र कर्ण के पास प्रतिग्रहण की इच्छा से गया।

प्रलयसागर के घोष के समान वह ध्वनि वासुदेव की अर्थात् कृष्ण की होगी और किसी के नहीं। वह ध्वनि तो अर्जुन की ही होने योग्य है। धर्मराज युधिष्ठिर की पराजय से क्रोधित होकर वह अर्जुन आज युद्ध में यथा बल का प्रयोग करके युद्ध को करेगा। वसन्ततिलका छन्द॥24॥

**सरलार्थ-** उस समय में कोई देवदूत ने ब्राह्मणरूप में प्रवेश कर सूचित किया कि कवच कुण्डल को लेने से पश्चात्ताप के लिए इन्द्र ने कर्ण को पाण्डवों में से किसी एक को मारने हेतु विमला नामक शक्ति को दिया। किन्तु कर्ण दिए हुए के बदले दान को स्वीकार नहीं करता। किन्तु ब्राह्मण के वचनों का उसने पहले प्रतिकार नहीं किया इस कारण से देवदूत से बोधित होकर वह पुनः शक्ति को स्वीकार करता है। और फिर पूछता है कि कब यह शक्ति प्राप्त होगी। देवदूत कहता है जब स्मरण करोगे तब प्राप्त होगी। इस प्रकार बताकर देवदूत प्रस्थान करता है। शल्यराज कर्ण के साथ रथ पर चढ़ते हैं। उसी समय शंखध्वनि को सुनकर कर्ण कहता है कृष्ण तथा अर्जुन की तेज शंख ध्वनि को सुनो। मेरे द्वारा युधिष्ठिर की पराजय को सुनकर अर्जुन सम्पूर्ण बल से युद्ध को करेगा। इसलिए जहाँ अर्जुन का रथ है वहाँ ही मेरे रथ को ले चलो। कर्ण का आदेश सुनकर शल्यराज ने वैसा ही किया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- प्रतिनिवर्तताम् - प्रति + नि + वृत् + लोट् लकार प्रथम पुरुष एकवचन।
- ध्वनिः - शब्दे निनादनिनदध्वनिध्वानरवस्वनाः इति।
- सागरः - समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः। उदन्वानुदधिः सिन्धुः सरस्वान्सागरोऽर्णवः इति।

### 18.11 ) मूल पाठ

( भरतवाक्य )

सर्वत्र सम्पदः सन्तु नश्यन्तु विपदः सदा।

राजा राजगुणोपेतो भूमिमेकः प्रशास्तु नः ॥25॥

( निष्क्रान्तौ )

इति कर्णभारं समाप्तम्।

व्याख्या

### कवच कुण्डल का दान



ध्यान दें:

कवच कुण्डल  
का दान



ध्यान दें:

**यलोक अन्वय-** सर्वत्र सम्पदः सन्तु सदा विपदः नश्यन्तु, राजगुणोपेतः एकः राजा नः भूमिं प्रशास्तु।।25।।

**व्याख्या-** सारे जगत में सम्पत्तियाँ हो। विपत्तियों का सदा नाश हो जाए, राज लक्षणों से युक्त एक राजा इस भूमि पर उचित रूप से शासन करें।

**सरलार्थ-** अब भरत वाक्य से नाटक की समाप्ति होती है। संसार में सब जगह सम्पदा हो, विपत्तियों का सदैव नाश हो, राज गुणों से सम्पन्न कोई राजा पृथ्वी पर शासन करें

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- प्रशास्तु - प्र + शास् + लोट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- सम्पद् - अथ सम्पदि। सम्पत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च इति।
- भूमिः - भूभूमिरचलानन्ता रसा विश्वम्भरा स्थिरा। धरा धरित्री धरणिः क्षोणिर्ज्या काष्यपी क्षितिः। सर्वसहा वसुमतिः वसुधोर्वी वसुन्धरा । गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वीक्ष्माऽवनिर्मेदिनी मही। इति।



**पाठगत प्रश्न-3**

11. कवच कुण्डल के दान से अर्जुन किसके द्वारा रोका गया?
12. समय बीतने पर क्या नष्ट हो जाता है?
13. क्या चिरकाल तक रहता है कर्ण कहता है?
14. देवदूत ने इन्द्र के अनुग्रह से कर्ण को क्या शक्ति दी?
15. देवदूत किसके द्वारा भेजा गया?
16. फाल्गुन कौन है?

**18.12 ) इस नाटक में प्रयुक्त छन्दों के लक्षण-**

1. अनुष्टुप् - श्लोके षष्ठं गुरु ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्।  
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।
2. उपजाति - अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः।
3. शार्दूलविक्रीडित - सूर्याश्वैर्मसजस्तताः सुगरवः शार्दूलविक्रीडितम्।
4. मालिनी- ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः।
5. वसन्ततिलका - उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः।
6. प्रहर्षणी - त्र्याशाभिर्मनजरगा प्रहर्षणीयम्।
7. वंशस्थ - जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ।



कर्ण ने रथ पर आरूढ़ होकर अर्जुन के समीप अपने रथ को ले चलो ऐसा शल्यराज को निर्देश दिया। तब नेपथ्य में 'महत्तरां भिक्षां याचे' किसी के स्वर को सुनकर कर्ण ने कहा कि यह स्वर वीर्यवान् ब्राह्मण का है। क्योंकि गम्भीर शब्द को सुनकर छोड़े चित्र के समान स्थिर हो गए। फिर उसने ब्राह्मण को बुलाया।

तब ब्राह्मणरूपधारी इन्द्र प्रवेश करता है। इन्द्र कहता है- हे कर्ण बड़ी भिक्षा चाहता हूँ। तब कर्ण उसके आशीर्वाद प्राप्ति के लिए उसको नमस्कार करता है। इन्द्र मन में विचार करता है कि यदि दीर्घायु हो कहता हूँ तो कर्ण दीर्घायु होगा, यदि उसे नहीं कहता तो मूर्ख है ऐसा सोचेगा, इसलिए कुछ नहीं कह सकता। प्रकाश में कहता है कि हे कर्ण सूर्य के समान, चन्द्रमा के समान, पर्वतों के समान, सागरों के समान तुम्हारा यश रहे। यह सुनकर कर्ण कहता है कि हे भगवन् आपने दीर्घायु हो ऐसा क्यों नहीं कहा? अथवा मेरे लिए यह ही ज्यादा अच्छा है, क्योंकि केवल धर्म का ही मनुष्यों के द्वारा यत्न से पालन करना चाहिए। राजलक्ष्मी तो सर्प की जिह्वा के समान चंचल होती है। इसलिए प्रजा का पालन केवल बुद्धि से हो क्योंकि शरीर नष्ट होने पर भी गुण स्थिर रहते हैं। कहो भगवन् क्या इच्छा है मैं क्या दूँ। यह सुनकर इन्द्र कहता है कि बड़ी भिक्षा चाहता हूँ। कर्ण ने कहा- बड़ी भिक्षा ही आपको देता हूँ। क्या आप सहस्रों गायें चाहते हैं। इन्द्र उसे नहीं चाहता। फिर कहता है- काम्बोज कुल में उत्पन्न अनेक सहस्र अश्वों को चाहते हैं? अथवा बहुत से हाथियों की इच्छा है? क्या अपर्याप्त स्वर्ण को चाहते हो? अथवा क्या पृथ्वी को चाहते हो? क्या अग्निष्टोम के फल की इच्छा करते हो। इन्द्र इनमें से किसी को भी नहीं चाहता। इसलिए कर्ण कहता है कि क्या आप मेरा सिर चाहते हैं। इन्द्र उसे भी नहीं चाहता। तब क्या आप सहस्रों देव और असुर के द्वारा अभेद्य कवच को कुण्डलों के साथ चाहते हो? ऐसा कर्ण ने पूछा। तब इन्द्र ने हर्ष से कहा दे दो दे दो। यह कृष्ण का कूट कार्य है ऐसा जानकर भी कर्ण ने शल्यराज के निषेध को न सुनकर इन्द्र को कवच कुण्डल दे दिए। और कहा- समय बीतने पर शिक्षा का भी नाश हो जाता है, वृक्ष भी समय से गिर जाते हैं, जलाशयों का जल भी सूख जाता है, किन्तु यज्ञ में आहुति किए और दान का कभी भी विनाश नहीं होता। वह सदैव उसी प्रकार रहता है। इन्द्र ने उसे ग्रहण कर हर्ष से प्रस्थान किया। शल्यराज ने कहा- आप निश्चय ही इन्द्र के द्वारा ठगे गए हैं। कर्ण ने कहा कि इन्द्र ही उससे ठगा गया है। कहाँ से? जो यज्ञ में आहुति प्रदान से बहुत से ब्राह्मणों द्वारा तृप्त होता है, मुकुटधारण कर जो दानवों को मारता है, वह इन्द्र निश्चय ही आज कर्ण से उपकृत है।

उस समय देवदूत ने वहाँ आकर निवेदन किया कि कवच कुण्डल के ग्रहण करने के पश्चात्ताप से इन्द्र ने कर्ण के लिए पाण्डवों में से किसी एक को मारने की विमला नामक शक्ति प्रदान की है। परन्तु कर्ण दिए हुए के प्रतिग्रहण को स्वीकार नहीं करता है। किन्तु ब्राह्मण वचनों का उसने पहले कभी प्रतिकार नहीं किया इस कारण से देवदूत से बोधित होकर उसने शक्ति को स्वीकार किया। और उससे पूछता है कि शक्ति कब प्राप्त होती है। देवदूत कहता है जब स्मरण करोगे तब प्राप्त होती है। ऐसा कहकर देवदूत प्रस्थान करता है। शल्यराज कर्ण के साथ रथ पर चढ़ते हैं। उसी समय शंखध्वनि को सुनकर कर्ण कहता है कृष्ण अथवा अर्जुन की शंख ध्वनि सुनाई दे रही है। युधिष्ठिर की पराजय को सुनकर अर्जुन यथाबल से युद्ध को करेगा। इसलिए जहाँ अर्जुन का रथ है वहाँ ही मेरे रथ को ले चलो। शल्यराज वैसा ही करते हैं। तब भरत वाक्य को सुनते हैं- संसार में सब जगह सम्पदा हो, विपत्तियों का नाश हो। राजगुणों



ध्यान दें:

कवच कुण्डल  
का दान



ध्यान दें:

से सम्पन्न राजा पृथ्वी पर शासन करें। फिर कर्ण और शल्य निकल जाते हैं। नाटक समाप्त हो जाता है।

आपने क्या सीखा

- कर्ण की दानवीरता
- इन्द्र के छल
- महाकवि मास के कवित्व को,
- भारवि विरचित किराताजुर्नीयम का परिचय



पाठान्त प्रश्न

1. कर्ण किसके द्वारा पाण्डवों की मृत्यु करने से रोका गया?
2. कवच कुण्डल के प्रतिदान रूप में इन्द्र ने कर्ण को क्या दिया?
3. कर्ण ब्राह्मण के लिए क्या-क्या देना चाहता था।
4. “हुतं च दत्तं तथैव तिष्ठति”- कर्ण के इस वाक्य को विस्तारित करो।
5. कर्ण के कवच कुण्डल दान को संक्षेप में लिखिए।
6. वस्तुतः इन्द्र ही कर्ण के द्वारा ठगा गया यहाँ कर्ण की क्या उक्ति है
7. क्या विचारकर कर्ण कवच कुण्डल देता है।
8. संक्षेप में नाटककार का परिचय बताए।
9. कवच कुण्डल किस प्रकार के है कर्ण कहता है।
10. स्तम्भ में स्थित शब्दों का किसके साथ सम्बन्ध है रेखा जोड़कर प्रदर्शित करें।
 

1. कर्णः	धर्मजयः
2. शल्यः	नागकेतुः
3. दुर्योधनः	जामदग्न्यः
4. अर्जुनः	पुरन्दरः
5. परशुरामः	दुर्योधनः
6. नागकेतुः	सारथिः
7. शक्रः	अंगेश्वरः



उत्तर-1

1. सूर्य, चन्द्र, पर्वत, सागरों के समान तुम्हारा यश रहें।
2. ब्राह्मण का
3. दीर्घायु
4. कर्ण की
5. राजाओं का धन सर्प की जिह्वा के समान चंचल होता है।

उत्तर-2

6. हजारों
7. हजारों को
8. हाथियों के
9. अपर्याप्त
10. सारी पृथ्वी को जीतकर

उत्तर-3

11. शल्य के द्वारा
12. शिक्षा
13. आहुति में और दान में दिया गया
14. विमला
15. इन्द्र के द्वारा
16. अर्जुन

भारविवरचितं किरातार्जुनीयम्

भारतीय संस्कृति में संस्कृत साहित्य का अमूल्य योगदान है। साहित्य शब्द का ही पर्याय काव्य होता है। जगत में काव्य का उद्भव कहाँ से हुआ। कदाचित् रामादि के जैसा व्यवहार करें न कि रावणादि जैसा सम्पादन के लिए ही। वहाँ काव्य की महिमा की क्या कथा? काव्य में सभी विषयों का सार है। क्योंकि काव्य में वेदों तथा उपनिषदों का भी वर्णन दिखाई देता है। और वेदान्तादिशास्त्रों के भी बहुत से सिद्धान्त काव्य में दिखाई देते हैं। प्रायः काव्य में सब कुछ ही समाहित है। इसलिए ही बुद्धिमान व्यक्तियों का अधिकांश समय काव्य शास्त्रादि के अध्ययन अध्यापन में व्यतीत होता है ऐसी सुभाषित प्रसिद्ध है।

स्वरूप के अनुसार काव्य दो प्रकार के है- श्रव्य काव्य, दृश्य काव्य। वहाँ प्रबन्ध मुक्तक के भेद से श्रव्य काव्य भी दो प्रकार का है। प्रबन्ध काव्य को दो प्रकार से विभाजित किया गया है- महाकाव्य और खण्ड काव्य। और शैली भेद से काव्य तीन प्रकार का है- पद्य काव्य, गद्य काव्य और चम्पू काव्य।



ध्यान दें:

## कवच कुण्डल का दान



ध्यान दें:

संस्कृत काव्य शास्त्र में काव्य का प्रयोजन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति ही है। वहीं आचार्य मम्मट काव्य के छः प्रयोजन कहते हैं।

काव्यं यशसेर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे॥ इति॥

अर्थात् यश की प्राप्ति के लिए, धन लाभ के लिए, सामाजिक व्यवहार की शिक्षा के लिए, अमंगल के नाश के लिए, रसास्वादन के अनुभव के लिए और स्त्री जैसे उपदेश देती है उसके समान उपदेश के लिए काव्य उपयोगी है।

शिव ने किरात वेश को धारण करके अर्जुन के साथ युद्ध किया ऐसा प्रसिद्ध है। महाभारत प्रायः सबको विदित है। महाकवि भारवि ने महाभारत के वन पर्व का एक प्रसंग लेकर किरातार्जुनीयम् एक प्रसिद्ध महाकाव्य को लिखा। कवि भारवि ने महाभारत का अन्धे की भाँति अर्थात् ज्यों का त्यों अनुसरण नहीं किया। बल्कि अपनी प्रतिभा से नए रूप से उस कथा को वर्णित किया। किरात और अर्जुन को आधार बनाकर ही कवि ने इस ग्रन्थ को रचा। इस ग्रन्थ में भारतीय संस्कृति, शिष्टाचार, राजनीति, स्त्री के स्वभाव का सम्यक् निदर्शन के अनेक विषयों दृष्टिगोचर होते हैं। किरात अर्जुन का चरित्र ही इस ग्रन्थ में प्रधान है। इसलिए ग्रन्थ का नाम किरातार्जुनीयम् है। प्रसिद्ध पाँचों महाकाव्यों में एक किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का होना उसका प्रमाण है। इसीलिए ही भारवेरर्थगौरवम् और नारिकेलफलसम्मितं वचः संसार में प्रसिद्ध है। यह महाकाव्य अट्टारह सर्गों में विभक्त है।

वहाँ प्रथम सर्ग में द्वैतवन में रहते हुए युधिष्ठिर के समीप में ब्रह्मचारी वेषधारी वनेचर दुर्योधन के शासन कौशल को सुनाता है। और वह सुनकर के द्रौपदी युधिष्ठिर को युद्ध के लिए उत्तेजित करते हुए ओज गुण युक्त वचनों से उपालम्भ करती हैं। इस सर्ग में चौसठ श्लोक है। उनमें से तीस श्लोक परिच्छेद रूप से संगृहीत हैं। इस परिच्छेद में वस्तुतः गुप्तचरों का स्वभाव कैसा होना चाहिए और द्रौपदी के मुख से स्त्री स्वभावों का विशाल चित्रण किया गया है। यहाँ तीस श्लोकों में वंशस्थ छन्द है। और उसका लक्षण जतौ तु वंशस्थमुदीरितंजरौ है।





ध्यान दें:

## 19

## वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

हिन्दु संस्कृति में प्राचीन काल से ही महाभारत की अमूल्य गणना है। शास्त्रों में महाभारत विषय में भारत पंचम वेद है ऐसा प्रसिद्ध है। इसके रचयिता महर्षि कृष्णद्वैपायन व्यास ने ग्रन्थ के विषय में स्वयं कहा है- जो यहाँ नहीं है वह कहीं नहीं है। इस ग्रन्थ के वनपर्व की कथा महाकवि भारवि ने किरातार्जुनीय महाकाव्य में संग्रहीत की है। वहाँ द्यूत में नियमों के अनुसार पराजित युधिष्ठिर राज नष्ट होने पर भाईयों और द्रौपदी के साथ वन में रहते थे। उस वनेचर को दुर्योधन की प्रजापालन की नीतियों को जानने के लिए हस्तिनापुर भेजा। और उस गुप्तचर ने वहाँ जाकर सब कुछ कैसा है जाना। और वहाँ से वापिस आकर राजा युधिष्ठिर के लिए किस रीति से निवेदित किया इत्यादि हम इस पाठ में पढ़ेंगे। राजा का गुप्तचर उनके नेत्रों के समान होता है। इसलिए यदि वे झूठ बोले तो किसकी हानि होगी तुम भी अनुमान लगा सकते हो। इसलिए वे कष्टदायक सत्य वचन को भी राजा के समीप में रखता है सप्रसंग इस पाठ में जानेंगे। वस्तुतः राजा का गुप्तचर कैसा हो हम इस पाठ से जानते हैं।



## उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- गुप्तचर राजकार्य को कैसे करते हैं जानने में;
- राजा तथा अमात्यों के मध्य में कैसा सम्पर्क होना चाहिए, जानने में;
- हितैषी गुप्तचर कैसे होते हैं जानने में;
- भारवि अर्थ गौरव के विषय में जानने में;
- इस पाठ को पढ़कर अलंकार विषय का ज्ञान प्राप्त करने में;
- छन्द ज्ञान जान पाने में;

## 19.1 ) मूल पाठ

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुक्त वेदितुम्।  
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥11॥

वनेचर का गुप्तचर  
के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।  
न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः॥12॥  
द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्यः भूभूतः।  
स सौष्टवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे॥13॥  
क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।  
अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥14॥  
स किंसरवा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संश्रृणुते स किंप्रभुः।  
सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥15॥  
निसर्गदुर्बोधमबोधविकलवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।  
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्॥16॥

19.2 ) मूल पाठ

श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुक्त वेदितुम्।  
स वर्णिलिङ्गी विदितः समाययौ युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचरः॥11॥

अन्वय- कुरूणां अधिपस्य श्रियः पालनीं प्रजासु वृत्तिम् यम् वनेचरं युधिष्ठिरः अयुक्त। वर्णिलिङ्गी विदितः सन् स वनेचरः द्वैतवने युधिष्ठिरं समाययौ।

अन्वय अर्थ- कुरू देश के राजा दुर्योधन की राजलक्ष्मी का पालन करने विषय में, प्रजा सम्बन्धी व्यवहार के विषय में, वृत्ति व्यवहार को, जिस व्यवहार से प्रजा पालित राजा की प्रतिष्ठा होती है, राजा युधिष्ठिर का वैसा व्यवहार है अथवा नहीं जानने के लिए जो वनेचर नियुक्त किया राज्य के वृत्तान्त को सम्यक् रूप से जानने के लिए गुप्तचर के रूप में हस्तिनापुर को भेजा वह ब्रह्मचारी वेशधारी वनेचर शत्रु दुर्योधन के गुप्त रहस्य को जानकर द्वैतवन नामक तपोवन में युधिष्ठिर के समीप लौट आया।

सरलार्थ- दुर्योधन से द्यूत क्रीड़ा में छल से पराजित युधिष्ठिर सब कुछ हार करके वनवास में रह रहे थे। तब युधिष्ठिर के मन में दुर्योधन कैसा राज्य करता है इस प्रकार का विचार उत्पन्न हुआ। जिसके राज्य में यदि प्रजा प्रसन्न हो तब ही राज लक्ष्मी अर्थात् धन वैभव सुप्रतिष्ठित होता है। उस दुर्योधन की राज्य संचालन की पद्धति को जानने के लिए वनेचर को भेजा। और उसने ब्रह्मचारी वेश को धारण करके वहाँ जाकर सब कुछ ज्ञात किया। फिर वह गुप्तचर युधिष्ठिर से सब कहने के लिए युधिष्ठिर के समीप द्वैतवन आया।

तात्पर्यार्थ- प्रस्तुत इस श्लोक में गुप्तचर के महत्व का प्रतिपादन किया है। राज्य हारे हुए युधिष्ठिर वन में भाइयों और द्रौपदी के साथ रहते हैं। उन्होंने दुर्योधन की प्रजापालन की नीतियों को जानने के लिए वनेचर को हस्तिनापुर भेजा। वहाँ जाकर सब यथा स्वरूप जानकर वह वनेचर युधिष्ठिर के प्रति द्वैतवन को लौट आया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- वेदितुम्- विद् धातु+ तुमुन् प्रत्यय।
- युधिष्ठिरः- युधिः स्थिरः।

## वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

- वनेचरः - वने + चर् + ट, चरेष्टः से
- अयुक्त- युज् धातु, लङ् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।
- समाययौ - सम् + आ + या धातु लिट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन

### प्रयोग परिवर्तन-

- कुरुणाम् अधिपस्य श्रियः पालनीं प्रजासु वृत्तिम् वेदितुम् युधिष्ठिरेण यः अयुज्यत, वर्णिलिंगिना तेन वनेचरेण द्वैतवने युधिष्ठिरः समायये।

### अलंकार आलोचना-

- वने वनेचरः - यहाँ वृत्य अनुप्रास अलंकार है। यहाँ वकार और नकार की बार-बार आवृत्ति के कारण।

### कोशः-

- श्रीः - लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया।



## पाठगत प्रश्न-1.1

1. वनेचर कहाँ लौट आया?
2. वनेचर किसके पास लौट आया?
3. युधिष्ठिर ने क्या जानने के लिए वनेचर को नियुक्त किया?
4. वनेचर शब्द का क्या अर्थ है?
5. वर्णिलिंगी किसका विशेषण है?

## मूल पाठ

कृतप्रणामस्य महीं महीभुजे जितां सपत्नेन निवेदयिष्यतः।

न विव्यथे तस्य मनो न हि प्रियं प्रवक्तुमिच्छन्ति मृषा हितैषिणः॥12॥

अन्वय- कृतप्रणामस्य सपत्नेन जितां महीं महीभुजे निवेदयिष्यतः तस्य मनः न विव्यथे। हि हितैषिणः मृषा प्रियं प्रवक्तुं न इच्छन्ति।

अन्वयार्थ- युधिष्ठिर को प्रणाम करके शत्रु दुर्योधन के द्वारा वश में की हुई पृथ्वी राज्य के विषय में राजा युधिष्ठिर के लिए कहते हुए उस वनेचर का मन विचलित नहीं हुआ। शत्रु राज्य को जीतकर जिस प्रकार से पालित कर रहा इस प्रकार के अप्रिय वचनों को राजा से कहते हुए वह विचलित नहीं हुआ। बिना विचलित हुए कहता है। क्योंकि जो हितैषी प्रभु कल्याण की कामना करता है वह कभी भी असत्य न कहते। प्रिय मधुर सुनने में सुखद वचनों को कहने की इच्छा नहीं करते।

सरलार्थ- वनेचर प्रजाओं में दुर्योधन के व्यवहार को जानकर वन को लौट आया। फिर युधिष्ठिर को प्रणाम करके दुर्योधन के द्वारा वशीकृत राज्य की शासन विधि को यथारूप कहा। परन्तु राजा से कैसे अप्रिय बात कहूँ ऐसा विचार करके उसका मन व्यथित नहीं हुआ। अप्रिय सत्य कथन ही

## पाठ-19

### वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

हितैषी गुप्तचरों का कर्तव्य है। वह प्रिय हो या अप्रिय। क्योंकि राजा का हित चाहने वाले सेवक कभी मन में भी झूठ नहीं बोलते हैं। उनका सत्य कथन ही परम धर्म है।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में गुप्तचर के गुण वर्णित है। और वे गुण चार प्रकार के हैं- चतुरता, स्फूर्ति, सत्यवादी और तार्किक। स्वामी के हित का सम्पादन ही गुप्तचर का परम प्रयोजन है। इसलिए नीति के विषय में राजा की सफलता अधिकतर दूत पर ही अवलम्बित है।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- विव्यथे - व्यथ् + लिट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
- कृतप्रणामस्य - कृतः प्रणामः येन सः। बहुव्रीहि समास
- महीभुजे - महीं भुनक्ति। (चतुर्थी विभक्ति)
- हितैषिणः - हितम् इच्छन्ति। (हित + इष + णिनि)

**सन्धि युक्त शब्द**

- मनो न - मनः + न विसर्ग सन्धि।

**प्रयोग परिवर्तन-**

- कृतप्रणामस्य सपत्नेन जितां महीं महीभुजे निवेदयिष्यतः तस्य मनसा न विव्यथे। हि हितैषिभिः मृषा प्रियं प्रवक्तुं न इष्यते।

**अलंकार आलोचना-**

- यहाँ हितैषी व्यक्ति असत्य प्रिय वचनों नहीं कहते हैं वाक्यार्थ को पूर्ववाक्य के समर्थन के लिए कहा है। अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

**कोश:-**

- मही- गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी क्षमाऽवनिर्मेदिनी मही।



**पाठगत प्रश्न-2**

7. किसका मन व्यथित नहीं हुआ?
8. हितैषी कैसे वचनों को कहना नहीं चाहते?
9. महीभुजे किसका विशेषण है?
10. हितैषी शब्द का क्या अर्थ है?

**मूल पाठ**

द्विषां विघाताय विधातुमिच्छतो रहस्यनुज्ञामधिगम्यः भूभूतः।

स सौष्टवौदार्यविशेषशालिनीं विनिश्चितार्थामिति वाचमाददे॥13॥

अन्वय- स द्विषां विघाताय विधातुम् इच्छतः भूभूतः रहसि अनुज्ञाम् अधिगम्य सौष्टवौदार्यविशेषशालिनीं

## वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन

विनिश्चितार्थम् इति वाचम् आददे।

**अन्वयार्थ-** वह वनेचर शत्रुओं दुर्योधनादि कौरवों के विनाश के लिए व्यापार उद्योग करने की किसी प्रकार से शत्रुओं के संहार की इच्छा करते हुए राजा युधिष्ठिर की एकान्त में अनुमति को प्राप्त करके शब्द सौष्ठव और अर्थ गौरव के विशेष प्राधिक्य से सुशोभित इस प्रकार की वक्ष्यमाणरूपी वाणी को कहा।

**सरलार्थ-** वनेचर ने शत्रुओं के विनाश के लिए उपाय को सोचकर राजा युधिष्ठिर की आज्ञा को प्राप्त किया। फिर उसने एकान्त में तब कहने योग्य कथन को सुमधुर भाषा में कहना आरम्भ किया।

**तात्पर्यार्थ-** कैसा दुर्योधन राज्य करता है, और कैसे पराजित होगा इस सारे वृत्तान्त को जानने के लिए वनेचर हस्तिनापुर गया था। प्रस्तुत इस श्लोक में हस्तिनापुर से आया हुआ वनेचर युधिष्ठिर की आज्ञा को प्राप्त करके युधिष्ठिर के प्रति एकान्त में कैसे चमत्कारिक शब्दों से युक्त वचन को कहा वह सब वर्णित है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- भूभृतः - भुवं बिभर्ति ।
- विनिश्चितार्थम् - विशेषेण निश्चितः तृतीया तत्पुरुष
- आददे - आ + दा धातु, आत्मनेपद, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- इच्छतः- इष् धातु, शत् प्रत्यय षष्ठी, एकवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- रहस्यनुज्ञाम् - रहसि + अनुज्ञाम् यण सन्धि।

### प्रयोग परिवर्तन-

- रहसि तेन द्विषां विघाताय विधातुम् इच्छतः भूभृतः अनुज्ञाम् अधिगम्य सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनी विनिश्चितार्था इति वाक् आददे।

### अलंकार आलोचना-

- यहाँ वृत्त्यनुप्रास अलंकार है। यहाँ वकार और तकार की बार बार आवृत्ति के कारण।

### कोश:-

- रहः - विविक्तविजनक्षत्रनिःशलाकास्तथा रहः।



### पाठगत प्रश्न-3

11. कौन शब्द सौन्दर्यशाली और असंदिग्ध वाणी को कहने लगा?
12. रहसि शब्द का क्या अर्थ है?
13. वनेचर ने क्या प्राप्त कर वचन को कहा?

## पाठ-19

### वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

14. युधिष्ठिर किस कारण से उद्योग की इच्छा करता है?
15. वनेचर ने कैसी वाणी को कहा?

मूल पाठ

क्रियासु युक्तैर्नृप चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।

अतोऽर्हसि क्षन्तुमसाधु साधु वा हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः॥14॥

अन्वय- हे नृप! क्रियासु युक्तैः अनुजीविभिः चारचक्षुषः प्रभवः न वंचनीयाः। अतः असाधु वा साधु क्षन्तुम् अर्हसि। हितं मनोहारि च वचः दुर्लभम् भवति।

**अन्वयार्थ-** हे राजन्! युधिष्ठिर कार्यों में नियुक्त किए गए अनुचर गुप्तचरों के द्वारा देखने वाले स्वामी ठगे नहीं जाने चाहिए। राजा दूसरे राष्ट्र की जानकारी के लिए गुप्तचरों को नियुक्त करके सब यथारूप जानते हैं। इसलिए गुप्तचर ही उनके नयनों के समान हैं। इसीलिए इन कारणों से अप्रिय अथवा प्रिय को क्षमा करें। हितकारी अर्थात् कल्याणकारी, मनोहारी अर्थात् प्रिय वचन कठिनता से मिलने वाले हैं। इसलिए आप सुनें।

**सरलार्थ-** हे राजन्! किसी भी कार्य में नियुक्त सेवक को अपने स्वामी से धोखा नहीं करना चाहिए। क्योंकि स्वामी के चार नेत्र होते हैं। अर्थात् जो कोई नयनवान पुरुष नेत्रों से देखता है। उस ही प्रमाण को कहता है। एवम् गुप्तचर जो कहते हैं वह ही उनका प्रमाण होता है। हमेशा दुर्लभ वचन दुर्लभ ही है। इसलिए प्रिय अथवा अप्रिय जा हों धैर्य को धारण करके सुनें। और जो समीचीन अथवा असमीचीन बोलें उसके लिए क्षमा करें। क्योंकि एक ही वाक्य में हितकारी और मधुर वचन दोनों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में गुप्तचर के कर्तव्यों का निरूपण किया गया है। कार्यों में नियुक्त सेवकों को राजा से सत्य ही बोलना चाहिए। क्योंकि वैसे ही सेवकों से स्वामी नयनवान होते हैं। झूठ बोलने वाले सेवकों से राजा अन्धे होते हैं। इसलिए जैसे अन्धे कूँ में गिरते हैं, वैसे वे शत्रु के जाल में गिरते हैं। हितकारी वाक्य सत्य भी हमेशा प्रिय नहीं होते हैं। गुप्तचर के सत्य को सुनकर स्वामी को क्रोधित नहीं होना चाहिए। यदि गुप्तचर कभी भी असत्य सत्य को बोलेगा तो निश्चित ही राज्य का नाश होगा। इसलिए सेवक से हमेशा सत्य का निवेदन करना चाहिए और तब राजा अप्रिय वचनों को भी सुनें।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- चरचक्षुषः - चाराः एव चक्षाषि येषां ते, बहुब्रहि समास
- मनोहारि - मनो हरति।
- वचनीयाः- वच् धातु + अनीय प्रत्यय।
- दुर्लभम् - दुःखेन लभ्यते।

सन्धि युक्त शब्द

- युक्तैर्नृप - युक्तैः + नृप, विसर्ग सन्धि।
- अतोऽर्हसि- अतः + अर्हसि, विसर्ग सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन-

- नृप! क्रियासु युक्ताः अनुजीविनः चारचक्षुषः प्रभून् न वंचयेयुः, अतः असाधु साधु वा त्वया क्षन्तुम् अर्हति, हितेन मनोहारिणा च वचसा दुर्लभेन भूयते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ हितं मनोहारि च दुर्लभं वचः। वाक्यार्थ का 'मेरे प्रिय अथवा अप्रिय वचनों को सुनना चाहिए' वाक्यार्थ के प्रति युक्ति कथन से काव्यलिंग अलंकार है।

कोश:-

- प्रभु:- अधिभूर्नायको नेता प्रभुः परिवृढोऽधिपः।



पाठगत प्रश्न-4

16. कैसे सेवकों के द्वारा राजा नहीं ठगे जाने चाहिए?
17. कैसे वचन दुर्लभ है?
18. कैसा राजा नहीं ठगना चाहिए?
19. चारचक्षुषः शब्द का क्या अर्थ है?
20. स्वामी को कैसे वचन सुनने चाहिए?

मूल पाठ

स किंसरवा साधु न शास्ति योऽधिपं हितान्न यः संश्रुणुते स किंप्रभुः।

सदाऽनुकूलेषु हि कुर्वते रतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्वसम्पदः॥15॥

अन्वय- यः अधिपं सयधु न शास्ति, स किंसखा। यः हितात् न संश्रुणुते, स किंप्रभुः। हि सदा अनुकूलेषु नृपेषु अमात्येषु च सर्वसम्पदः रतिं कुर्वते।

अन्वय अर्थ- जो अमात्यादि राजा को हितकर उपदेश नहीं करता है। वह राजा का हितकारक उपदेष्टा कुत्सित मन्त्री है। जो स्वामी हित बोलने वाले अमात्य की न तो सुनता है न ही हितकारी वचनों का ग्रहण करता है वह कुत्सित स्वामी है। क्योंकि सदा अनुराग युक्त राजाओं और मन्त्रियों में सभी सम्पदाएँ अनुराग करती है।

सरल अर्थ- जो मित्र अथवा मन्त्री स्वामी को हितकारी उपदेश नहीं करता वह कुत्सित मन्त्री होता है। और जो स्वामी अथवा राजा हितकारी उपदेशित वचनों को नहीं सुनता है वह कुत्सित राजा है। इसलिए राजा अथवा मन्त्री परस्पर अनुरागी हों। तब वहाँ भी सभी प्रकार की राज सम्पत्तियाँ स्थिर होती हैं। अतः मेरे द्वारा आपके भावी कल्याण के लिए जो कहता हूँ, वह सावधानी से सुनें।

तात्पर्य अर्थ- राज्य की समृद्धि के लिए राजा और मन्त्रियों में एकमत आवश्यक होता है यह इस श्लोक में प्रतिपादित किया गया है। जो स्वामी को सदैव हितकारी वचन ही कहता है वह योग्य अमात्य है। जो अमात्यादि के उपदेश को सुनकर स्वीकार करता है वह योग्य स्वामी है। इसलिए जो परस्पर अनुरागी है उनके भवन में सम्पत्तियाँ स्थिर होती है। वह कहीं और जाने के लिए एक कदम भी नहीं उठाती।

वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

वनेचर का गुप्तचर  
के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सर्वसम्पद:- सर्वाः (कर्मधारय समास) सम्पदः।
- शास्ति- शास् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- संश्रृणुते: सम् + श्रु धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।

सन्धि युक्त शब्द

- हितान्न - हितात् + न, हल् सन्धि।
- नृपेष्वमात्येषु- नृपेषु + अमात्येषु, यण् सन्धि।

प्रयोग परिवर्तन-

- येन अधिपः साधु न शिष्यते, तेन किंसख्या भूयते, येन हितात् न संश्रृणुते, तेन किंप्रभुणा भूयते। सदा अनुकूलेषु नृपेषु अमात्येषु च सर्वसम्पद्धिः रतिः क्रियते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ स्वामी और सेवक का एकमत कारण है और सभी सम्पत्तियों की सिद्धि कार्य है। उस कारण की कार्य समर्थता के लिए अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

कोश:-

- सखा- वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत्।



पाठगत प्रश्न-5

21. कौन कुत्सित मित्र है?
22. कौन कुत्सित स्वामी है?
23. अनुरागी राजाओं और अमात्यों में क्या होता है?
24. कब सभी सम्पत्तियाँ अनुराग करती है?
25. शास्ति का अर्थ क्या है?

मूल पाठ

निसर्गदुर्बोधमबोधविक्लवाः क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः।  
तवानुभावोऽयमवेदि यन्मया निगूढतत्त्वं नयवर्त्म विद्विषाम्॥16॥

अन्वय- निसर्गदुर्बोधं भूपतीनां चरितं क्व। अबोधविक्लवाः जन्तवः क्व। मया विद्विषां निगूढतत्त्वं नयवर्त्म यत् अवेदि, तत् अयम् तव अनुभावः।

अन्वयार्थ- स्वभाव से ही दुर्बोध राजाओं का चरित्र कहाँ। अविवेकी मुझ जैसा साधारण प्राणी कहाँ। बुद्धिमता कार्य को बुद्धिमान ही करते हैं। मेरे द्वारा शत्रुओं का अत्यन्त गुप्त तत्व वाला नीति मार्ग अर्थात् राजनीति मार्ग जो मेरे द्वारा जाना गया है यह आप युधिष्ठिर का ही प्रताप अर्थात् महिमा है।



**सरलार्थ-** राजा का चरित्र अस्वभाविक होता है। उसे तो महा बुद्धिमानी व्यक्ति भी अच्छी प्रकार से नहीं जान सकते हैं। इसलिए मेरे मन्दबुद्धि द्वारा कैसे जाना जा सकता है। फिर भी मैंने जो थोड़ा बहुत भी जाना है, वह तो केवल आपकी ही महिमा है।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में राजा के चरित्र की कठिनता अर्थात् दुर्बोधता अथवा गुप्तचर की विनयशीलता और निराभिमानिता निरूपित की गई है। राजा के स्वभाव से बुद्धिमान भी अनभिज्ञ होते हैं। मेरे जैसे प्राणी का तो कहना ही क्या। फिर भी शत्रु के अत्यन्त गुप्त रहस्यमयी नीतिमार्ग को मैंने जाना। वह आपके ही सामर्थ्य से, वह मेरा तो सामर्थ्य नहीं है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अवेदि- विद् धातु, लुङ् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।
- निगूढतत्त्वम् - निश्चयेन गूढं। गति समास, निगूढं तत्त्वं यस्य तद्-बहुव्रीहि समास।
- नयवर्त्म - नयस्य वर्त्म। षष्ठी तत्पुरुष समास।

### सन्धि कार्य

- यन्मया - यत् + मया, हल् सन्धि।
- तवानुभावोऽयम् - तव + अनुभावः सवर्ण दीर्घ + अयम् विसर्ग सन्धि।

### प्रयोग परिवर्तन-

- निसर्गदुर्बोधेन भूपतीनां चरितेन क्व भूयते। अबोधविक्लवैः जन्तुभिः क्व भूयते। निगूढतत्त्वं विद्विषां नयवर्त्म अहं यत् अवेदिषम् अनेन तव अनुभावेन भूयते।

### अलंकार आलोचना-

- यहाँ विषम अलंकार है। दोनों कथनों में अत्यधिक विषमता होने के कारण।

### कोश:-

- जन्तु:- प्राणी तु चेतनो जन्मी जन्तु जन्य शरीरिणः।



### पाठगत प्रश्न-6

26. राजाओं का चरित कैसा होता है?
27. नयवर्त्म शब्द का क्या अर्थ है?
28. प्राणी किसके जैसे होते हैं?
29. अनुभाव का क्या अर्थ है?
30. वनेचर ने शत्रुओं का क्या जाना?

### वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

वनेचर का गुप्तचर  
के अनुरूप वचन



ध्यान दें:



पाठ सार

युधिष्ठिर दुर्योधन से द्यूत क्रीड़ा में छल से पराजित होकर सब कुछ हार कर वन में रहता था। तब युधिष्ठिर के मन में दुर्योधन का कैसा राज्यशासन है इस विषय में विचार उत्पन्न हुआ। क्योंकि राज्य में प्रजा यदि प्रसन्न हो तब ही राजा की राज सम्पत्ति सुप्रतिष्ठित होती है। उसने वहाँ दुर्योधन की राज्य शासन पद्धति को जानने के लिए वनेचर को भेजा। और वह ब्रह्मचारी वेश को धारण करके वहाँ जाकर सब कुछ ज्ञात करके वहाँ से आकर युधिष्ठिर से सब कहने के लिए युधिष्ठिर के पास द्वैतवन को लौट आया। वहाँ युधिष्ठिर को प्रणाम करके वह दुर्योधन से वशीकृत राज्य की शासन विधि को यथा स्वरूप कहने के लिए उद्यत हुआ। परन्तु राजा से कैसे अप्रिय वचन कहे ऐसा सोचकर उसका मन व्यथित नहीं हुआ। क्योंकि अप्रिय सत्य वचन ही हितैषी गुप्तचरों का कर्तव्य होना चाहिए। वह अप्रिय हो अथवा प्रिय। इसलिए राजा के हितकारी सेवक मन में भी कभी असत्य वचन नहीं कहते हैं। उनका सत्य वचन ही परम धर्म है। एवं वनेचर शत्रुओं के विनाश साधन के लिए उपाय को सोचकर राजा युधिष्ठिर की आज्ञा को प्राप्त कर उस एकान्त प्रदेश में कहने योग्य वचनों को सुमधुर भाषा में कहना आरम्भ किया कि हे राजन्! किसी भी कार्य में नियुक्त सेवकों से अपने राजा को नहीं ठगा जाना चाहिए। क्योंकि राजा के चार नेत्र होते हैं। अर्थात् कोई नेत्रवाला व्यक्ति जो नेत्रों से देखता है उस ही प्रमाण को कहता है। इसी प्रकार गुप्तचर जो कहते हैं वह ही उनका प्रमाण होता है। सदैव प्रिय वचन दुर्लभ ही है। इसलिए प्रिय अथवा अप्रिय वचनों को धैर्य को धारण कर सुनना चाहिए। और उचित अथवा अनुचित जो भी बोलें उसके लिए क्षमा करना चाहिए। क्योंकि एक ही वाक्य हितकर और मधुर दोनों नहीं होता। और जो मित्र अथवा मन्त्री राजा से हितकारी वचनों को नहीं कहता वह कुत्सित मित्र अथवा कुत्सित मन्त्री होता है। इसी प्रकार जो राजा हितकारी वाक्यों को नहीं सुनता वह भी कुत्सित राजा होता है। इसलिए राजाओं एवं मन्त्रियों को परस्पर अनुरागी होना चाहिए। तब ही वहाँ सारी राज सम्पत्तियाँ स्थिर होती हैं। इसलिए आप को मेरे द्वारा जो भावी मंगल के लिए कहा गया है उसे ध्यान से सुनना चाहिए। राजाओं का चरित्र सदैव अस्वाभाविक होता है। उसे तो महाबुद्धिमान व्यक्ति भी सम्यक् रूप से नहीं जान सकते हैं। इसलिए मेरे मन्दबुद्धि द्वारा कैसे जान सकते हैं। फिर भी मैं जो कुछ भी जान पाया हूँ वह तो केवल आपकी ही महिमा है।



पाठान्त प्रश्न

1. वनेचर किस कार्य में नियुक्त हुआ?
2. वनेचर ने किस उपाय से वह कार्य सम्पादित किया?
3. राजा किससे नहीं ठगा जाना चाहिए?
4. कौन कुत्सित मित्र और कुत्सित राजा है?
5. वनेचर का वचन किसके जैसा था? और किसके सदृश वचन दुर्लभ हैं?
6. 'क्व भूपतीनां चरितं क्व जन्तवः!' यहाँ प्रयुक्त दोनों क्व शब्द क्या सूचित करते हैं?

7. समानार्थक धातुरूप से मिलाओ

क- स्तम्भ

1. अवेदि
2. इच्छति
3. समाययौ
4. अर्हति
5. कुर्वते
6. माददे
7. विव्यथे

ख- स्तम्भ

- क. कुर्वन्ति
- ख. व्यथितम्
- ग. शक्नोति
- घ. अज्ञायि
- ङ. वाञ्छति।
- छ. स्वीकृतवान्
- ज. समागतवान्

उत्तराणि- 1-घ, 2-ङ, 3-ज, 4-ग, 5-क, 6-छ, 7-ख।

### आपने क्या सीखा

1. अमात्यों को कैसा होना चाहिए। इस पाठ से जानते हैं।
2. राजा को किसके जैसा होना चाहिए यह भी इस पाठ से जानते हैं।
3. हितैषी झूठ और प्रिय बोलने की इच्छा नहीं करते है।
4. हितकारी और मनोहारी वचन दुर्लभ होते हैं।
5. गुप्तचर कैसे विनयी और अनुरागी होते हैं ऐसा समझते हैं।
6. नए शब्दों तथा विविध अलंकारों का भी ज्ञान प्राप्त करते हैं।



### पाठगत प्रश्नों के उत्तर

#### उत्तर-1

1. द्वैतवन में
2. युधिष्ठिर के
3. प्रजाओं की वृत्ति को जानने के लिए।
4. किरात
5. वनेचर का

#### उत्तर-2

6. हितैषी व्यक्ति
7. वनेचर का
8. असत्य और प्रिय

### वनेचर का गुप्तचर के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

वनेचर का गुप्तचर  
के अनुरूप वचन



ध्यान दें:

9. युधिष्ठिर
10. कल्याणकामिन

उत्तर-3

11. वनेचर
12. एकान्त में
13. आज्ञा को
14. शत्रुओं के विनाश के लिए
15. शब्द सामर्थ्य और अर्थ गाम्भीर्य से युक्त संदेह रहित।

उत्तर-4

16. कार्यो में नियुक्त
17. हितकारी और मनोहारी
18. गुप्तचर
19. चार नेत्रों वाले
20. प्रिय अथवा अप्रिय

उत्तर-5

21. जो राजा को हितकारी उपदेश नहीं देता।
22. जो हितैषी से हितकारी वचनों को नहीं सुनता।
23. सभी सम्पदाएँ अनुराग करती है।
24. राजाओं और मन्त्रियों के अनुरागी होने पर
25. उपदेश करता है

उत्तर-6

26. कठिनता से जानने योग्य
27. नीतिमार्ग
28. अज्ञानी
29. महिमा
30. अत्यन्त गुप्त तत्त्व वाला



ध्यान दें:

20

## कपटी दुर्योधन का धर्माचरण

आप सब जानते ही हैं कपटी दुर्योधन ने जुए में छल से युधिष्ठिर को पराजित किया। परन्तु वह दुर्योधन यह जानता था कि वनवास के अन्त में युधिष्ठिर अपनी शक्ति से अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लेगा। इसलिए दया दक्षिणादि गुणों से अपनी कीर्ति को विस्तारित करते हुए युधिष्ठिर से भी उत्तम होने के लिए शक्ति अनुसार प्रयत्न करता है। इस प्रकार दुर्योधन ने अपने दुष्ट स्वभाव को छिपाने के लिए क्या-क्या किया, इत्यादि आप सब इस पाठ में पढ़ेंगे। और सेवक बन्धु आदि में उसका व्यवहार कैसा था। जो लोभी हैं वे सब विपक्षी नहीं हुए। और भी उस दुष्ट ने चारों पुरुषार्थ की किस प्रकार से सेवा की, जिसके द्वारा वे चारों पुरुषार्थ परस्पर अविरोधी थे। इस प्रकार आप सभी प्रश्नों के समाधान को प्राप्त करते हैं। उनके साथ राजनीति के चार प्रकार के उपायों साम, दान, दण्ड, भेद के विनियोग में दुर्योधन कैसा था यह भी आप सब जानेंगे। इस प्रकार अनेकों प्रकारों से वह दुष्ट युधिष्ठिर को पराभव के लिए इच्छा करता। परन्तु युधिष्ठिर जैसे सज्जन के साथ उस दुष्ट चरित दुर्योधन का विरोध कल्याणकारी नहीं है आपको इस पाठ में स्पष्ट होगा।



### उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- कपटी दुर्योधन कैसी नीति मार्ग का अनुसरण करता है ऐसा जानने में;
- दुर्योधन प्रजाओं की प्रीति के लिए क्या-क्या करता है। ऐसा जानने में;
- दुर्योधन का राजनीतिक ज्ञान कैसा था यह भी जानने में;
- इस पाठ को पढ़ कर व्याकरण के ज्ञान में;
- और पद्य काव्य का निर्माण भी करने में;

### 20.1 ) मूल पाठ:

विशङ्कमानो भवतः पराभवं नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः।  
दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः॥1.7॥

कपटी दुर्योधन का  
धर्माचरण



ध्यान दें:

तथापि जिह्वाः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।  
समुन्नयन्भूतिमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः॥1.8॥

कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।  
विभज्य नक्तन्दिवमस्ततन्द्रिणा वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्॥1.9॥

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः समानमानान्सुहृदश्च बन्धुभिः।  
स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्॥1.10॥

असक्तमाराधयतो यथायथं विभज्य भक्त्या समपक्षपातया।  
गुणानुरागादिव सख्यमीधिवान्न बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्॥1.11॥

निरत्ययं साम न दानवर्जितं न भूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्।  
प्रवर्तते तस्य विशेषशालिनी गुणानुरोधेन विना न सत्क्रियाम्॥1.12॥

वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।  
गुरुपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्॥1.13॥

20.2 ) मूल पाठ

विशङ्कमानो भवतः पराभवं नृपासनस्थोऽपि वनाधिवासिनः।  
दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः॥7॥

अन्वय- नृपासनस्थः अपि वनाधिवासिनः भवतः पराभवं विशङ्कमानः सुयोधनः दुरोदरच्छद्मजितां जगतीं नयेन जेतुं समीहते।

अन्वयार्थ- राजसिंहासन पर बैठा हुआ भी वन में निवास करने वाले आप से अर्थात् राजा युधिष्ठिर से पराजय की शंका करता हुआ धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र सुयोधन द्यूत क्रीड़ा के बहाने छल से जीती हुई पृथ्वी को नीति द्वारा जीतना चाहता है।

सरलार्थ- उस सम्राट राजा दुर्योधन ने द्यूत में कपट से राज्य को जीता। और कपट से छिने गए राज्य को उत्तम राजनीति से वश में करने की चेष्टा करता है। आप आजकल वन में रहते हैं। वनवास के अवसान पर आप पुनः जीतकर अपने राज्य को ग्रहण करेंगे इससे वह सदैव शक्ति रहता है। इसीलिए वह नीति से जीतने का प्रयास कर रहा है। जिस कारण से आप अपने राज्य का पुनरुद्धार नहीं कर सकते हैं।

तात्पर्यार्थ- राजसिंहासन पर आरुढ़ वह दुर्योधन हमेशा युधिष्ठिर की पराजय का चिन्तन करता है। वह शौर्य से युधिष्ठिर को जीतने में असमर्थ है। ऐसा स्वयं जानता है। फिर भी न्याय से राष्ट्र का पालन करते हुए वश में करने की चेष्टा करता है। इत्यादि सब इस श्लोक में प्रतिपादित है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- समीहते - सम् + इह धातु, लट लकार।
- जेतुम् - जि धातु तुमुन् प्रत्यय
- नृपासनस्थः - नृपस्य आसनं। षष्ठी तत्पुरुष समास
- वनाधिवासिनः - वनम् अधिवसति।

## कपटी दुर्योधन का धर्माचरण

- दुरोदरच्छद्मजिताम् - द्युतस्य कपटं जिताम्

### सन्धि युक्त शब्द

- नृपासनस्थनोऽपि - नृपासनस्थः + अपि।

### प्रयोग परिवर्तन-

- सुयोधनेन नृपासनस्थेनापि वनाधिवासिनः भवतः पराभवं विशंकमानेन दुरोदरच्छद्मजिता जगती नयेन जेतुं समीह्यते।

### कोशः-

- जगती - त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत।



### पाठगत प्रश्न-1

1. कौन भूमि को जीतना चाहता है?
2. राजसिंहासन पर बैठा दुर्योधन क्या शंका करता है?
3. सुयोधन किस उपाय से जगत को जीतना चाहता है?
4. दुर्योधन किससे पराजय की शंका करता है?
5. द्यूत में छल से जीती हुई पृथ्वी को किसने जीता?

## मूल पाठ

तथापि जिह्वाः स भवज्जिगीषया तनोति शुभ्रं गुणसम्पदा यशः।

समुन्नयन्भूतिमनार्यसंगमाद्वरं विरोधोऽपि समं महात्मभिः॥8॥

**अन्वय-** तथापि जिह्वाः भवज्जिगीषया गुणसम्पदा शुभ्रं यशः तनोति। भूतिं समुन्नयन् महात्मभिः समं विरोधः अनार्यसंगमात् अपि वरम्।

**अन्वयार्थ-** फिर भी आप से पराजय की आशंका करते हुए भी वह कुटिल दुर्योधन आप को जीतने की इच्छा से अर्थात् आपको दया शौर्य आदि गुणों से जीतने की इच्छा से गुणों की गरिमा-वैभव के द्वारा निर्मल कीर्ति को फैलाता है। दानादि गुणों से तुम्हारी कीर्ति सम्पदा को आत्मसात् करने के लिए तुम्हारी अपेक्षा अपने गुणों को प्रकट करता है। ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला महात्माओं के साथ विरुद्ध आचरण भी दुष्टों की मित्रता से अच्छा है।

**सरलार्थ-** आपके दया दक्षिणा आदि गुणों के कारण सारी प्रजा आपके प्रति अनुरक्त है। उसे देखकर दुर्योधन शक्ति होता है कि वनवास से आकर आप पुनः अपने राज्य को प्राप्त करेंगे। इसीलिए जिससे प्रजा उसके अधीन रहें वैसा प्रयास करता है। उसी लिए वह अपने गुणों को अत्यधिक रूप से प्रकट करता है। और अपने यश को फैलाता है। क्योंकि दुष्टों से सम्पर्क की अपेक्षा महापुरुषों के साथ विरोध भी अच्छा है। जिससे वैभव उत्कर्ष जाता है।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में दानादि सदगुणों से राज्य पालन करते हुए अपनी कीर्ति को विस्तारित करता है यह प्रतिपादित किया गया है। उसका कारण है, जैसे प्रजा आपको उच्च दृष्टि से देखती

## पाठ-20

### कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:

## कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:

है उसी समान उसे भी देखें। परन्तु अब भी दुशासन आदि दुष्टों के साथ को नहीं छोड़ता है। क्योंकि वे स्वभाव से ही दुष्ट हैं। इसीलिए आपकी तरह महात्माओं के साथ विरोध भी वह श्रेष्ठ ही मानता है।

### व्याकरणात्कब टिप्पणी

- भवज्जिगीषया - जेतुम् इच्छा जिगीषा। भवतो जिगीषा।
- गुणसम्पदा - गुणानां सम्पद् गुणसम्पत्। षठी तत्पुरुष समास
- अनार्यसंगमात् - न आर्यः अनार्यः, अनार्यस्य संगमः अनार्यसंगमः। तस्मात् अनार्यसंगमात्।
- महात्मभिः- महान् आत्मा यस्य असौ महात्मा।
- तनोति - तन् धातु, लट् लकार।
- समुन्नयन - सम् + उत् + नी धातु, शतृ प्रत्यय।

### सन्धि युक्त शब्द

- अनार्यसंगमाद्वरम् - अनार्यसंगमात् + वरम्।
- विरोधोऽपि - विरोधः + अपि।

### प्रयोग परिवर्तन-

- तथापि जिह्नेन तेन भवज्जिगीषया गुणसम्पदा शुभ्रं यशः तन्यते। भूतिं समुन्नयता महात्मभिः समं विरोधेन अनार्यसंगमाद् वरेण भूयते।

### कोशः

- भूतिः- विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा।



### पाठगत प्रश्न-2

6. कौन गुणों के वैभव से कीर्ति को फैलाता है?
7. महात्माओं के साथ विरोध भी दुष्टों की मित्रता से अच्छा है ऐसा कौन मानता है?
8. दुर्योधन किस लिए कीर्ति फैलाता है?
9. दुर्योधन क्या करके महात्माओं के साथ विरोध भी दुष्टों की मित्रता से अच्छा है ऐसा मानता है?
10. जिह्वा: शब्द का क्या अर्थ है?

### मूल पाठ

कृतारिषड्वर्गजयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना।

विभज्य नक्तं दिवमस्ततन्द्रिणा वितन्यते तेन नयेन पौरुषम्॥१९॥

अन्वय- कृतारिषड्वर्गजयेन अगम्यरूपां मानवीं पदवीं प्रपित्सुना अस्ततन्द्रिणा तेन नक्तन्दिवं विभज्य नयेन पौरुषं वितन्यते।



**अन्वयार्थ-** काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य इन छः शत्रुओं को जीतकर सुविनीत से स्थित है। विनय ही प्रजा पालन का उपाय है। साधारण मनुष्यों के द्वारा अलभ्य दुष्प्राप्य है स्वरूप जिसका ऐसी दुर्लभ मानवी स्मृतिकार मनु के द्वारा बतलाई गई प्रजापालन की पद्धति को प्राप्त करने की इच्छा करने वाले उस दुर्योधन के द्वारा समाप्त हो गई है तन्द्रा जिसकी ऐसे आलस्यविहीन होकर दिन रात का विभाग करके उद्योग का विस्तार करता है।

**सरलार्थ-** काम, क्रोधादि छः शत्रुओं को विवेक से जीतकर मनु द्वारा कही गई प्रजापालन की नीतियों का पालन करता है। और उससे कीर्ति को प्राप्त करने की इच्छा करता है। इस समय में यह करना चाहिए, उस समय में वह करना चाहिए इस रीति से दिन को विभाजित करके उचित नियमों से सभी कार्यों को करता है। एवं आलस को त्याग कर प्रजाओं में अपने उद्योग को प्रदर्शित करता है।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में दुर्योधन कैसे पुरुषार्थ को प्रदर्शित करता है इसका वर्णन गुप्तचर ने किया है। दुर्योधन ने छः शत्रुओं को जीतकर दिन को अलग-अलग भागों में विभक्त कर दिया। और मनु द्वारा कहे गए मार्ग को पकड़कर यथा समय कार्य को सिद्ध करता है। एवं सदैव नीति मार्ग का अनुसरण करके उद्योग को प्रदर्शित करता है। और वह अपने दुष्ट स्वभाव का भी गोपन करता है

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- कृतारिषड्वर्गजयेन- षण्णां वर्गः षड्वर्गः। अरीणां षड्वर्गः अरिषड्वर्गः। कृतः अरिषड्वर्गस्य जयो येन सः कृतारिषड्वर्गजयः।
- अगम्यरूपाम् - अगम्यं रूपं यस्याः सा।
- मानवीम् - मनो इयं मानवी।
- अस्ततन्द्रिणा - अस्ता तन्द्रिर्यस्य येन वा सः अस्ततन्द्रिः।
- पौरुषम् - पुरुषस्येदं पौरुषम्।
- विभज्य - वि + भज् धातु क्त्वा + ल्यप्।
- वितन्यते - वि + तन् धातु, यक् लट् लकार। प्रथम पुरुष, एकवचन

### प्रयोग परिवर्तन

- कृतारिषड्वर्गजयः अगम्यरूपां मानवीं पदवीं प्रपित्सुः अस्ततन्द्रिः स पौरुषं नक्तन्दिवं विभज्य नयेन वितनोति।

### अलंकार आलोचना-

- यहाँ कृतारिषड्वर्गजयेन, मानवीं पदवीं प्रपित्सुना, और अस्ततन्द्रिणा तीनों विशेषण के परस्पर आकांक्षा अभिप्राय से परिकर अलंकार है।

### कोश:-

- पदवी- अयनं वर्त्ममार्गाध्वपन्थानः पदवी सृतिः।  
सरणिः पद्धतिः पद्या वर्त्तन्येकपदीति।

### कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:

कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:



पाठगत प्रश्न-3

11. दुर्योधन किस नीति से उद्योग का विस्तार करता है?
12. दुर्योधन के द्वारा क्या करके उद्योग का विस्तार किया जा रहा है?
13. काम, क्रोधादि छः शत्रुओं के ऊपर विजय प्राप्त करने वाले कैसी पद्धति को प्राप्त करने की इच्छा करते हैं?
14. अस्ततन्द्रिणा इसका क्या अर्थ है?
15. उद्योग का नाम क्या है?

मूल पाठ

सखीनिव प्रीतियुजोऽनुजीविनः समानमानान्सुहृदश्च बन्धुभिः।

स सन्ततं दर्शयते गतस्मयः कृताधिपत्यामिव साधु बन्धुताम्॥10॥

**अन्वय-** गतस्मयः स सन्ततम् अनुजीविनः प्रीतियुजः सखीन् इव सुहृदः च बन्धुभिः समानमानान् बन्धुतां कृताधिपत्याम् इव साधु दर्शयते।

**अन्वयार्थ-** विनष्ट हो गया है अभिमान जिसका ऐसा अभिमान रहित वह दुर्योधन सदैव सेवकों को स्नेहयुक्त मित्रों के समान, और मित्रों को बन्धुजनों की तरह समान सम्मान वाले भाई की तरह देखता है। बन्धुजनों को राज्य ग्रहण किए हुए अधिपति के समान अच्छी तरह से देखता है।

**सरलार्थ-** वह राजा दुर्योधन अहंकार को त्यागकर सेवकों को राजा के मित्र के समान मानता है। और वे अनुचर राजा को सखा मानते हैं। राजा दुर्योधन भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करता है। जो राजा के मित्र है उनको भाई के समान सत्कार वाला मानते हैं, राजा भी उनके साथ भाई के समान व्यवहार करता है। अपने भाई को राज्य के अधिपति के समान मानते हैं। इसी प्रकार वह अपनी साधुता प्रकट करता है।

**तात्पर्यार्थ-** इस श्लोक में सेवक और बन्धुओं के प्रति दुर्योधन का केसा व्यवहार है, वर्णित किया गया है। वह दुर्योधन अभिमान को त्यागकर सदैव सेवकों के साथ मित्र के समान आचरण करता है। सेवकों के प्रति उसके स्नेह को प्रदर्शित करता है। बन्धुओं के साथ सदैव भाई के समान आचरण करता है। इसीलिए बन्धुओं में भाइयों के समान सत्कार को करता है। और भाइयों के साथ इसी प्रकार आचरण करता है जिससे व्यक्ति सोचें कि उसने भाइयों में सब कुछ अर्पित कर दिया है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- गतस्मयः - गतः स्मयो यस्य स गतस्मयः। बहुब्रीह समास।
- प्रीतियुजः - प्रीत्या युंजन्ति ये ते प्रीतियुजः, तान् प्रीतियुजः।
- अनुजीविनः - अनु पश्चात् धावनेन जीवनं येषां तेऽनुजीविनः।
- समानमानान् - समानः मानो येषां ते समानमानाः।
- कृताधिपत्याम् - अधिपतेः कर्म आधिपत्यम्।

### सन्धि युक्त शब्द

- प्रीतियुजोऽनुजीविनः - प्रीतियुजः + अनुजीविनः। प्री + क्तिन्, युघ + क्विप्
- सुहृदश्च - सुहृदः + च।

### प्रयोग परिवर्तन-

- गतस्मयेन तेन सन्ततम् अनुजीविनः प्रीतियुजः सखायः इव दर्शयन्ते। सुहृदः बन्धुभिः समानमाना इव दर्शयन्ते। बन्धुता कृताधिपत्या इव साधु दर्शयते।

### अलंकार आलोचना-

- यहाँ छेकानुप्रास अलंकार है। वहाँ सकार और नकार की बार-बार आवृत्ति के कारण।

### कोश:-

- सखा - वयस्यः स्निग्धः सवया अथ मित्रं सखा सुहृत्।



### पाठगत प्रश्न-4

16. यहाँ कौन अभिमान रहित है?
17. वह सेवकों को किसके समान देखता है?
18. वह मित्र को किस रूप से देखता है?
19. वह बन्धु समूह को कैसे दिखलाता है?
20. समानमानान् इसका क्या अर्थ है?

## मूल पाठ

असक्तमाराधयतो यथायथं विभज्य भक्त्या समपक्षपातया।

गुणानुरागादिव सख्यमीयिवान् बाधतेऽस्य त्रिगणः परस्परम्॥11॥

अन्वय- यथायथं विभज्य समपक्षपातया भक्त्या असक्तम् आराधयतः अस्य गुणानुरागात् सख्यम् ईयिवान् इव त्रिगणः परस्परं न बाधते।

अन्वयार्थ- ठीक-ठीक उचित प्रकार से विभाजन करके धर्म अर्थ काम के मध्य में, इस समय में धर्म, इस समय में अर्थ, इस समय में काम इस प्रकार विभाग करके समान रूप से प्रेम से भक्ति से आसक्ति रहित होकर सेवन करते हुए इस दुर्योधन का तीन (धर्म अर्थ काम का समूह) गुणों के प्रति अनुराग होने से मित्रता को प्राप्त हुआ जैसा एक दूसरे को पीड़ित नहीं करते हैं।

सरलार्थ- वह धर्म, अर्थ और काम का समान रूप से सेवन करना चाहिए इस वचन को नहीं अपनाता है। वह राजा धर्म, अर्थ, काम का उचित रूप से विभाजन करके उचित समय पर उसका उपभोग करता है। अर्थात् जिस समय में जो पुरुषार्थ सेवित है तब उसका ही उपभोग करना अन्यथा नहीं। वे सभी पुरुषार्थ उस दुर्योधन में बिना कठिनाई के रहते हैं। इसीलिए उसके धर्म अर्थ और काम सदैव ही अत्यधिक वृद्धि को प्राप्त करते हैं।

### कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:

## कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में अनासक्त दुर्योधन कैसे समानुरागी पुरुषार्थों का सेवन करता है उसे ही वर्णित किया गया है। धर्म, अर्थ, और काम ये पुरुषार्थ परस्पर विरोधी हैं। फिर भी राजा दुर्योधन उनके सेवन के समय को विभाजित करके उनका अनासक्ति से सेवन करता है। वे सभी पुरुषार्थ उस दुर्योधन में बिना बाधा के रहते हैं। अर्थात् धर्माचरण के समय में अर्थ और काम धर्म को नहीं रोकते हैं। धनोपार्जन के समय में धर्म और काम अर्थ को नहीं रोकते। एवं काम सेवन के समय में धर्म और अर्थ भी काम को नहीं रोकते।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- समपक्षपातया - समः पक्षपातो यस्यां सा समपक्षपाता
- गुणानुरागात् - गुणेषु गुणानां वा अनुरागो।
- त्रिगणः - त्रयाणां गणः।
- आराधयतः - आ + राध् धातु + णिच् + शतृ।
- भक्त्या - भज् धातु क्तिन् प्रत्यय तृतीय एकवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- गुणानुरागादिव - गुणानुरागात् + इव।
- बाधतेऽस्य - बाधते + अस्य।

### प्रयोग परिवर्तन

- यथायथं विभज्य समपक्षपातया भक्त्या असक्तम् आराधयतः अस्य गुणानुरागात् सख्यम् ईयुषा त्रिगणेन परस्परं न बाध्यते।

### कोशः-

- असक्तम् - अनासक्तमसक्तं च पृथग्वर्ति पृथग् स्थितम्।
- यथायथम् - यथार्थं तु यथायथम्।



### पाठगत प्रश्न-5

21. आसक्ति रहित होकर सेवन करते हुए किन तीन का समूह एक-दूसरे को बाधा नहीं पहुँचाता?
22. दुर्योधन कैसी भक्ति से आसक्ति रहित होकर सेवन करता है?
23. दुर्योधन क्या एक-दूसरे को बाधा नहीं पहुँचाता?
24. त्रिगण का क्या नाम है?
25. दुर्योधन को त्रिवर्ग के प्रति अनुराग होने से क्या प्राप्त हुआ?



ध्यान दें:

## मूल पाठ

निरत्ययं साम न दानवर्जितं न भूरि दानं विरहय्य सत्क्रियाम्।  
प्रवर्तते तस्य विशेषशालिनी गुणानुरोधेन विना न सत्क्रिया॥12॥

**अन्वय-** तस्य निरत्ययं दानवर्जितं साम, न प्रवर्तते। सत्क्रियां विरहय्य भूरि दानं न प्रवर्तते। विशेषशालिनी सत्क्रिया गुणानुरोधेन विना न प्रवर्तते।

**अन्वयार्थ-** उस दुर्योधन का निष्कपट मधुर वचन साम दान रहित नहीं होता। उसका प्रचुर दान सत्कार के बिना प्रवृत्त नहीं होता। उसका विशेष रूप से सुशोभित होने वाली गुणों विद्या, सदाचार इत्यादि सद्गुणों के अनुराग के बिना प्रवृत्त नहीं होती है।

**सरलार्थ-** उस राजा दुर्योधन की साम नीति दान के बिना प्रवृत्त नहीं होती है। इसी प्रकार उस दुर्योधन का प्रशंसनीय सत्कार अनुराग के बिना प्रवृत्त नहीं होता है। अर्थात् उसकी सामनीति धन से युक्त है। जिसके ऊपर वह प्रसन्न होता है उसको धन देता है। और धन को सम्मानपूर्वक देता है न कि निरादर पूर्वक। अर्थात् गुणी पुरुष का ही वह सत्कार करता है न कि निर्गुणी का।

**तात्पर्यार्थ-** यहाँ इस श्लोक में 'राजनीति में चार प्रकार के साम, दान, दण्ड, भेद उपायों के विनियोग में दुर्योधन कुशल था' ऐसा जानते हैं। वह दुर्योधन जिस किसी के ऊपर प्रसन्न होकर वार्तालाप करता है। वहाँ वार्तालाप का फल माधुर्य ही नहीं है उसे धन भी देता है। आदर के बिना दान विफल है इसीलिए उचित प्रकार से सत्कार करके धन को देता है। वह जिस किसी का भी सत्कार करता है, एवं जो सत्कार योग्य गुणवान व्यक्ति वैसे ही करता है। अन्य उसकी नीतिकुशलता से परिचित होता है।

## व्याकरणात्मक टिप्पणी

- निरत्ययम् - निर्गतः अत्ययो यस्मात् तद्।
- दानवर्जितम् - दानेन वर्जितम्। तृतीया तत्पुरुष समास
- सत्क्रियाम् - सती चासौ क्रिया सत्क्रिया।
- गुणानुरोधेन - गुणानाम् अनुरोधः।
- प्रवर्तते - प्र + वृत्त धातु लट् लकार।

## प्रयोग परिवर्तन

- तस्य निरत्ययेन साम्ना दानवर्जितेन न प्रवृत्त्यते। सत्क्रियां विरहय्य भूरिणा दानेन न प्रवृत्त्यते। गुणानुरोधेन विना विशेषशालिन्या सत्क्रियया न प्रवृत्त्यते।

## अलंकार आलोचना

- यहाँ पूर्व पूर्व वाक्य के प्रति दूसरे दूसरे वाक्यों के विशेषण है इस कारण से एकावली नामक अलंकार है।

## कोश:-

- अत्ययः - अत्ययोऽतिक्रमे कृच्छ्रे दोषे दण्डेऽप्यथापदि।

कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:



पाठगत प्रश्न-6

26. दुर्योधन का निर्बाध साम कैसे प्रवृत्त नहीं होता है?
27. उसका प्रचुर दान कैसे प्रवृत्त नहीं होता?
28. उसका आदर कैसा है?
29. सत्कार कैसे प्रवृत्त नहीं होता?
30. यहाँ साम इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

वसूनि वाञ्छन् वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।

गुरुपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम्॥13॥

अन्वय- वशी सः दुर्योधनः, वसूनि वाञ्छन् न, मन्युना न, निवृत्तकारणः सन् स्वधर्मः एव एषः इति गुरुपदिष्टेन दण्डेन रिपौ वा सुते अपि धर्मविप्लवं निहन्ति।

**अन्वयार्थ-** जितेन्द्रिय वह दुर्योधन धन प्राप्त करने की इच्छा से नहीं, न ही क्रोध से, लोभ, क्रोध इत्यादि कारणों से रहित होकर, अपना धर्म है इसी रूप से गुरुओं के द्वारा उपदिष्ट दण्ड के द्वारा शत्रु अथवा मित्र में स्थित धर्म के उल्लंघन को दूर करता है। धर्म के उल्लंघन को दण्ड से निवृत्त करता है।

**सरलार्थ-** जितेन्द्रिय वह दुर्योधन धन प्राप्त करने की इच्छा से नहीं और न ही क्रोध से दण्ड देता है। अपितु लोभ, क्रोध इत्यादि कारणों से रहित होकर राजा यह मेरा धर्म है कि दण्डियों को दण्ड और अदण्डियों को क्षमा ऐसा मानकर धर्म का आचरण करता है। इसीलिए गुरुओं के द्वारा उपदिष्ट दण्ड के द्वारा शत्रु अथवा अपने पुत्र में स्थित धर्म के उल्लंघन को अर्थात् अधर्म को निवृत्त करता है।

**तात्पर्यार्थ-** इस श्लोक में राजा दुर्योधन की दण्डनीति की प्रशंसा की गई है। वह दुर्योधन दण्डनीति के प्रयोग में कुशल है। स्वयं जितेन्द्रिय, वह शत्रु को, पुत्र को दोनों को समान देखता है। एवं वह दण्डनीति में उचित प्रयोग से धर्म के उल्लंघन को नष्ट करके धर्म की रक्षा करता है। प्रजा के प्रति उसकी दृष्टि पक्षपात रहित है। धन लोभ से अथवा क्रोध से वह कभी भी किसी को दण्ड नहीं देता। अपितु धर्म की रक्षा के लिए इस भावना से वह अपराधियों को दण्ड देता है। कभी निर्दोष व्यक्ति को नहीं।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- निवृत्तकारणः - निवृत्तानि कारणानि यस्मात् स।
- गुरुपदिष्टेन - गुरुणा उपदिष्टः तेन।
- धर्मविप्लवम् - धर्मस्य विप्लवः धर्मविप्लवः तम् ।
- निहन्ति - नि + हन् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।
- वशी - वश् धातु इन् प्रत्यय प्रथमा एकवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- वांछन् - वांछन् + न।
- सुतेऽपि - सुते + अपि।

### प्रयोग परिवर्तन

- वशिना तेन , वसूनि वांछता न, मन्युना न, स्वधर्म एव इति निवृत्तकारणेन दुर्योधनेन गुरूपदिष्टेन दण्डेन रिपौ सुते अपि धर्मविप्लवो निहन्यते।

### अलंकार आलोचना-

- यहाँ वृत्ति अनुप्रास अलंकार है। तकार की बार बार आवृत्ति के कारण।

### कोश: -

- कारणम् हेतुर्ना कारणं बीजं निदानं त्वादिकारणम्।



### पाठगत प्रश्न-7

31. जितेन्द्रिय दुर्योधन क्या नष्ट करता है?
32. और वह क्या करते हुए नष्ट करता है?
33. वह किसकी सहायता से धर्म के उल्लंघन को नष्ट करता है?
34. वह किस में धर्म उल्लंघन को नष्ट करता है?
35. यहाँ मन्यु शब्द का क्या अर्थ है?



### पाठ सार

उस सम्राट राजा दुर्योधन ने द्यूत में छल से राज्य को जीता। कपट से प्राप्त राज्य को उत्तम राजनीति से वश में करने की चेष्टा करता है। आप आजकल वन में रहते हैं। वनवास खत्म होने पर आप पुनः जीतकर अपने राज्य को ग्रहण करेंगे। इससे वह सदैव शक्ति रहता है। इसीलिए नीति बल से वश में करने का प्रयत्न करता है। जिससे आप अपने राज्य का पुनरुद्धार न कर सके। आपके दया दानादि गुणों से सभी प्रजा आपके प्रति अत्यधिक अनुरागी है। उसे देखकर दुर्योधन शक्ति है, कि वनवास से वापिस आकर आप पुनः अपने राज्य को ग्रहण करेंगे। इसीलिए प्रजा जैसे उसके अधीन हो उसके लिए प्रयत्न करता है। वैसे ही अपने गुणों को अतिशय से प्रकट करता है। और अपने यश की कीर्ति करता है। क्योंकि दुर्जन के सम्पर्क की अपेक्षा महात्माओं के साथ विरोध भी अच्छा है। जिससे वैभव उत्कर्ष जाता है। काम क्रोध आदि छः शत्रुओं को विवेक से जीतकर मनु के द्वारा उपदिष्ट नीति से प्रजाशासन का पालन करता है। और उससे यश प्राप्ति की इच्छा करता है। इस समय में यह करना चाहिए, उस समय में वह करना चाहिए इस प्रकार से दिन को विभाजित करके उचित प्रकार से सारे कार्य को करता है। एवं आलस्य रहित होकर प्रजाओं में अपने उद्योग को प्रदर्शित करता है। वह राजा दुर्योधन अहंकार को त्यागकर सेवकों को साथ मित्र के समान मानता है। और वे सेवक राजा को सखा मानते हैं। राजा दुर्योधन भी उनके साथ वैसा ही व्यवहार करता है। एवं बन्धुओं को उसके भाई के समान मानता है। राजा भी उनके साथ भातृतुल्य

### कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:

कपटी दुर्योधन का धर्माचरण



ध्यान दें:

व्यवहार करता है। अपने भाई को राजा के समान मानता है। एवं वह अपनी साधुता को प्रकट करता है। वह धर्म, अर्थ, और काम का समान रूप से सेवन करना चाहिए इस वचन का अवलम्बन नहीं करता। वह राजा धर्म, अर्थ, काम का सम्यक् विभाग करके उचित समय पर उसका सेवन करते हैं। अर्थात् जिस समय में जो पुरुषार्थ सेवित है तब उसका ही सेवन करता है अन्यथा नहीं। इसीलिए वे सभी पुरुषार्थ उस दुर्योधन में बिना बाधा के ही रहते हैं। इसीलिए उसके धर्म, अर्थ, काम सदैव अत्यधिक वृद्धि को प्राप्त करते हैं। उस राजा दुर्योधन की साम नीति धन दान के बिना प्रवृत्त नहीं होती। उसका प्रचुर धन वितरण भी सत्कार के बिना प्रवृत्त नहीं होता। इसी प्रकार उस दुर्योधन का प्रशंसनीय सत्कार अनुराग के बिना प्रवृत्त नहीं होता। अर्थात् उसकी सामनीति धन युक्त है। जिसके ऊपर वह प्रसन्न होता है उसे धन को देता है। और धन को सम्मानपूर्वक देता है न कि निरादर करके। अर्थात् गुणी पुरुषों का ही वह सत्कार करता है न कि निर्गुणी का। जितेन्द्रिय वह दुर्योधन न तो धन प्राप्त करने की इच्छा से और न क्रोध से कोई भी दण्ड देता है। किन्तु लोभ आदि कारण से रहित होकर यह मेरा धर्म है की दण्डियों को दण्ड और अदण्डियों को क्षमा ऐसा मानकर धर्म का आचरण करता है। इसीलिए गुरुओं के द्वारा बताए गए दण्ड से शत्रु अथवा अपने मित्र में स्थित धर्म का उल्लंघन अर्थात् अधर्म को नष्ट करता है।



पाठान्त प्रश्न

1. मनवी पद्धति का क्या नाम है?
2. शत्रुषड्वर्ग कौन-से हैं?
3. कैसे दुर्योधन का त्रिवर्ग एक-दूसरे को बाधित नहीं करता?
4. मानवीय पद्धति को प्राप्त करने की इच्छा करने वाले दुर्योधन से किसके जैसा यत्न विधीत है?
5. युधिष्ठिर को नीति से जीतने के लिए दुष्ट दुर्योधन ने क्या किया?
6. दुर्योधन की साम दान आदि प्रयोग नीति कैसी थी?
7. उस दुर्योधन की दण्ड विधि कैसी थी इसका वर्णन करे?
8. समानार्थक धातु रूप को मिलाइए।

क-स्तम्भ

1. बाधते
2. तनोति
3. निहन्ति
4. समीहते
5. प्रवर्तते
6. दर्शयते

ख-स्तम्भ

- क. निवारयति।
- ख. बोधयते।
- ग. विस्तारयति।
- घ. प्रभवति।
- ङ प्रतिबध्नाति।
- च. चेष्टते।

उत्तराणि

- |      |      |      |
|------|------|------|
| 1. ङ | 2. ग | 3. क |
| 4. च | 5. घ | 6-ख। |



आपने क्या सीखा

1. दुर्योधन कैसे कपट से प्रजा को वश में करता है इस पाठ से जान चुके हैं।
2. राजा दुर्योधन राजनीति में कुशल था यह भी जान चुके हैं।
3. राज कार्य में दण्डनीति कैसी होनी चाहिए स्पष्ट होता है।
4. यदि राजा दुष्ट हो तो प्रजा की क्या अवस्था होती है ऐसा जानते हैं।
5. कैसे पदों का सन्धिविच्छेद करते हैं इस पाठ से समझा।
6. नए शब्दों के साथ उनके अर्थों का भी परिचय प्राप्त हुआ।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. दुर्योधन
2. पराजय को
3. नीति द्वारा
4. वन में निवास करने वाले युधिष्ठिर से।
5. भूमि को

उत्तर-2

6. दुर्योधन
7. दुर्योधन
8. आप को (युधिष्ठिर) जीतने की इच्छा से
9. ऐश्वर्य को बढ़ाता हुआ
10. प्रतारकः

उत्तर-3

11. दुर्योधन से
12. रात और दिन का विभाजन करके
13. दुर्लभ मनु द्वारा उपदिष्ट पद्धति को
14. आलस्य रहित
15. उद्योगकार

उत्तर-4

16. दुर्योधन
17. मित्रों के समान स्नेह युक्त

कपटी दुर्योधन का  
धर्माचरण



ध्यान दें:

कपटी दुर्योधन का  
धर्माचरण



ध्यान दें:

18. भाई तुल्य
19. अच्छे राज्य के स्वामी के समान
20. बन्धुओं के समान

उत्तर-5

21. दुर्योधन का
22. समान रूप से
23. त्रिवर्ग
24. धर्म, अर्थ, काम
25. मित्रता को

उत्तर-6

26. दान रहित नहीं
27. आदर के बिना
28. विशेष रूप से सुशोभित होने वाली
29. गुणों के अनुराग के बिना
30. मधुर वचन को

उत्तर-7

31. धर्म के उल्लंघन को
32. धन को न चाहता हुआ
33. गुरुओं के द्वारा उपदिष्ट दण्ड से
34. शत्रु और मित्र में
35. क्रोध



ध्यान दें:

21

## शंक्ति दुर्योधन का नीति कौशल

युधिष्ठिर से डरा हुआ भी दुर्योधन अपने को भय रहित प्रकट करता था। स्वयं अविश्वस्त होकर भी विश्वस्त के समान व्यवहार करता था। सन्देह युक्त होकर अपनी रक्षा के लिए विश्वसनीय बन्धुओं को अपने और दूसरे राज्य में सब जगह स्थापित कर रखा था। साम दाम दण्ड भेद चारों उपायों के विनियोग में कुशल दुर्योधन से उचित प्रकार से प्रयुक्त ये चार उपाय कैसे आपस में स्पर्धा करते उस दुर्योधन के सभी कार्यों में सफलता तथा समृद्धि सम्पादित करते थे उसे आप इस पाठ में जानेंगे। बहुत से राजा रथों अश्वों से व्याप्त दुर्योधन के सभा भवन के आंगन को कैसे शोभित करते थे वह भी जानेंगे। और इससे राजा दुर्योधन के प्रभुत्व की अत्यधिक विशेषता प्रकाशित हुई यह पढ़ेंगे। जब तक प्रजाओं के कल्याण में रत दुर्योधन का धन के स्वामी कुबेर के समान यह दया दान दक्षिणा आदि गुणों से कैसे पृथ्वी द्रवीभूत हुई। और उससे सम्मानित वीर योद्धा किस प्रकार हुए इस पाठ से हम जानेंगे। सभी राजा प्रसन्न होकर कैसे उसके शासन का अनुगमन करते थे यह बोध होगा। और उस राजा दुर्योधन से शास्त्र के अनुसार किस प्रकार से यज्ञों का अनुष्ठान करते थे यह स्पष्ट होगा। बलवान के साथ विरोध का दुष्परिणाम होता है।



### उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- दुर्योधन शंक्ति होकर क्या करता है यह जानने में;
- सभी राजा कैसे उसके अनुगत हुए यह जानने में;
- उसने प्रजाओं के कल्याण के लिए क्या-क्या किया था यह जानने में;
- उसके सैनिक कैसे थे यह जानने में;
- बलवान के साथ विरोध का क्या फल है यह जानने में;
- श्लोकों की अच्छी व्याख्या कैसे करनी चाहिए। यह जानने में;

शंक्ति दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

21.1 ) मूल पाठ

विधाय रक्षान्यरितः परेतरेणशङ्कितकारमुपैति शङ्कितः।  
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः॥1.14॥

अनारतं तेन पदेषु लम्बिता विभज्य समयग्विनियोगसत्क्रिया।  
फलन्त्युपायाः परिवृंहितायतीरुपेत्य संघर्षमिवाथसम्पदः॥1.15॥

अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।  
नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः॥1.16॥

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैरकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।  
वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति॥1.17॥

महौजसो मानधना धनार्चिता धनुर्भूतः संयति लब्धकीर्तयः।  
न संहतास्तस्य न भिन्नवृत्तयः प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्॥1.18॥

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।  
स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी॥1.19॥

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।  
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धुभिः प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः॥1.20॥

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिह्यमाननम्।  
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्॥1.21॥

स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं निधाय दुःशासनमिद्धशासनः।  
मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्॥1.22॥

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।  
स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेध्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता॥1.23॥

21.2 ) मूल पाठ

विधाय रक्षान्यरितः परेतरेणशङ्कितकारमुपैति शङ्कितः।  
क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः॥14॥

अन्वय- शंक्तिः सन्नपि परितः परेतरेण रक्षान् विधाय अशंकिताकारम् उपैति। क्रियापवर्गेषु अनुजीविसात्कृताः सम्पदः अस्य कृतज्ञतां वदन्ति।

अन्वयार्थ- सन्देह युक्त होकर वह दुर्योधन चारों ओर सर्वत्र अपने और दूसरे राज्य में आत्मीय जनों को रक्षक 'जो गूढ़ मन्त्रणा आदि से दूसरे के वृत्तान्त को जानने में कुशल' को नियुक्त करके सन्देह रहित आकार को धारण करता है। स्वयं सन्देह युक्त भी सन्देह रहित आकार को दिखाता है। कार्यों के समाप्त होने पर सेवकों को दी गई सम्पत्तियाँ दुर्योधन की कृतज्ञता को प्रकाशित करती है।

सरलार्थ- शत्रुओं के बल की अधिकता से राजा दुर्योधन सन्देह युक्त है। इसीलिए अपने और दूसरे राज्य में विश्वास पात्रों को रक्षक के रूप में स्थापित करके सन्देह रहित आकृति को प्राप्त करता है। मन में भय का भाव होने पर भी अपने को भय रहित प्रकट करता है। और कार्यों के खत्म होने पर अनुचरों को दी गई सम्पत्ति दुर्योधन के उपकार का प्रकाशन करती है।

**तात्पर्यार्थ-** यहाँ इस श्लोक में दुर्योधन के भय भाव, सुरक्षा व्यवस्था, तथा दानादि से उत्पन्न कृतज्ञता के भाव का निरूपण किया गया है। वैसे ही स्वयं हमेशा सन्देह युक्त होकर भी सन्देह रहित के समान व्यवहार करता है। और शंकित भयभीत भी निर्भीकता को दिखाता है। इसीलिए वह अपनी रक्षा के लिए विश्वासपात्र बन्धुओं को सब जगह स्थापित करके रहता है। और अपनी कृतज्ञता को प्रकट करने के लिए कार्य समाप्ति पर सेवकों को धन समर्पित करता है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- परेतरान् - परेभ्य इतरे परेतरे।
- अशंकितकारम् - शंका जाता अस्य इति शंकितः, न शंकितः अशंकितः, अशंकितः आकारो यस्मिन् इति अशंकितकारम् क्रिया विशेषणम्।
- कृतज्ञताम् - कृतं जानाति इति।
- विधाय - वि + धा धातु + क्तवा + (ल्यप्)
- उपैति - उप् + इण् धातु + लट् लकार।

### सन्धि युक्त शब्द

- क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः - क्रियापवर्गेषु + अनुजीविसात्कृताः।

### प्रयोग परिवर्तन

- शंकितेन तेन परितः परेतरान् रक्षान् विधाय अशंकितकारम् उपेयते। क्रियापवर्गेषु अनुजीविसात्कृताभिः सम्पद्धः अस्य कृतज्ञता उद्यते।

### अलंकार आलोचना

- यहाँ वृत्ति अनुप्रास अलंकार है। यहाँ रकार और तकार की आवृत्ति के कारण।

### कोश:-

- परितः - समन्ततस्तु परितः सर्वतो विश्वगित्यपि।



### पाठगत प्रश्न-1

1. कौन सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
2. और वह किसके जैसे होकर सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
3. और वह किस उपाय से सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
4. कैसी सम्पत्तियाँ उसकी कृतज्ञता को कहती हैं?
5. क्रियापवर्गेषु इसका क्या अर्थ है?

### मूल पाठ

अनारतं तेन पदेषु लम्बिता विभज्य समयग्विनियोगसत्क्रिया।  
फलन्त्युपायाः परिबृंहितायतीरुपेत्य संघर्षमिवाथसम्पदः॥15॥

### शंकित दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

**अन्वय-** तेन पदेषु सम्यक् विभज्य लम्बिताः विनियोगसत्क्रियाः उपायाः संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतीः अर्थसम्पदः अनारतं फलन्ति।

**अन्वयार्थ-** उस दुर्योधन के द्वारा स्थानों में, उपादेय वस्तुओं में, कर्तव्यों में समुचित रूप से विभाजन करके उचित विनियोग के द्वारा सत्कारवान यथा स्थान प्रयोग किए गए राजनीति के चार उपाय साम, दान, दण्ड, भेद परस्पर संघर्ष को प्राप्त करके स्थिर भविष्य वाली धनसम्पत्ति निरन्तर उत्पन्न करते हैं।

**सरलार्थ-** उस राजा दुर्योधन ने उपादेय वस्तुओं में, कर्तव्य के अनुसार उचित विभाग किया। और समुचित रूप से वे चार राजनीति के उपाय प्रयोग किए। और वे परस्पर स्पर्धा को प्राप्त करके उसकी धन सम्पत्ति को स्थिर करते हैं। अर्थात् उचित रूप से प्रयुक्त ये सभी उपाय सब जगह उसकी सफलता के लिए समृद्धि को प्राप्त करते हैं।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में वर्णित है कि साम दान दण्ड भेद चार उपायों के विनियोग में दुर्योधन कुशल है। और उससे उचित प्रयुक्त ये चार उपाय हैं। वे परस्पर स्पर्धा करते हुए दुर्योधन के सभी कार्यों में सफलता तथा समृद्धि को सम्पादित करते हैं।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- विनियोगसत्क्रियाः - विनियोग एव सत्क्रिया येषां। (बहुब्रीह समास)
- अर्थसम्पदः - अर्थाः एव सम्पदः अर्थसम्पदः।
- परिबृंहितायतीः - परिबृंहितः आयतिः यासां ताः परिबृंहितायतः। (बहुब्रीह समास)
- लम्बिताः - लभ् धातु, क्त प्रत्यय, प्रथम पुरुष बहुवचन।
- विभज्य - वि + भज् धातु + क्त्वा + (ल्यप्)

**सन्धि युक्त शब्द**

- सम्यग्विनियोगसत्क्रिया - सम्यक् + विनियोगसत्क्रिया।
- फलन्त्युपायाः - फलन्ति + उपायाः।

**प्रयोग परिवर्तन**

- तेन पदेषु सम्यक् विभज्य लम्बितैः विनियोगसत्क्रियैः उपायैः संघर्षम् उपेत्य इव परिबृंहितायतयः अर्थसम्पदः फलयन्ते।

**कोश:-**

- अनारतम् - 'सततानारताश्रान्तसन्तताविरतानिशम्।'



**पाठगत प्रश्न-2**

6. किसके द्वारा और कहाँ वे उपाय प्रयोग किए गए?
7. वे पदों में और उसके द्वारा कैसे प्रयोग किए गए?

8. वे उपाय कैसे और क्या उत्पन्न करते हैं?
9. प्रयोग किए गए वे उपाय किसको फलते हैं?
10. परिबृंहितायती: इसका क्या अर्थ है?

**अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयमास्थाननिकेतनाजिरम्।**

**नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रतां भृशं नृपोपायनदन्तिनां मदः॥16॥**

**अन्वय-** अयुग्मच्छदगन्धिः नृपोपायनदन्तिनां मदः अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयम् आस्थाननिकेतनाजिरं भृशम् आर्द्रतां नयति।

**अन्वयार्थ-** सप्तवर्ण नामक वृक्ष के पुष्प के समान गन्ध वाला राजाओं के द्वारा उपहार में दिए गए हाथियों का मदजल अनेक राजाओं के रथों और घोड़ों से भरे हुए अनेकों राजाओं क्षत्रियों के रथों अश्वों से भरे हुए उस दुर्योधन के सम्बन्धी आस्था निकेतन के अर्थात् सभा भवन के आंगन को अत्यधिक गीला करता है।

**सरलार्थ-** सप्तपर्णी पुष्प की सुगन्ध के समान सुगन्धयुक्त राजाओं के उपहार भूत हाथियों का मदजल दुर्योधन के आंगन को गीला करता है। और उसके सभा भवन का आंगन बहुत से राजाओं के रथों घोड़ों से व्याप्त हैं। इससे राजा दुर्योधन की प्रभुता का अतिशय विशेष रूप से प्रकाशित होता है।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में दुर्योधन के अतिशय प्रभाव को निरूपित किया गया है। अनेकों राजा उस राजा के लिए बहुत से मदमत्त हाथी और अश्वों की इच्छा करते हैं। उन हाथी अश्व आदि से उस राजा के सभा भवन का आंगन हर क्षण भरा रहता। हाथियों के मद जल से गीला होता है। एवं हाथियों से भरा हुआ उसका आंगन दुर्योधन की अतिशय प्रभुता को प्रकाशित करता है।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलम्- राज्ञां समूहो राज्ञाम् अपत्यानि पुमांसो वा राजन्याः क्षत्रियाः। अनेके राजन्या इति अनेकराजन्याः। रथाश्च अश्वाश्च इति रथाश्वम्, तेषाम् अनेकराजन्यानां रथाश्वं तद् अनेकराजन्यरथाश्वं, तेन अनेकराजन्यरथाश्वेन संकुलम् इति अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलम्।
- आस्थाननिकेतनाजिरम्- आस्थानस्य निकेतनम् आस्थाननिकेतन, तस्य आस्थाननिकेतनस्य आजिरमिति आस्थाननिकेतनाजिरम्।
- अयुग्मच्छदगन्धिः - अयुग्मानि विषमाणि सप्त छदाः पत्राणि यस्य सः, अयुग्मच्छदः। अयुग्मच्छदस्य गन्ध इव गन्धो यस्य सः अयुग्मच्छदगन्धिः।
- नृपोपायनदन्तिनाम् - उपायनानि दन्तिनः इति उपायनदन्तिनः। नृपाणां ये उपायनदन्तिनः ते नृपोपायनदन्तिनः, तेषां नृपोपायनदन्तिनाम्।

### सन्धि युक्त शब्द

- नयत्ययुग्मच्छदगन्धिरार्द्रताम् - नयति + अयुग्मच्छदगन्धिः + आर्द्रताम्।

### प्रयोग परिवर्तन

- अयुग्मच्छदगन्धिना नृपोपायनदन्तिनां मदेन अनेकराजन्यरथाश्वसंकुलं तदीयम् आस्थाननिकेतनाजिरं भृशम् आर्द्रतां नीयते।

## शंक्ति दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

शंक्ति दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

कोश: -

- आजिरम् - अंगनं चत्वरज्जिरे।



पाठगत प्रश्न-3

11. दुर्योधन के आंगन को क्या गीला करता है?
12. और उसे कैसे गीला करता है?
13. और उसे किस प्रकार का?
14. उसके सभा भवन के आंगन को क्या गीला करता है?
15. अयुग्मच्छदगन्धि: इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

सुखेन लभ्या दधतः कृषीवलैरकृष्टपच्या इव सस्यसम्पदः।

वितन्वति क्षेममदेवमातृकाश्चिराय तस्मिन्कुरवश्चकासति॥17॥

अन्वय- चिराय तस्मिन् क्षेमं वितन्वति सति अदेवमातृकाः कुरवः अकृष्टपच्याः इव कृषिवलैः सुखेन लभ्याः सस्यसम्पदः दधतः चकासति।

**अन्वयार्थ-** बहुत समय से, उस दुर्योधन के प्रजाओं का कल्याण करते रहने पर पर्जन्य के ऊपर आश्रित न रहने वाला नहरों के जल के द्वारा सींचा जाने वाला कुरु देश जुताई के बिना ही पकी हुई सी किसानों के द्वारा सुख पूर्वक, अल्प प्रयास से प्राप्त होने वाली फसलों की सम्पत्तियों को धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है।

**सरलार्थ-** चिरकाल से दुर्योधन प्रजाओं का कल्याण करते हैं। उस कल्याण विधान समय में अप्राकृतिक नदियों के द्वारा नदियों के जल पर आश्रित होकर ही कुरु देश जीवनयापन कर रहा है। हलादि के द्वारा जुताई के बिना ही ये कुरुदेश फसलों का उत्पादक है। उससे किसानों को फसलें अल्प प्रयास से प्राप्त हो सके। एवं फसलों की समृद्धि को धारण करता हुआ कुरुदेश सुशोभित हो।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में प्रतिपादित है कि प्रजाओं के हित के लिए दुर्योधन संलग्न है। उसके ही प्रयास से समृद्ध कुरुदेश शोभित होता है। वैसे ही प्रजा पालन के लिए दुर्योधन ने अप्राकृतिक जल प्रवाह को निर्मित करा कर अपने राज्य को नहरों के जल के द्वारा सींचा जाने वाला करता है। जिससे प्रजा सुख से फसलों का उत्पादन कर सके। और अपने राज्य से अन्नाभाव को दूर करें। एवं प्रजाओं के अनुरंजन से प्रसिद्ध वह दुर्योधन सरलता से वश में करने योग्य नहीं है। ऐसा यहाँ फलित है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- देव एवं माता येषां ते देवमातृकाः, न देवमातृका इति अदेवमातृकाः।
- कृषीवलैः - कृषिरस्ति येषां ते कृषीवलास्तैः कृषीवलैः।
- रजः कृषि- वलच् प्रत्यय।
- अकृष्टपच्याः - कृष्टेन पच्यन्ते इति कृष्टपच्याः, न कृष्टपच्याः इति अकृष्टपच्याः।



- लभ्याः - लभ् धातु + यत् प्रत्यय।
- चकासति- चकास् धातु, लट्, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- कृषिवलैरकृष्टपच्याः- कृषिवलैः + अकृष्टपच्याः।
- अदेवमातृकाश्चिराय - अदेवमातृकाः + चिराय।

### प्रयोग परिवर्तन

- चिराय तस्मिन् क्षेमं वितन्वति सति अदेवमातृकैः कुरुभिः अकृष्टपच्या इव कृषिवलैः सुखेन लभ्याः दधद्धिः चकास्यते।

### कोशः-

- देवमातृकः - देशो नद्यम्बुवृष्टयम्बुसम्पन्नव्रीहिपालितः। स्यान्नदीमातृको देवमातृकश्च यथाक्रमम्।



### पाठगत प्रश्न-4

16. कुरु देश क्या धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है?
17. और उनको सम्पत्ति किस सुख से प्राप्त होने वाली है?
18. कुरु देश में कैसे उन्हें समृद्धि प्राप्त हुई?
19. कुरु जनपद कब से फसलों की समृद्धि को धारण करते हुए सुशोभित हो रहा है?
20. अदेवमातृका इसका क्या अर्थ है?

## मूल पाठ

उदारकीर्तेरुदयं दयावतः प्रशान्तबाधं दिशतोऽभिरक्षया।

स्वयं प्रदुग्धेऽस्य गुणैरुपस्नुता वसूपमानस्य वसूनि मेदिनी॥18॥

**अन्वय-** उदारकीर्तः दयावतः अभिरक्षया प्रशान्तबाधम् उदयं दिशतः वसूपमानस्य अस्य गुणैः उपस्नुता मेदिनी स्वयं वसूनि प्रदुग्धे।

**अन्वयार्थ-** विशाल कीर्ति यश वाले अर्थात् महायशस्वी, दयालु करुणा से युक्त, रक्षा के द्वारा, शान्त हो गई बाधा वाले उपद्रव रहित अभ्युदय उन्नति को सम्पादित करते हुए कुबेर के तुल्य इस दुर्योधन के गुणों दया, दान, वीरता के द्वारा द्रवीभूत पृथ्वी अपने आप धनों को प्रदान करती है।

**सरलार्थ-** महायशस्वी दुर्योधन सदैव दयावान होकर प्रजा की रक्षा करता है। तथा संरक्षण से प्रजाओं में निर्विघ्न वृद्धि को सम्पादित करता है। कुबेर के समान इस दुर्योधन के दया, दान, दक्षिणा आदि गुणों से पृथ्वी द्रवीभूत हुई। एवं पृथ्वी द्रवीभूत होकर स्वयं ही धन को दे रही है। अर्थात् मांगें बिना ही सुख से धन को देती है।

**तात्पर्यार्थ-** कैसे उत्तम गुणों से भूषित दुर्योधन सारी प्रजा की रक्षा करता है। और कैसे उस प्रजाओं की उन्नति को सिद्ध करता है। वह ही इस श्लोक में वर्णित किया गया है। जैसे कोई नई प्रसूता गाय कोमल पत्तों से तुष्ट होकर स्वयं दूध को क्षरती है। उसी के समान बिना जल के देश में प्रजा के कल्याण से सन्तुष्ट प्रजा राजा की आज्ञा के बिना ही समय पर कर देती है।

## शंक्ति दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

शंक्ति दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- उदारकीर्तेः - उदारा कीर्तिर्यस्य स उदारकीर्तिः, तस्य उदारकीर्तेः। (बहुब्री समास)
- दयावतः - दयाऽस्यास्तीति दयावान्, तस्य दयावतः।
- वसूपमानस्य - वसुः उपमानं यस्य स वसूपमानः। (बहुब्रीह समास)
- दिशतः- दिश् धातु + शतृ प्रत्यय
- प्रदुग्धे - प्र + दुह् धातु, आत्मने पद, लट् लकार।

सन्धि युक्त शब्द

- उदारकीर्तेरुदयम् - उदारकीर्तेः + उदयम्।
- दिशतोऽभिरक्षया - दिशतः + अभिरक्षया।

प्रयोग परिवर्तन

- उदारकीर्तेः दयावतः अभिरक्षया प्रशान्तबाधम् उदयं दिशतः वसूपमानस्य अस्य गुणैः उपस्तुतया मेदिन्या स्वयं वसूनि प्रदुह्यन्ते।

कोशः -

- दया- कृपा दयाऽनुकम्पा स्याद्



पाठगत प्रश्न-5

21. पृथ्वी अपने आप क्या करती है?
22. और वह किस प्रकार की है?
23. यहाँ दुर्योधन किससे उपमित है?
24. वह दुर्योधन किस प्रकार अभ्युदय को सम्पादित करता है?
25. कैसे दुर्योधन प्रजा की रक्षा करता है?

मूल पाठ

महौजसो मानधना धनार्चिता धनुर्भृतः संयति लब्धकीर्तयः।

न संहतास्तस्य न भिन्नवृत्तयः प्रियाणि वाञ्छन्त्यसुभिः समीहितुम्।११॥

अन्वय- महौजसः मानधनाः धनार्चिताः संयतिल लब्धकीर्तयः धनुर्भृतः न संहताः न भिन्नवृत्तयः अपि तु तस्य असुभिः प्रियाणि समीहितुं वाञ्छन्ति।

अन्वयार्थ- महाबलशाली अत्यधिक पराक्रमी, मान ही है धन जिसका अर्थात् अभिमानी, मनस्वी, धन से पूजित किए गए युद्ध में कीर्ति को प्राप्त किए हुए संगठित न होने वाले और प्रतिकूल आचरण न करने वाले, सभी योद्धा उस दुर्योधन के अपने प्राणों से भी प्रिय कार्यों को करना चाहते हैं।

सरलार्थ- महा तेजस्वी, प्रचुर धन दान से सम्मानित दुर्योधन के वीर योद्धा युद्ध में कीर्ति को प्राप्त

हैं। और वे धनुर्धारी अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए नहीं आते। और वे अपने राजा के विरुद्ध नहीं हैं। परन्तु स्वामी के उद्देश्य के साधक ही हैं। और उसके लिए अपने प्राण देने की भी वे इच्छा रखते हैं।

**तात्पर्यार्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में महाकवि भारवि ने वीर सैनिकों के सुन्दर गुणों का वर्णन किया है। वे राजा के हित के साधक हैं। सरल उपाय से वह दुर्योधन वश में नहीं होगा यह वनेचर का अभिप्राय है। क्योंकि वे तेजस्वी धनुर्धारी योद्धा अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए नहीं आते। अपितु वे अपने स्वामी के उद्देश्य को अपने प्राणों से भी सम्पादित करने की इच्छा करते हैं।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- महौजसः - महद् ओजो येषां ते- बहुव्रीहि समास।
- मानधनाः - मान एव धनं येषां ते- बहुव्रीहि समास।
- लब्धकीर्तयः - लब्धा कीर्तियैस्ते लब्धकीर्तयः- बहुव्रीहि समास।
- धनुर्भृतः - धनूंषि विभ्रतीति धनुर्भृत्।
- समीहितुम् - सम् + इह धातु तुमुन् प्रत्यय।

### सन्धि युक्त शब्द

- वाञ्छन्त्यसुभिः - वाञ्छन्ति + असुभिः।
- संहतास्तस्य - संहताः + तस्य।

### प्रयोग परिवर्तन

- महौजोभिः मानधनैः धनार्चितैः धनुर्भृद्भिः संयति लब्धकीर्तिभिः न संहतैः न भिन्नवृत्तिभिः भूयन्ते। किन्तु असुभिरपि प्रियाणि समीहितुं वाञ्छयन्ते।

### कोशः-

- असुः - पुंसि भूम्यसवः प्राणाश्चौवं जीवोऽसुधारणम्।



### पाठगत प्रश्न-6

26. दुर्योधन के सैनिक कैसे हैं?
27. वे कहाँ कीर्ति को प्राप्त करने वाले हैं?
28. वे क्या करना चाहते हैं?
29. और कैसे वे इच्छा करते हैं?
30. वे योद्धा किस प्रकार के हैं?

### मूल पाठ

महीभृतां सच्चरितैश्चरैः क्रियाः स वेद निःशेषमशेषितक्रियः।  
महोदयैस्तस्य हितानुबन्धुभिः प्रतीयते धातुरिवेहितं फलैः॥20॥

### शंक्ति दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

शंक्ति दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

**अन्वय-** अशेषितक्रियः सच्चरितैः चरैः महीभृतां क्रियाः निःशेषं वेद। हितानुबन्धिभिः महोदयैः धातुः ईहितम् इव तस्य ईहितम् फलैः प्रतीयते।

**अन्वयार्थ-** कार्यो को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने वाला, कार्यो को अपूर्ण न छोड़ने वाला वह दुर्योधन शुद्ध चरित वाले गुप्तचरो के द्वारा दूसरे राजाओ की क्रिया को पूरी तरह से जानता है। हितकारी परिणाम वाले सदैव कल्याण के लिए तत्पर अत्यधिक उत्कर्ष करने वाले विधाता की तरह उस दुर्योधन की चेष्टा को परिणामों के द्वारा जाना जाता है।

**सरलार्थ-** सारे राजकार्यो को समाप्त करके वह दुर्योधन शुद्ध चरित्र और उत्तम गुप्तचरो के द्वारा सभी राजाओ के व्यवहार को गुप्त रूप से जानता है, परन्तु जैसे ईश्वर की क्या करने की इच्छा है उसके कार्यो से ही जाना जाता है। उसी प्रकार उस दुर्योधन के मन की चेष्टा उसके हितकारी परिणामों से ही जानी जाती है।

**तात्पर्यार्थ-** महाकवि भारवि ने प्रस्तुत इस श्लोक में अपने मन्त्र का गोपन तथा दूसरे वृत्तान्त के ज्ञान में दुर्योधन की गुप्तचर व्यवस्था को निरूपित किया है। वैसे ही दुर्योधन ने गुप्तचरो की सहायता से सभी राजाओ के सम्पूर्ण गूढ़ व्यवहार को जानता है। उसका मानसिक संकल्प उसके कार्य के परिणाम द्वारा प्रतीत होता है। इसीलिए उसे सरलता से नहीं जाना जा सकता।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- महीभृताम् - महीं बिभ्रतीति महीभृतः।
- सच्चरितैः- सत् चरितं येषां ते सच्चरिताः। बहुव्रीहि समास।
- अशेषितक्रियः - न शेषिता अशेषिता इति - न् तत्पुरुषा, अशेषिता क्रिया येन सः- बहुव्रीहि समास।
- हितानुबन्धिभिः - हितम् अनुबध्न्तीति।
- वेद - विद्, धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष एकवचन।

**सन्धि युक्त शब्द**

- सच्चरितैश्चरैः- सच्चरितैः + चरैः।
- धातुरिवेहितम् - धातुः + इव + ईहितम्।
- महोदयैस्तस्य - महोदयैः + तस्य।

**प्रयोग परिवर्तन**

- अशेषितक्रियेण येन दुर्योधनेन सच्चरितैश्चरैरन्येषां महीभृतां क्रियाः ज्ञायन्ते विद्यन्ते। हितानुबन्धिना महोदया धातुरीहितमिव तस्य चेष्टितम् फलैः प्रतीयन्ति।

**अलंकार आलोचना**

- इस श्लोक में भी धातुरिव उसके साम्य प्रतिपादन से उपमा अलंकार है।

**कोशः-**

- धाता - स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा विधाता विश्वसृग्विधिः।



### पाठगत प्रश्न-7

31. दुर्योधन किसके कार्यों को पूरी तरह से जानता है?
32. और वह किससे उसे जानता है?
33. और वह दुर्योधन किस प्रकार का है?
34. विधाता की चेष्टा किससे प्रतीत होती है?
35. किस प्रकार के फल से दुर्योधन की चेष्टा प्रतीत होती है?

### मूल पाठ

न तेन सज्यं क्वचिदुद्यतं धनुः कृतं न वा कोपविजिह्वमाननम्।  
गुणानुरागेण शिरोभिरुह्यते नराधिपैर्माल्यमिवास्य शासनम्॥21॥

**अन्वय-** तेन क्वचित् सज्यं धनुः न उद्यतं वा कोपविजिह्वम् आननम् न कृतं गुणानुरागेण नराधिपैः अस्य शासनं माल्यमिव शिरोभिः उह्यते।

**अन्वयार्थ-** उस राजा दुर्योधन के द्वारा कहीं भी प्रत्यंचा से युक्त धनुष को न उठाया गया न ऊपर किया गया। अथवा क्रोध से मुख को टेढ़ा नहीं किया गया। राजाओं के द्वारा इस दुर्योधन का आदेश वचन, दया दाक्षिण्यादि गुणों के अनुराग से पुष्प माला की तरह सिरों से धारण किया जाता है।

**सरलार्थ-** उस राजा दुर्योधन के द्वारा कहीं भी प्रत्यंचा से युक्त धनुष नहीं उठाया गया। अथवा अपने मुख को क्रोध से टेढ़ा नहीं किया। फिर भी राजाओं के द्वारा इस दुर्योधन के आदेश वचनों को सादर पुष्प माला के समान स्वीकार किया जाता है। जैसे सूत्रों गुम्फित पुष्प माला अपने मस्तक पर सादर धारण करते हैं। अर्थात् सभी राजा प्रसन्न होकर उसकी आज्ञा का अनुगमन करते हैं।

**तात्पर्यार्थ-** सद्गुणों से अलंकृत दुर्योधन का समृद्ध प्रभाव यहाँ निरूपित किया है। अब कोई भी राजा दुर्योधन के प्रतिकूल आचरण नहीं करता। उसने भी कभी क्रोध से लोगों को वश में करने के लिए धनुष नहीं उठाया। न उसने कभी मुख पर क्रोध विकार दिखाया। फिर भी उसके गुणों के समूह से वशीकृत राजा उसकी आज्ञा को माला की तरह अपने मस्तक पर स्वीकार करते हैं।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- सज्यम् - ज्यया सहितं सज्यम्। तृतीय तत्पुरुषः।
- कोपविजिह्वम् - कोपेन विजिह्वां।
- गुणानुरागेण - गुणेषु अनुरागो गुणानुरागः।
- नराधिपैः - नराणामधिपा नराधिपा।
- उह्यते - वह धातु, कर्मणि, लट् लकार।

### सन्धि युक्त शब्द

- शिरोभिरुह्यते - शिरोभिः + उह्यते।
- नराधिपैर्माल्यम् - नराधिपैः + माल्यम्।

## शंक्ति दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

शंक्ति दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

प्रयोग परिवर्तन

- स क्वचित् सज्यं धनुः नोद्यतवान्। वा कोपविजिह्वम् आननं न कृतवान्। नराधिपाः गुणानुरागेण अस्य शासनं माल्यमिव शिरोभिः वहन्तीति।

अलंकार आलोचना

- इस श्लोक में माल्यमिव शासनम् इन दोनों में साम्य प्रतिपादन से उपमा अलंकार है।

कोश:-

- कोपः - कोपक्रोधामर्षरोषप्रतिघा रुट् ऋधौ खियौ।



पाठगत प्रश्न-8

36. दुर्योधन के द्वारा क्या कहीं भी नहीं उठाया गया?
37. और उसने मुख को किस प्रकार नहीं किया?
38. राजाओं के द्वारा क्या सिरों से धारण की जाती है?
39. और वह किसके समान सिरों से धारण की जाती है?
40. राजाओं के द्वारा किसलिए आज्ञा को सिरों से स्वीकार किया जाता है?

मूल पाठ

स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं निधाय दुःशासनमिद्धशासनः।

मखेष्वखिन्नोऽनुमतः पुरोधसा धिनोति हव्येन हिरण्यरेतसम्॥22॥

अन्वय- इद्धशासनः सः यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं दुःशासनं निधाय मखेषु अखिन्नः पुरोधसा अनुमतः सन् हव्येन हिरण्यरेतसं धिनोति।

अन्वयार्थ- प्रज्वलित शासन वाला जिसके आदेश का उल्लंघन नहीं करता वह दुर्योधन युवराज के पद पर नई युवावस्था के कारण प्रबल दुशासन को अर्थात् अपने छोटे भाई को युवराज पद पर नियुक्त करके यज्ञों में बिना खिन्न हुए पुरोहित के द्वारा अनुमति प्राप्त करके हवि के द्वारा अग्नि को तृप्त करता है।

सरलार्थ- अनतिक्रमणीय शासन वाले दुर्योधन ने युवराज के पद पर अपने छोटे भाई दुशासन को नियुक्त किया। और स्वयं निश्चित होकर पुरोहितों के आदेशानुसार हवि से अग्नि को प्रसन्न करता है। और वह दुर्योधन यज्ञादि कर्मों में प्रसन्न होकर धर्म का आचरण करता है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में महाकवि भारवि ने दुर्योधन के धर्माचरण को निरूपित किया है। वैसे ही सामादि से राज्य को सुदृढ़ करके देवों की सहायता के लाभ के लिए यज्ञादि धर्म कर्म से धर्म का आचरण करता है। और उसके लिए राजकार्य के संचालन का भार दुर्योधन ने अपने भाई को दे दिया। और पुरोहित की आज्ञा अनुसार यज्ञादि का अनुष्ठान आरम्भ किया।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- यौवराज्ये- युवा चासौ राजा चेति युवराजः - कर्मधारय समास। तस्य कर्म यौवराज्यम् - तत्पुरुष समास।

- नवयौवनोद्धतम् - नवं चासौ यौवनं - कर्मधारय समास, नवयौवनेन उद्धतो नवयौवनोद्धतः - तृतीय तत्पुरुष।
- इद्धशासनम् - इद्धं शासनं यस्य स- बहुव्रीहि समास
- हिरण्यरेतसम् - हिरण्यं रेतो यस्य स हिरण्यरेताः - बहुव्रीहि समास
- निधाय - नि + धा धातु + क्त्वा + ल्यप् प्रत्यय।

### सन्धि युक्त शब्द

- मखेष्वखिन्नोऽनुमतः - मखेषु + अखिन्नः + अनुमतः।

### प्रयोग परिवर्तन

- तेन इद्धशासनेन यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं दुःशासनं निधाय मखेषु अखिन्नेन पुरोधसाऽनुमतेन हव्येन हिरण्यरेताः धिन्व्यते।

### कोशः -

- हिरण्यरेतः - हिरण्यरेतहुतभुग्दहनो हव्यवाहनः इति।



### पाठगत प्रश्न-9

41. किस प्रकार से दुर्योधन अग्नि को प्रसन्न करता है?
42. उसने कहाँ और किसे नियुक्त किया?
43. दुर्योधन किसके द्वारा अग्नि को तृप्त करता है?
44. किस विषय में दुर्योधन निरन्तर अग्नि को तृप्त करता है?
45. और वह किसकी अनुमति से अग्नि को तृप्त करता है?

## मूल पाठ

प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।

स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेध्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता॥23॥

**अन्वय-** स प्रलीनभूपालं स्थिरायति आवारिधि भुवः मण्डलम् प्रशासत् अपि त्वत् एष्यतीः भियः, चिन्तयति एव। अहो बलवद्विरोधिता दुरन्ता भवति।

**अन्वयार्थ-** वह दुर्योधन विलीन हो गए है राजा जिसमें उस शत्रुभूत राजाओं से रहित निश्चित भविष्य वाले समुद्र पर्यन्त भूमण्डल पर शासन करता हुआ भी आप से आने वाली विपत्तियों को सोचता है। आश्चर्य है बलवानों के साथ शत्रुता दुःखमय फल वाली होती है।

**सरलार्थ-** सभी राजाओं को पराजित करके शत्रुरहित बहुत समय तक स्थायी सम्पूर्ण पृथ्वी का वह दुर्योधन नहीं अकेला शासक है। किन्तु अपनी पराजय से शंक्ति वह आपसे डरता है। इसीलिए वह सुख से नहीं रह सकता। क्योंकि बलवान के साथ विरोध दुष्परिणामी होता है।

**तात्पर्यार्थ-** इस श्लोक में महाकवि भारवि ने वर्णित किया है कि दुर्योधन शत्रुरहित पृथ्वी का

### शंक्ति दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

शंकित दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

अकेला शासक है। परन्तु फिर भी वह अपनी पराजय से शंकित युधिष्ठिर से डरता है। क्योंकि बलवानों के साथ विरोध सदैव समूलनाश के लिए ही होता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- प्रलीनभूपालम् - प्रलीना भूपाला यस्मिन् तत् प्रलीनभूपालम् बहुव्रीहि समास।
- स्थिरायति - स्थिरा आयति: यस्य तत् - बहुव्रीहि समास।
- आवारिधि - आ वारिधिभ्य इति। - अव्ययीभाव समास।
- बलवद्विरोधिता - बलमस्यास्तीति बलवान्, बलवद्धि: विरोधिता। तृतीय तत्पुरुष।
- प्रशासत् - प्र +शास् धातु, लट् लकार, शतृ प्रत्यय।
- एष्यती: - इण् धातु, लृट् लकार, शतृ प्रत्यय। स्त्रीलिङ्ग में डीप्

सन्धि युक्त शब्द

- चिन्तयत्येव - चिन्तयति + एव।
- भियस्त्वदेष्यतीरहो - भिय: + त्वदेष्यती: + अहो।

प्रयोग परिवर्तन

- तेन दुर्योधनेन प्रलीनभूपालं स्थिरायति, आवारिधि भुवो मण्डलं प्रशासता, त्वदेष्यत्यो भियः, चिन्त्यन्ते एव। अहो बलवद्विरोधितया दुरन्तया भूयते।

अलंकार आलोचना

- यहाँ चतुर्थ पाद से तीनों चरणों के अर्थ के समर्थन से अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

कोश:-

- भी: - भीतिर्भी: साध्वसं भयम्।



पाठगत प्रश्न-10

46. वह दुर्योधन किस प्रकार के मण्डल को शासित करता है?
47. बलवान से विरोध कैसा होता है?
48. वह क्या चिन्तन करता है?
49. प्रलीनभूपालम् इसका क्या अर्थ है?
50. आवारिधि इसका क्या अर्थ है?



पाठ सार

शत्रुओं के बल के आधिक्य से राजा दुर्योधन शंकित है। इसीलिए अपने और दूसरे के राज्य में बन्धुजनों को रक्षक के रूप में नियुक्त करके सन्देह रहित आकृति को प्राप्त करता है। मन में भय का



अनुभव होते हुए भी अपने को भय रहित प्रकट करता है। और कार्यों के खत्म होने पर सेवकों को समर्पित सम्पत्तियाँ दुर्योधन की कृतज्ञता को प्रकाशित करती है। उस राजा दुर्योधन ने उपादेय वस्तुओं में कर्तव्य के अनुसार उचित प्रकार से विभाजित किया। और समुचित रूप से वे चार उपाय राजनीति में प्रयुक्त हैं। और वे आपस में स्पर्धाभाव को प्राप्त करके उसकी धन सम्पत्ति को स्थिर करते हैं। अर्थात् समुचित रूप से प्रयुक्त ये सभी उपाय सब जगह उसकी सफलता समृद्धि को देते हैं। सप्तपर्णी पुष्प की सुगन्ध के समान सुगन्ध युक्त राजाओं के द्वारा उपहार में दिए गए हाथियों के मदजल से दुर्योधन का आंगन आर्द्रता को प्राप्त करता है। और वह सभा भवन का आंगन बहुत से राजाओं के रथों और अश्वों से व्याप्त है। इससे राजा दुर्योधन की प्रभुता का आधिक्य विशेष रूप से प्रकाशित होता है। बहुत समय से दुर्योधन प्रजाओं के कल्याण का वितरक है। उसके मंगल विधान समय में अप्राकृतिक नदियों का आश्रय लेकर ही कुरु देश जीवित हैं। हलों के द्वारा बिना जुताई के ही ये कुरु देश फसलों का उत्पादक है। इसीलिए किसानों के द्वारा फसल सम्पदा अल्प प्रयास से ही प्राप्त है। एवं फसल सम्पदा को धारण करता हुआ वह कुरुदेश शोभित होता है। महा यशस्वी दुर्योधन दयावान होकर सदैव प्रजा की रक्षा करता है। और संरक्षण से प्रजाओं की निर्विघ्न उन्नति को सम्पादित करता है। धनाधिपति कुबेर के समान इस दुर्योधन के दया दान दाक्षिण्य आदि गुणों से पृथ्वी द्रवीभूत हुई। एवं पृथ्वी द्रवीभूत होकर स्वयं ही धन को देती है। अर्थात् याचना के बिना ही सुख से धन को प्रदान करती है। महा तेजस्वी प्रचुर धन दान से सम्मानित दुर्योधन के वीर योद्धा: समर में कीर्ति को प्राप्त किए हुए हैं। और वे धनुर्धारी अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु नहीं आते। वे अपने स्वामी के प्रतिकूल नहीं हैं। परन्तु स्वामी के उद्देश्य के साधक ही हैं। और उसके लिए वे अपने प्राणों का दान करने के लिए भी अभिलषित हैं। सभी राजकार्यों को समाप्त करके वह दुर्योधन शुद्ध चरित्र और उत्तम गुणधरों के द्वारा सभी राजाओं के व्यवहार को गूढ़ रूप से जानता है। किन्तु जैसे विधाता की क्या करने की इच्छा है यह उसके कार्यों के द्वारा ही जानते हैं। उसी प्रकार उस दुर्योधन के मन के अभीष्ट कार्य को भी उसके हितकारी परिणामों से ही जाना जाता है। उस राजा दुर्योधन के द्वारा कहीं भी प्रत्यंचा से युक्त धनुष को नहीं उठाया गया। अथवा अपने मुख को क्रोध से टेढ़ा नहीं किया। तो भी राजाओं के द्वारा उस दुर्योधन की आज्ञा को सादर फूलमाला के समान स्वीकार किया जाता है। जैसे सूत्र में गुम्फित पुष्प माला को ससम्मान सिर पर धारण करते हैं। अर्थात् सभी राजा प्रसन्न होकर उसके शासन का अनुगमन करते हैं। अनतिक्रमणीय शासन वाले दुर्योधन ने युवराज के पद पर अपने छोटे भाई दुशासन को नियुक्त किया। और स्वयं निश्चित होकर पुरोहितों के आदेशानुसार हवि के द्वारा अग्नि को प्रसन्न करता है। एवं वह दुर्योधन यज्ञादि कर्मों में प्रसन्न होकर धर्म का आचरण करता है। सभी राजाओं को पराजित करके शत्रु रहित सम्पूर्ण पृथ्वी को उस दुर्योधन ने अकेले ही शासित किया। किन्तु अपनी पराजय से शंक्ति वह आपसे डरता है। इसीलिए वह सुख से नहीं रह पाता। क्योंकि बलवानों के साथ विरोध दुष्परिणामी ही होता है।



### पाठान्त प्रश्न

1. शंक्ति दुर्योधन कैसे सन्देह रहित आकार को प्राप्त करता है?
2. उसके सभी उपाय कैसे सदैव उसे सफलता और समृद्धि प्रदान करते हैं?
3. उसके सभा भवन के आंगन को अत्यधिक गीला करता है। इससे कैसे उसकी प्रभुता प्रकट होती है?
4. दुर्योधन का प्रजा रक्षण कैसा था?
5. उसके सैनिक कैसे थे वर्णित कीजिए।

### शंक्ति दुर्योधन का नीति कौशल



ध्यान दें:

शंक्ति दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

6. पर्जन्यों के आश्रित न रहते हुए भी कुरु कैसे फसलों की सम्पत्तियों को धारण करता हुआ सुशोभित हो रहा है?
7. उसके कार्य कैसे फलों के द्वारा ज्ञात किए जाते थे?
8. राजा उससे प्रभावित थे दृष्टान्त को वर्णित कीजिए।
9. दुर्योधन क्या क्या करके धर्म आचरण को करता है?
10. बलवान से विरोध कैसे दुष्परिणामी होता है?
11. समानार्थक धातु रूप को मिलाइए।

क-स्तम्भ

1. धिनोति
2. प्रतीयते
3. उपैति
4. फलन्ति
5. चकासति
6. प्रदुग्धे
7. वांछति
8. उह्यते

ख-स्तम्भ

- क. धार्यते
- ख. जुहोति
- ग. प्राप्नोति
- घ. प्रदोग्धि
- ङ. अभिलषति
- च. प्रसुवते
- छ. विराजन्ते
- ज. ज्ञायते

उत्तर

- |      |      |      |      |      |
|------|------|------|------|------|
| 1. ख | 2. ज | 3. ग | 4. च | 5. छ |
| 6. घ | 7. ङ | 8. क |      |      |

आपने क्या सीखा

1. दुर्योधन कैसे भयभीत होता था इस पाठ से जानते हैं।
2. राजा दुर्योधन सरलता से जीतने योग्य नहीं था। यह भी जानते हैं।
3. राजाओं में उसका प्रभाव कैसा था यह स्पष्ट होता है।
4. वीर योद्धा कैसे प्रकृति से प्रभुकार्य में रत होते हैं स्पष्ट है।
5. बलवानों के साथ विरोध दुष्परिणामी होता है ऐसा जाना।
6. समास और उसके विग्रह कैसे होते हैं इस पाठ से समझा।



पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. दुर्योधन

2. शंक्ति होकर
3. चारों ओर आत्मीय जनों को रक्षक नियुक्त करके।
4. कार्यों के समाप्त होने पर सेवकों को दी गई सम्पत्तियाँ।
5. कार्यों के समाप्त होने पर

**उत्तर-2**

6. दुर्योधन के द्वारा, पदों में
7. उचित विभाग करके
8. निरन्तर, स्थिर भविष्य वाली धन सम्पत्ति
9. स्पर्धा को प्राप्त हुए से
10. स्थिर

**उत्तर-3**

11. सभा भवन के आंगन को
12. अत्यधिक
13. अनेक राजाओं के रथों और घोडों से भरे हुए।
14. राजाओं के द्वारा उपहार में दिए गए हाथियों का सप्तपर्ण के पुष्प के समान गन्ध वाला मदजल
15. सप्तपर्ण नामक वृक्ष के पुष्प के समान गन्ध वाला।

**उत्तर-4**

16. फसलों की सम्पत्तियों को।
17. किसानों के द्वारा।
18. जुताई के बिना ही पकी हुई सी।
19. चिर काल से उस दुर्योधन के प्रजाओं का कल्याण।
20. नहरों के जल के द्वारा सींचा जाने वाला।

**उत्तर-5**

21. धनों को प्रदान करती है
22. इस दुर्योधन के गुणों के द्वारा द्रवीभूत हुई।
23. धनों से
24. उपद्रव रहित
25. महायशस्वी, दयावान

शंक्ति दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

शंकित दुर्योधन का  
नीति कौशल



ध्यान दें:

उत्तर-6

26. महाबलशाली मनस्वी धन से सत्कृत।
27. युद्ध में
28. अभीष्ट कार्यों को करना चाहते हैं।
29. अपने प्राणों से
30. संगठित न होने वाले, प्रतिकूल आचरण न करने वाले।

उत्तर-7

31. राजाओं की
32. शुद्ध चरित्र वाले गुप्तचरों के द्वारा
33. कार्यों को पूर्ण रूप से समर्पित करने वाला।
34. उसके परिणामों के द्वारा
35. हितकारक परिणाम वाले, अत्यधिक उत्कर्ष वाले

उत्तर-8

36. प्रत्यंचा से युक्त धनुष
37. क्रोध से कुटिल
38. दुर्योधन का आदेश
39. पुष्प माला की तरह
40. गुणों के अनुराग से

उत्तर-9

41. अनतिक्रमणीय शासन वाला
42. युवराज के पद पर, नवीन युवावस्था के कारण प्रगल्भ
43. हवि के द्वारा
44. यज्ञों में
45. पुरोहित के द्वारा

उत्तर-10

46. शत्रुभूत राजाओं से रहित
47. दुष्परिणामी
48. तुमसे उत्पन्न होने वाली विपत्तियों को
49. शत्रुभूत राजाओं से रहित
50. समुद्रपर्यन्त

## युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

विष दूर करने वाले मन्त्र के सुनने से साँप विष को त्यागकर मुख को नीचे किए हुए रहता है। वैसे ही सभा में यदि बातचीत के प्रसंग में किसी के भी मुख से युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनता था, वैसे ही दुर्योधन अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके अधोमुख होता था। एवं सदैव युधिष्ठिर को जीतने में असमर्थ दुर्योधन युधिष्ठिर से छल करने के लिए प्रवृत्त था। और फिर युधिष्ठिर के मुख से गुप्तचर द्वारा ज्ञापित सारी कथा को सुनकर द्रौपदी ने क्या अनुभव किया और युधिष्ठिर के क्रोध तथा उत्साह को बढ़ाने के लिए क्या-क्या कहा इत्यादि सब आप इस पाठ में पढ़ेंगे। शास्त्रज्ञों में और व्यवहारज्ञों में स्त्री के द्वारा कहा गया कोई भी वचन अपमान ही होता है ऐसा जानते हुए भी द्रौपदी कैसे युधिष्ठिर के प्रति कुछ भी कहने के लिए प्रवृत्त हुई, और दुर्योधन ने वस्तुतः कौन-सा बड़ा दोष किया हम इस पाठ से जानेंगे। कपटचारियों के प्रति सरलता उचित नहीं है। द्रौपदी के वचन का तात्पर्य क्या है इस विषय में आपको अच्छा बोध होगा।



### उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे:

- पद्य काव्यों का निर्माण कैसे करना चाहिए यह जानने में;
- श्लोकों का अन्वय कैसे करना चाहिए जानने में;
- द्रौपदी किसलिए उपदेश देने के लिए प्रवृत्त है जानने में;
- गुप्तचरों के वचनों का सार क्या होता है यह जानने में;
- किसके साथ कैसा आचरण करना चाहिए। जानने में;

### 21.1 ) मूल पाठ

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।

तवाभिधानात् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥1.24॥

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्वमुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।

युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः॥1.25॥

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये गतेऽथ पत्यौ वनसंनिवासिनाम्।  
प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा तदाचक्षेऽनुजसन्निधौ वचः॥1.26॥

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृतीस्ततस्ततस्त्याः विनिगन्तुमक्षमा।  
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीरुदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः॥1.27॥

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिक्षेप इवानुशासनम्।  
तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति माम् निरस्तनारीसमया दुराधयः॥1.28॥

अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिश्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजै।  
त्वया स्वहस्तेन मही मदच्युता मतङ्गधेन स्रगिवापवर्जिता॥1.29॥

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये न मायिनः।  
प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृतांगान्निशिता इवेषवः॥1.30॥

## 22.2 ) मूल पाठ

कथाप्रसङ्गेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।

तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दुःसहान्मन्त्रपदादिवोरगः॥24॥

अन्वय- कथाप्रसंगेन जनैः उदाहृतात् तव अभिधानात् अनुस्मृत अखण्डलसूनुविक्रमः नताननः सः दुर्योधनः सुदुःसहात् मन्त्रपदात् उरगः इव व्यथते।

अन्वयार्थ- वार्ता में श्रेष्ठ लोगों के द्वारा कहे गए तुम्हारे नाम से, तार्क्ष्य और वासुकि के नाम से, स्मरण कर लिया है इन्द्र के अनुज के पक्षी के पाद विक्षेप को जिसने ऐसे इन्द्र के अनुज के पक्षी गरुड़ के पादविक्षेप का स्मरण कर, मुख को नीचे किए हुए वह सिंहासन पर बैठा हुआ दुर्योधन असह्य विष दूर करने वाले मन्त्र के पद से सर्प की तरह व्यथित होता है।

सरलार्थ- सभा में यदि बातचीत में किसी के भी मुख से युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनता है। तब दुर्योधन आपके विशेष रूप से अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके अधोमुख होता है। जैसे विष दूर करने वाले मन्त्रों के सुनने से विषधारी साँप विष को त्यागकर फण को नीचे किए होता है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में दुर्योधन के डर का निरूपण महाकवि भारवि ने किया है। विष वैद्यों के द्वारा पढ़े गए गरुड़ वासुकि नाम युक्त मन्त्रों को सुनकर सर्प गरुड़ के प्रभाव को मन में सोचकर फण को नीचे किए बैठता है। इसी प्रकार सभा में बातचीत में किसी के भी द्वारा कहे गए युधिष्ठिर के नाम को सुनकर भय से व्याकुल होता है। और अर्जुन के पराक्रम का स्मरण करके वह अधोमुख होता है। 'न्याय से अर्जुन का उत्कर्ष कथन युधिष्ठिर का आभूषण ही है।'

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः - अनुस्मृतः आखण्डलसूनुविक्रमो येन सः अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।
- तवाभिधानात् - तश्च वश्च तवौ तार्क्ष्यवासुकी तयोः अभिधानमिति तवाभिधानम्, तस्मात् तवाभिधानात्।

- नताननः - नतम् आननं यस्य स नताननः।
- व्यथते - व्यथ धातु लट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- मन्त्रपदादिवोरगः - मन्त्रपदात् + इव + उरगः।
- जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः - जनैः + उदाहृतात् + अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः

### प्रयोग परिवर्तन

- कथाप्रसंगेन जनैः उदाहृताद् अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमेण नताननेन तेन् सुदुःसहात् मन्त्रपदात् उरगेण इव तव अभिधानाद् व्यथते।

### अलंकार आलोचना

- यहाँ श्लोक में उपमा अलंकार है उरग इव के साम्यप्रतिपादन से।

### कोशः-

- अभिधानम् - आख्याह्वे अभिधानं च नामधेयं च नाम च।



### पाठगत प्रश्न-1

1. वह दुर्योधन किसके समान व्यथित होता है?
2. दुर्योधन किससे व्यथित होता है?
3. और वह दुर्योधन किस प्रकार का होकर व्यथित होता है?
4. साँप किससे व्यथित होता है?
5. तवाभिधानात् इसके क्या दो अर्थ सम्भव होते हैं?

तदाशु कर्तुं त्वयि जिह्यमुद्यते विधीयतां तत्र विधेयमुत्तरम्।

परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां प्रवृत्तिसाराः खलु मादृशां गिरः॥25॥

**अन्वय-** तत् त्वयि जिह्वं कर्तुम् उद्यते तत्र विधेयम् उत्तरम् आशु विधीयताम्। परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां मादृशां गिरः प्रवृत्तिसाराः खलु।

**अन्वयार्थ-** अतः इस कारण से तुम्हारे प्रति (युधिष्ठिर के) कपट करने के लिए उद्यत वहाँ उस दुर्योधन के विषय में करने योग्य उपाय शीघ्र कीजिए। क्योंकि दूसरों के द्वारा कहे गए वचनों को संचित करने वाले, मुझ जैसे वनेचरों की वाणी प्रवृत्ति ही सार तत्त्व है। निश्चित ही वृत्तान्त ही प्रधान है।

**सरलार्थ-** इस कारण से युधिष्ठिर के प्रति वह दुर्योधन छल करने के लिए तत्पर हुआ। अर्थात् अतः आपको करने योग्य उपाय शीघ्र ही करने चाहिए। क्योंकि दूसरों के द्वारा कहे गए वचनों को संचित करने वाले दूतों के हमारे वचन समाचार प्रधान होते हैं। अर्थात् मुझ जैसे मन्दबुद्धि दूत केवल वार्ता को जानने वाले हैं न कि कार्य को। इसीलिए आप ही विचार करके समुचित कार्य को सम्पादित करो।

**तात्पर्यार्थ-** इस श्लोक में किरात अपने संदेश के सारांश को कहता है की दुर्योधन सदैव छल



ध्यान दें:

युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

से आपको जीतने की इच्छा रखता है। इसीलिए आप जैसे उसकी पराजय हो वैसा विचार करें। कैसे उसकी पराजय होगी यह मैं तो कहने के लिए समर्थ नहीं हूँ। सत्य कथन ही दूतों का प्रयोजन है। वहाँ करने योग्य तो स्वामी का कर्तव्य है। अर्थात् जो भी समुचित कार्य हो उसके लिए आपको शीघ्रता करनी चाहिए।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- परप्रणीतानि - परैः प्रणीतानि इति। तृतीया तत्पुरुष समास।
- प्रवृत्तिसाराः - प्रवृत्तिरेव सारो यासां ताः। बहुब्रीह समास।
- विधीयताम् - वि + धा धातु + यक् प्रत्यय लोट लकार

**सन्धि युक्त शब्द**

- तदाशु - तत् + आशु

**प्रयोग परिवर्तन**

- तत् त्वयि जिह्वं कर्तुम् उद्यते तत्र विधेयम् उत्तरं विधेहि। परप्रणीतानि वचांसि चिन्वतां मादृशां गीर्भिः प्रवृत्तिसारभिः भूयते खलु।

**कोश:-**

- प्रवृत्तिः - वार्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्याद्।



**पाठगत प्रश्न-2**

6. दुर्योधन क्या करने के लिए उद्यत है?
7. युधिष्ठिर के द्वारा दुर्योधन के विषय में क्या शीघ्रता करनी चाहिए?
8. युधिष्ठिर ने क्या संचित किया?
9. वनेचरों की वाणी किस प्रकार की होती है?
10. जिह्व इसका क्या अर्थ है?

**मूल पाठ**

इतीरयित्वा गिरमात्तसत्क्रिये गतेऽथ पत्यौ वनसंनिवासिनाम्।

प्रविश्य कृष्णासदनं महीभुजा तदाचक्षेऽनुजसन्निधो वचः॥26॥

**अन्वय-** अथ इति गिरम् ईरयित्वा गते आत्तसत्क्रिये वनसंनिवासिनां पत्यौ सति महीभुजा कृष्णासदनं प्रविश्य अनुजसन्निधो तद् वचः आचक्षे।

**अन्वयार्थ-** उसके बाद इस प्रकार के वचनों को कहकर अपने घर चले जाने पर सत्कार प्राप्त कर, पारितोषिक प्राप्त कर वनेचरों के स्वामी के राजा युधिष्ठिर के द्वारा द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके भीमादि भाईयों के पास वनेचर द्वारा कहे गए वचनों को कहा। अथवा राजा युधिष्ठिर के द्वारा भवन में प्रवेश करके भीमादि अनुजों के समीप उस वनेचर द्वारा कहे गए कथनों को द्रौपदी से कहा।



**सरलार्थ-** इस प्रकार के वचनों को युधिष्ठिर के लिए निवेदित करके वह वनेचर पुरस्कार ग्रहण करके अपने घर को गया। उसके बाद राजा युधिष्ठिर ने द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके भीम अर्जुनादि अपने भाइयों के समीप में वनेचर के द्वारा कहे गए वचनों को कहा। अथवा राजा दुर्योधन ने भवन में प्रवेश करके अपने भाइयों से वनेचर के द्वारा कहे गए वचन को कहा।

**तात्पर्यार्थ-** दुर्योधन के सम्पूर्ण वृत्तान्त को युधिष्ठिर के लिए निवेदित कर वनेचर ने अपने कार्य को सम्पादित किया। फिर युधिष्ठिर से वनेचर पुरस्कार प्राप्त कर अपने घर गया। तब युधिष्ठिर ने भी वनेचर द्वारा प्रतिपादित वृत्तान्त भीम के समीप में स्थित द्रौपदी को कहने के लिए द्रौपदी के भवन को गया।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- आत्तसत्क्रिये- आत्ता गृहीता सत्क्रिया येन सा। बहुब्रीह समास
- वनसन्निवासिनाम् - वने सन्निवसन्ति ये ते वनसन्निवासिनः। सप्तमी, तत्पुरुष समास
- कृष्णासदनम् - कृष्णाया द्रौपद्याः सदनं कृष्णासदनम्। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- ईरयित्वा- ईर् धातु + णिच् प्रत्यय + क्तवा प्रत्यय।
- आचक्षे - आङ् + चक्षिङ् धातु, लिट् लकार।

### सन्धि युक्त शब्द

- गतेऽथ - गते + अथ।
- इतीरयित्वा - इति + ईरयित्वा।

### प्रयोग परिवर्तन

- इति ईरयित्वा आत्तसत्क्रिये वनसन्निवासिनां पत्यौ गते महीभुक् कृष्णासदनं प्रविश्य, वा सदनं प्रविश्य अनुजसन्निधो कृष्णां प्रति आचक्षे।

### कोश:-

- वनम् - अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम्।



### पाठगत प्रश्न-3

11. राजा युधिष्ठिर ने भीमादि भाइयों के समीप क्या किया?
12. युधिष्ठिर ने कहाँ प्रवेश करके कहा?
13. किसके चले जाने पर युधिष्ठिर के द्वारा वचन को कहा गया?
14. और वह वनेचर क्या करके चला गया।
15. आत्तसत्क्रिये इसका क्या अर्थ है?

### मूल पाठ

निशम्य सिद्धिं द्विषतामपाकृतीस्ततस्ततस्त्याः विनिगन्तुमक्षमा।  
नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीरुदाजहार द्रुपदात्मजा गिरः॥२७॥

### युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

## युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

**अन्वय-** ततः द्रुपदात्मजा द्विषतां सिद्धिं निशम्य ततस्त्याः अपाकृतीः विनिगन्तुम् अक्षमा, सती नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः गिरः उदाजहार।

**अन्वयार्थ-** युधिष्ठिर के कहने के बाद द्रुपद की पुत्री द्रौपदी कौरवों की दुर्योधनादि राजाओं की उन्नति को सुनकर उनसे प्राप्त हुए अपकारों को रोकने के लिए असमर्थ होती हुई राजा युधिष्ठिर के क्रोध और उद्योग को बढ़ाने वाली वाणी को कहती है।

**सरलार्थ-** युधिष्ठिर के कहने के बाद शत्रुओं कौरवों की समृद्धि को युधिष्ठिर के मुख से सुना। फिर कौरवों के कारण प्राप्त दुःख से उत्पन्न मानसिक विकारों को रोकने में असमर्थ युधिष्ठिर के क्रोध तथा उत्साह को बढ़ाने के लिए वचनो को कहती है।

**तात्पर्यार्थ-** इस श्लोक में महाकवि भारवि ने द्रौपदी के मुख से युधिष्ठिर को जिससे क्रोध उत्पन्न हो जैसे वचनों को कहा है। युधिष्ठिर के मुख से शत्रु दुर्योधन की उन्नति को सुना। और उसे सुनने से क्षुब्ध हृदय वह द्रौपदी दुर्योधन के द्वारा किए गए अपकारों का स्मरण करती हुई युधिष्ठिर के प्रति इस प्रकार के वचनों को कहती है। जिससे उस युधिष्ठिर का क्रोध बढ़े और दुर्योधन के उन्मूलन के लिए प्रयत्न करें।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- द्रुपदात्मजा - द्रुपदस्य आत्मजा द्रुपदात्मजा। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- मन्युव्यवसायदीपिनीः - मन्युश्च व्यवसायश्च मन्युव्यवसायौ। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- निशम्य - नि + शम् धातु, + ल्यप्।
- उदाजहार - उत् + आ + ह् धातु, लट् लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन।

**सन्धि युक्त शब्द**

- अपाकृतीस्ततस्ततस्त्याः - अपाकृतीः + ततः + ततस्त्याः।
- मन्युव्यवसायदीपिनीरुदाजहार - मन्युव्यवसायदीपिनीः + उदाजहार।

**प्रयोग परिवर्तन**

- द्विषतां सिद्धिं निशम्य, ततः ततस्त्या अपाकृतीः विनियन्तुम् अक्षमया, द्रौपद्या नृपस्य मन्युव्यवसायदीपिनीः गिरः उदाजहिरे।

**अलंकार आलोचना**

- यहाँ व्यंजन तकार की बार-बार आवृत्ति से वृत्ति अनुप्रास अलंकार है।

**कोश:-**

- गीः - ब्राह्मी तु भारती भाषा गीर्वाग्वाणी सरस्वती।

**पाठगत प्रश्न-4**

16. किसने वचनों को कहा?
17. और उसने कब वचनों को कहा?

18. उसने क्या सुनकर इस प्रकार किया?
19. उसने किस प्रकार की वाणी को कहा?
20. वह द्रौपदी क्या करने में असमर्थ हुई?

### मूल पाठ

भवादृशेषु प्रमदाजनोदितं भवत्यधिकक्षेप इवानुशासनम्।

तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति माम् निरस्तनारीसमया दुराधयः॥28॥

**अन्वय-** यद्यपि भवादृशेषु प्रमदाजनोदितम् अनुशासनम् अधिकक्षेपः इव भवति। तथाऽपि निरस्तनारीसमयाः दुराधयः मां वक्तुं व्यवसाययन्ति।

**अन्वयार्थ-** आप जैसे विद्वानों बुद्धिमानों को स्त्रियों के द्वारा दिया उपदेश तिरस्कार के समान होता है। फिर भी स्त्रियों की मर्यादा को समाप्त कर देने वाली तीव्र मनोव्यथायें मुझ द्रौपदी को कहने के लिए प्रेरित कर रही हैं।

**सरलार्थ-** आप जैसे बुद्धिमानों के लिए स्त्रियों के द्वारा कहा गया उपदेश तिरस्कार के समान नहीं होता है। फिर भी शत्रुओं द्वारा किए गए अपमान से और मनो व्यथाओं से मैं द्रौपदी अत्यन्त क्षुब्ध हूँ। इसीलिए स्त्रियों के लिए उचित व्यवहार को छोड़कर आपसे कुछ कहती हूँ।

**तात्पर्य अर्थ-** प्रस्तुत इस श्लोक में द्रौपदी के हृदय में प्रज्वलित भयंकर प्रतिशोध की भावना से उत्पन्न उसकी प्रतिध्वनि प्राप्त होती है। विद्वानों के प्रति उपदेश वचन अपमान को प्रदर्शित करता है, उस पर स्त्री जनों का अनौचित्य ही है। शत्रु कौरवों के द्वारा उत्पन्न दुख से द्रौपदी सन्तप्त हुई। और उसकी दुसहच मनोव्यथा को युधिष्ठिर के प्रति सब कहने के लिए वह द्रौपदी प्रेरित हुई।

### व्याकरणात्मक टिप्पणी

- भवादृशेषु - भवन्त इव दृश्यन्ते।
- प्रमदाजनोदितम् - प्रमदा एव जनः प्रमदाजनः - तृतीय तत्पुरुष।
- निरस्तनारीसमयाः - नार्यः समयाः नारी समयाः- षष्ठी तत्पुरुष।
- अनुशासनम् - अनु + शास् धातु + ल्युट् प्रत्यय।
- व्यवसाययन्ति - वि + अव + सो धातु+ णिच् प्रत्यय, लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

### सन्धि युक्त शब्द

- भवत्यधिकक्षेपः - भवति + अधिकक्षेपः।
- इवानुशासनम् - इव + अनुशासनम्।

### प्रयोग परिवर्तन

- भवादृशेषु प्रमदाजनोदितेन अनुशासनेन अधिकक्षेपेण इव भूयते। तथाऽपि निरस्तनारीसमयै दुराधिभिः अहं वक्तुं व्यवसाय्ये।



ध्यान दें:

युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

अलंकार आलोचना

- यहाँ अनुशासनम् अधिक्षेप इव में साम्य प्रतिपादन से उपमा अलंकार है।

कोश:-

- आधि: - पुंस्याधिर्मानसी व्यथा।



पाठगत प्रश्न-5

21. आप जैसे विद्वानों के प्रति क्या अपमान के समान होता है?
22. क्या प्रेरित कर रहे हैं?
23. वे मानसिक व्यथाएँ क्या और किसलिए प्रेरित कर रही हैं?
24. स्त्रियों के द्वारा कहा गया उपदेश कहाँ तिरस्कार के समान ही होता है?
25. अधिक्षेप इसका क्या अर्थ है?

मूल पाठ

अखण्डमाखण्डलतुल्यधामभिश्चिरं धृता भूपतिभिः स्ववंशजैः

त्वया स्वहस्तेन मही मदच्युता मतङ्गजेन स्रगिवापवर्जिता॥29॥

अन्वय- आखण्डलतुल्यधामभिः स्ववंशजैः भूपतिभिः चिरम् अखण्डं धृता मही मदच्युता मतंगजेन, स्रक् इव त्वया आत्महस्तेन अपवर्जिता।

अन्वयार्थ- इन्द्र के समान पराक्रम वाले, अपने कुल में उत्पन्न हुए राजाओं के द्वारा बहुत समय तक सम्पूर्ण रूप से धारण की गई पृथ्वी आप युधिष्ठिर के द्वारा मदस्रावी हाथी के द्वारा पुष्प माला की तरह अपने हाथ से त्याग दी।

सरलार्थ- इन्द्र के जैसे पराक्रमी आपके कुल में उत्पन्न हुए भरत इत्यादि राजाओं के द्वारा बहुत समय तक सम्पूर्ण रूप से पृथ्वी धारण की गई थी। परन्तु आपके हाथों से ही विनिष्ट हो गई। जैसे मदमस्त हाथी अपने कण्ठ से माला को दूर करता है।

तात्पर्यार्थ- इस श्लोक में द्रौपदी के मुख से कवि कहता है की अपनी चपलता से ही यह पृथ्वी विनिष्ट हुई। इसीलिए यह विपत्ति ईश्वर द्वारा दी गई नहीं है उसके कथन का अभिप्राय है। इन्द्र के समान पराक्रमी अपने कुल में उत्पन्न हुए भरत आदि राजाओं ने बहुत समय तक इस पृथ्वी को धारण किया था। परन्तु वह पृथ्वी अब युधिष्ठिर के अपने हाथ से छोड़ दी गई। जैसे मदस्रावी हाथी के द्वारा पुष्पमाला को फेंक दिया जाता है।

व्याकरणात्मक टिप्पणी

- आखण्डलतुल्यधामभिः - आखण्डलेन तुल्यं धाम येषां ते। बहुब्रीह समास
- स्ववंशजैः - स्वस्य वंशः स्ववंशः , स्ववंशाज्जायन्ते इति स्ववंशजा। षष्ठी, तत्पुरुष समास
- धृता - धृ धातु + क्त प्रत्यय। टाप्
- अपवर्जिता - अप् + वृज् धातु णिच् + क्त प्रत्यय। + टाप्

### सन्धि युक्त शब्द

- आखण्डलतुल्यधामभिश्चिरम् - आखण्डलतुल्यधामभिः + चिरम्
- स्रगिव - स्रक् + इव।

### प्रयोग परिवर्तन

- आखण्डलतुल्यधामभिः स्ववंशजैः चिरम् अखण्डं धृता महीं मदच्युतः मतंगजस्य, स्रक् इव त्वम् आत्महस्तेन अपवर्जितवान्।

### अलंकार आलोचना

- यहाँ मतंगजेन इव त्वया स्रगिव अपवर्जिता में साम्य प्रतिपादन से पूर्णोपमा अलंकार है।

### कोश:-

- मतंगजो गजो नागः कुंजरो वारणः करी।



### पाठगत प्रश्न-6

26. किसने बहुत समय तक सम्पूर्ण रूप से पृथ्वी को धारण किया?
27. और वे किस प्रकार के हैं?
28. वह पृथ्वी किसके द्वारा त्याग दी गई?
29. और वह कैसे त्याग दी गई?
30. आखण्डलतुल्यधामभिः इसका क्या अर्थ है?

### मूल पाठ

व्रजन्ति ते मूढधियः पराभवं भवन्ति मायाविषु ये नमायिनः।

प्रविश्य हि घ्नन्ति शठास्तथाविधानसंवृतांगान्निशिता इवेषवः॥३०॥

**अन्वय-** ये मायाविषु मायिनः न भवन्ति ते मूढधियः पराभवं व्रजन्ति। शठाः तथाविधानम् असंवृतांगान् निशिता इषवः इव प्रविश्य घ्नन्ति।

**अन्वयार्थ-** जो व्यक्ति कपटियों के प्रति कपटी नहीं होते, वे मन्द बुद्धि लोग पराजय को प्राप्त होते हैं। क्योंकि धूर्त कपटी उस प्रकार के लोग अनाच्छादित शरीर वाले लोगों को तेज बाणों की तरह प्रवेश करके मार डालते हैं।

**सरलार्थ-** जो व्यक्ति कपटी, मायावी नहीं होते हैं वे व्यक्ति सदैव पराजय को प्राप्त करते हैं। क्योंकि कुटिल पुरुष आत्मीय होकर उन जैसों का सरलता से विनाश करते हैं। जैसे कवच आदि से अरक्षित शरीर में प्रवेश कर तीक्ष्ण बाण शरीर का नाश करते हैं। अतः कपटियों से सरलता उचित नहीं है।

**तात्पर्यार्थ-** इस श्लोक में महाकवि भारवि ने आर्जवं हि कुटिलेषु न नीतिः। शठे शाठयम् एव आचरेत् इत्यादि नीति को प्रतिपादित किया है। मन्दबुद्धि वाले लोग उनकी सदैव ही पराजय होती है जो कपटियों के साथ कपट नहीं करते हैं। जैसे युद्ध में तीक्ष्ण बाण कवच रहित शरीर में शीघ्रता से ही प्रवेश

### युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

कर नाश करते हैं। वैसे ही कपटियों धूर्तों व्यक्ति सरल लोगों के अन्तर्भाव को जानकर उनका नाश करते हैं।

**व्याकरणात्मक टिप्पणी**

- मूढधियः - मूढा धीर्येषां ते मूढधियः - बहुव्रीहि समास।
- असंवृतांगान् - न संवृतानि असंवृतानि - तत्पुरुष समास।
- घ्नन्ति - हन् धातु + लट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

**सन्धि युक्त शब्द**

- शठास्तथाविधान - शठाः + तथाविधान्
- इवषेवः - इव + इषवः

**प्रयोग परिवर्तन**

- यैः मायाविषु मायिभिः न भूयते, तै मूढधीभिः पराभवो व्रज्यते। शठैः प्रविश्य निशितैः इषुभिरिव तथाविधाः असंवृतांगाः हन्यन्ते।

**अलंकार आलोचना**

- यहाँ शठाः निशिताः इषवः इव के साम्यप्रतिपादन से उपमा अलंकार है।

**कोशः-**

- शठः - निकृतस्त्वनृजुः शठ।



**पाठगत प्रश्न-7**

31. मन्दबुद्धि कौन हैं?
32. और वे क्या प्राप्त करते हैं?
33. धूर्त किनको प्रवेश कर मार डालते हैं?
34. और वे धूर्त उनको किस प्रकार प्रवेश कर मार डालते हैं?
35. निशिताः इषवः इसका क्या अर्थ है?



**पाठ सार**

सभा में यदि बातचीत में किसी के भी मुख से युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनता है, तब दुर्योधन आपके विशेष कर अर्जुन के पराक्रम को स्मरण करके अधोमुख होता है। जैसे विष दूर करने वाले मन्त्र को सुनने से विषधारी सर्प विष को त्यागकर फण को नीचे किए होता है। इसी कारण से आपके प्रति वह दुर्योधन छल करने के लिए तत्पर होता है। अर्थात् आपको हराने की इच्छा करता है। इसीलिए आपको करने योग्य उपाय शीघ्र ही करना चाहिए। क्योंकि दूसरों के द्वारा कहे गए वचन दूतों में हमारे वचन वृत्तान्त प्रधान होते हैं। अर्थात् मुझ जैसे अल्पबुद्धि दूत केवल समाचार को जानने वाला है न कि कार्यो को। इसीलिए आपको ही विचार करके उचित कार्य का सम्पादन करना चाहिए। इस प्रकार के

वचनों को युधिष्ठिर के लिए निवेदित कर वह वनेचर पुरस्कार को ग्रहण कर अपने घर को गया। उसके बाद राजा युधिष्ठिर द्रौपदी के भवन में प्रवेश कर भीम अर्जुन आदि अपने भाईयों के समीप में वनेचर के द्वारा कहे गए वचनों को कहा। अथवा राजा दुर्योधन ने भवन में प्रवेश करके अपने भाईयों से वनेचर के द्वारा कहे गए वचन को कहा। युधिष्ठिर के कहने के बाद शत्रुओं कौरवों की समृद्धि को युधिष्ठिर के मुख से सुना। फिर कौरवों के कारण प्राप्त दुःख से उत्पन्न मानसिक विकारों को रोकने में असमर्थ युधिष्ठिर के क्रोध तथा उत्साह को बढ़ाने के लिए वचनों को कहती है। आप जैसे बुद्धिमानों के लिए स्त्रियों के द्वारा कहा गया उपदेश तिरस्कार के समान नहीं होता है। फिर भी शत्रुओं द्वारा किए गए अपमान से और मनोव्यथाओं से मैं द्रौपदी अत्यन्त क्षुब्ध हूँ। इसीलिए स्त्रियों के लिए उचित व्यवहार को छोड़कर आपसे कुछ कहती हूँ। इन्द्र के जैसे पराक्रमी आपके कुल में उत्पन्न हुए भरत इत्यादि राजाओं के द्वारा बहुत समय तक सम्पूर्ण रूप से पृथ्वी धारण की गई थी। परन्तु आपके हाथों से ही विनिष्ट हो गई। जैसे मदमस्त हाथी अपने कण्ठ से माला को दूर करता है। जो व्यक्ति कपटी, मायावी नहीं होते हैं वे व्यक्ति सदैव पराजय को प्राप्त करते हैं। क्योंकि कुटिल पुरुष आत्मीय होकर उन जैसों का सरलता से विनाश करते हैं। जैसे कवच आदि से अरक्षित शरीर में प्रवेश कर तीक्ष्ण बाण शरीर का नाश करते हैं। अतः कपटियों से सरलता उचित नहीं है।

### पाठान्त प्रश्न

1. युधिष्ठिर की कीर्ति को सुनकर दुर्योधन की क्या दशा होती है। वर्णित कीजिए?
2. द्रौपदी ने युधिष्ठिर के उत्साह के लिए कब क्या किया?
3. द्रौपदी किससे कहने के लिए प्रेरित हुई?
4. युधिष्ठिर के द्वारा कैसे पृथ्वी को त्याग दिया गया द्रौपदी के वचनानुसार वर्णित कीजिए?
5. जो कपटियों के साथ कपटी नहीं होते उनकी दशा का वर्णन कीजिए?
6. समानार्थक धातु रूप को मिलाओ।

#### क- स्तम्भ

1. उदाजहार
2. व्यथते
3. अपवर्जिता
4. घ्नन्ति
5. व्रजति
6. विधीयताम्
7. व्यवसाययति
8. आचक्षे

#### ख-स्तम्भ

- क. त्यक्ता
- ख. याति
- ग. उक्तवती
- घ. गवेषयताम्
- ङ. विनाशयन्ति
- च. दुःखायते
- छ. कथिता
- ज. प्रेरयति

#### उत्तराणि

- |      |      |      |      |
|------|------|------|------|
| 1. ग | 2. च | 3. क | 4. ङ |
| 5. ख | 6. घ | 7. ज | 8. छ |

### युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

आपने क्या सीखा

1. कपटियों से सरलता उचित नहीं है
2. दूतों की वार्ता प्रवृत्ति सार होती है
3. स्त्रियों का उपदेश किसके जैसा होता है जाना।
4. कवि की प्रतिभा किस प्रकार की होती है स्पष्ट हुआ।
5. पद्य कैसे छन्दोबद्ध होते हैं यह स्पष्ट हुआ।

योग्यता विस्तार-

महाकवि भारवि

**जीवन वृत्तान्त:-** भारवि के जीवन वृत्ति के विषय में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कहा जा सकता, गदसिंह नामक किरातार्जुनीयम् के टीका कर्ता अपनी टीका के प्रारम्भ में उल्लेख किया है- 'कविकुंजरो भारविः प्राणदेवानरनामधेयः किरातार्जुनीयकाव्यं प्रणिनीषुस्तलक्षणं वस्तुनिर्देशु प्रणयन्नाह' इससे प्रतीत होता है कि प्राणदेव भारवे का वास्तविक नाम है और प्रखर प्रतिभा कारण से भारविः इस नाम से प्रसिद्ध था।

**कृति:-** भारवि की एक ही रचना आज उपलब्ध है और वह किरातार्जुनीयम् है। इस प्रकार सामर्थ्यान् सिद्ध कवि ने एक ही ग्रन्थ को रचा हो इसकी तो कल्पना ही नहीं कर सकते। क्योंकि काल कवलित संस्कृत साहित्य में जैसे कुछ अमर कवि का नाम मात्र ही शेष है, वैसे ही इनकी भी तब तक एक ही कृति प्रकाशित है। यद्यपि यह ही उनकी अमरता के लिए पर्याप्त है। और भारवि विषयक कुछ मुक्तक भी प्राप्त होते हैं। जैसे- श्री धर दास प्रणीत सदुक्तिकर्णामृत में कहा है-

सोद्वेगं करिकृत्तिवाससि भवद्वीडन्वितं ब्रह्मणि त्रैलोक्य-गुरावनादरवलत्तारं शचीभर्तरि।  
त्रासामीलितपक्षमभासविलसत्प्रेमप्रसन्नं हरौ क्षीरोदोत्थितया धिया विनिहतं चक्षुः शिवायास्तु वः ॥

**रचना शैली:-** महाकवि भारवि की रचना लोक में प्रसिद्ध है क्योंकि उनकी रचना संस्कृत काव्यों में बृहत्त्रयी में गिनी जाती है। अर्थगौरव उनकी रचना शैली का मुख्य स्तम्भ है। और जो भारवेरर्थगौरवम् वचनादि से ही स्पष्ट होता है। शिशिर का समय आ गया ऐसे वाक्य को इस प्रकार प्रकट किया-

कतिपयसहकारपुष्परम्यस्तनुतुहिनोऽल्पविनिद्रसिन्दुवारः।

सुरभिमुखहिमागमान्तशंसी समुपययौ शिशिरः स्मरैकबन्धुः॥

इसका अर्थ होता है- इसके बाद कामदेव के अद्वितीय मित्र वसन्त आगमन का सूचक है, हेमन्त के अन्त में आम्र कुसुम की शोभा रमणीय है, लाल सिन्दूरी पुष्पों से सुशोभित शिशिर ऋतु आ गई।

संस्कृत साहित्य में किरातार्जुन की कम से कम 37 टीका रचित है। जिसमें मल्लिनाथ की घंटापथ टीका सर्वश्रेष्ठ है। 1912 सन् में कार्ल कैप्लर महोदय हारवर्ड ओरियेंटल सीरिज इसके अन्तर्गत किरातार्जुनीयम् का जर्मन भाषा में अनुवाद किया गया है। आगल भाषा में भी इसके भिन्न भिन्न भागों का छः से अधिक अनुवाद किए गए हैं

**कुरुक्षेत्रम्:-** हरियाणा राज्य का प्रमुख मण्डल तथा उसका मुख्यालय है। यह स्थान हरियाणा राज्य के उत्तर दिशा में है। और देहली अमृतसर स्थानों को जोड़ने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग और रेलमार्ग स्थित



है। हिन्दू तीर्थस्थल के रूप में यह स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ऐसा विश्वास है कि महाभारत का युद्ध इसी स्थल पर हुआ। और भगवान श्री कृष्ण ने इसी क्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। इसका पौराणिक महत्व इससे भी अधिक है। यह स्थान ऋग्वेद तथा यजुर्वेद में वर्णित है। यहाँ विद्यमान सरस्वती नदी का भी अत्यन्त महत्व है।

**द्वैतवनम्:-** यह स्थान मेरठ प्रदेश के उत्तर में प्रायः 20 किमी. दूर स्थित है। और देववन्द कहलाता है। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर मण्डल के अन्तर्गत यह स्थान है। यह वन काली नदी के पूर्व पर दिशाओं में योजन परिमित स्थान को व्याप्त करके 10 योजन की दूरी पर स्थित है। जो मुजफ्फर नगर को विस्तीर्ण है। इस प्रकार सुनते हैं कि मीमांसा आदि के प्रवर्तक महर्षि जैमिनी की भी जन्मभूमि द्वैतवन है।

### 22.3 ) सन्दर्भग्रन्थ सूची

- महाकवि भारवि। किरातार्जुनीयम् (मल्लिनाथ कृत-घण्टापथ व्याख्या श्री जनार्दनपाण्डेयकृत विवृति और हिन्दी भाषा अनुवाद से समन्वित) 1984। मोतीलाल बनारसीदास।
- महाकवि भारविः। किरातार्जुनीयम् (घण्टापथ-सुधा-हिन्दी व्याख्या)।2004। चौखम्बा संस्कृत संस्थान। वाराणसी।



### पाठगत प्रश्नों के उत्तर

#### उत्तर-1

1. सर्प की तरह
2. बातचीत में लोगों के द्वारा कहे गए तुम्हारे नाम से
3. इन्द्र के अनुज के पक्षी के पाद प्रहार का स्मरण कर लेने वाले मुख को झुकाए।
4. असहच विष दूर करने वाले मन्त्र के पद से
5. तुम्हारे ताक्षर्य और वासुकि के नाम कथन से

#### उत्तर-2

6. कपट करने के लिए
7. करने योग्य उपाय
8. दूसरों के द्वारा कहे गए वचन
9. वृत्तान्त सार
10. कपटम्

#### उत्तर-3

11. वचन को कहा गया
12. द्रौपदी के भवन में प्रवेश करके

### युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

## युधिष्ठिर का प्रबोध



ध्यान दें:

13. स्वामी से पुरस्कार प्राप्त कर वनेचर अपने घर चला गया
14. वचन को कह कर
15. पुरस्कार को ग्रहण कर

## उत्तर-4

16. द्रुपद पुत्री द्रौपदी
17. युधिष्ठिर के कहने के बाद
18. कौरवों की सिद्धि को सुनकर
19. राजा के क्रोध और उद्योग को बढ़ाने वाले वचनों को।
20. शत्रुओं के द्वारा दिए गए अपकारों को रोकने के लिए

## उत्तर-5

21. स्त्रियों के द्वारा कहा गया आदेश
22. स्त्रियों की मर्यादा को छुड़ा देने वाली
23. द्रौपदी को, कहने के लिए
24. आप जैसे विद्वानों के प्रति
25. तिरस्कार

## उत्तर-6

26. युधिष्ठिर के कुल में उत्पन्न हुए
27. इन्द्र के समान पराक्रमी
28. युधिष्ठिर के अपने हाथ से
29. हाथी के द्वारा पुष्प माला की तरह फेंक दी
30. इन्द्र के समान तेज वाले

## उत्तर-7

31. जो कपटियों के साथ कपटी नहीं होते हैं।
32. पराजय
33. उस प्रकार के सरल लोगों को
34. कवचादि से रहित लोगों को तीखे बाणों की तरह।
35. तीक्ष्ण बाण।

# राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

## माध्यमिक पाठ्यक्रम

### संस्कृत साहित्य ( 248 )

#### औचित्य

संस्कृत में काव्य संपदा सागर के समान अपार तथा अमूल्य है। इसमें हमारी सनातन ज्ञान राशि तथा उस से ओतप्रोत जीवन प्रतिबिंबित होता है। कवि कर्म अलंकार शास्त्र को पढ़ने में छात्रों की भूमिका अपेक्षित होती है। काव्य राशि का मूल स्वरूप वेद में ही दिखाई देता है। साहित्य में प्रवेश के लिए वेद आदि वाङ्मय का सामान्य ज्ञान आवश्यक होता है। साथ ही यह भी जान लेना होता है कि वेदों के द्वारा बताए गए तत्वों को ही साहित्य प्रकट करते हैं। वेद के छह अंग हैं। इन छह अंगों का ज्ञान भी सामान्यतया आवश्यक होता है। वेद तथा काव्य के मध्य पुराण साहित्य का स्थान है, अतः पुराणों का भी सामान्य ज्ञान आवश्यक होता है और वह यहाँ है। इस प्रकार वेदों का तथा पुराणों का सामान्य ज्ञान प्राप्त करके ही काव्य में प्रवेश होता है।

संस्कृति वह सुपरिष्कृत जीवन पद्धति है जिससे यथा क्रम आत्मा का उद्धार होता है। भारतीय सनातन संस्कृति चार पुरुषार्थों की चर्चा करती है। चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष हैं। काम का अभिप्राय लौकिक जीवन में संतुष्ट होना अथवा सुख की प्राप्ति है। अर्थ से अपेक्षित सुख साधनों की प्राप्ति हेतु कल्पित वस्त्र, आहार, धन, भूमि आदि पदार्थों का संकलन है, धर्म से आशा होती है अर्थ को प्राप्त करने के लिए तथा सुख प्राप्त करने के लिए, शास्त्र विधि का आचरण मोक्ष अनंत और शाश्वत आनन्द स्वरूप है। इन सबके यथावत ज्ञान के लिए एकमात्र वेद ही प्रमाण है।

कवि का कर्म ही काव्य है ऐसा अलंकार शास्त्रियों का मत है। काव्य अत्यंत रमणीय शब्दार्थों का समन्वय तथा रसात्मक वाक्य है, ऐसा काव्यशास्त्र का सिद्धांत है। हमारी परंपरा में सही प्रकार के जीवन के ज्ञान के लिए जिस तरह शास्त्र आदरणीय हैं, उसी प्रकार काव्य मार्ग भी आदर्श के रूप में माना जाता है। वेद प्रभु सम्मित कहा जाता है तथा पुराण मित्र सम्मित कहा जाता है। काव्य को कांता सम्मित कहा गया है। कांता सम्मित शब्द का अर्थ है कांता के समानकांता का अर्थ है प्रिय पत्नी। प्रिय रूपवती पत्नी जब भी कुछ जानने की इच्छा से पूछती है तो वह अभिप्राय वाचक शब्दों का प्रयोग नहीं करती है। फिर मंद हास्य तथा अनेक प्रकार की चेष्टाओं के साथ वह अपने प्रिय को अभिप्राय अपने तरीके से बताते हुए उस कार्य के लिए प्रेरित करती है। जैसे आम खाओगे अथवा अंगूर खाओगी इस प्रकार से प्रिय अपनी प्रिया से पूछता है तब वह आम खाऊंगी, ऐसा साक्षात् ना कह कर आम मीठा होता है, देखने में भी अच्छा लगता है, ऐसा कहती है। उसके कथन का अभिप्राय इतना ही होता है कि मैं आम खाना पसंद करूंगी। इसी प्रकार जैसे प्रिया का कथन अभिप्राय परोक्ष तब पता चलता है उसी प्रकार काव्य भी परोक्षतः अभिप्राय को बतलाता है। अतः काव्य कांता सम्मित कहा गया है। प्रिया का वचन बहुत ही मधुर तथा रस युक्त होता है इसी प्रकार काव्य भी रस युक्त तथा रमणीय शब्दार्थ युक्त होता है। जिसके द्वारा काव्य सहृदय का हृदय आकर्षित करता है। इसलिए काव्य वेदों पुराणों से विलक्षण होता है।

इस तरह के काव्य का, कवियों का और काव्य शास्त्र का परिचय शिक्षार्थियों को हो, यह लक्ष्य लेकर संस्कृत साहित्य नाम से पाठ्यक्रम को पुस्तक रूप में सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है। भावभीनी में कौशल पहले और आज भी गुरुत्व को ही पुकारता है। अपने भावों को कैसे साक्षात् या परोक्ष रूप से प्रकट कर सकते हैं, यह काव्य से ज्ञात होता है। अतः काव्य के अध्ययन के बहुत से प्रयोजन हैं। यहीं प्रयोजन सर्वश्रेष्ठ कवियों के कार्यों को पढ़ने के लिए हमें प्रेरित करते हैं।

#### अधिकारी

यह पाठ्य विषय संपूर्ण रूप से संस्कृत भाषा से हिन्दी भाषा में अनुदित है। अतः इस पाठ को पढ़ने का अधिकारी कौन होगा यह सामान्य सा प्रश्न उठता है।

यहाँ पर वे शिक्षार्थी अधिकृत हैं जो-

- व्याकरण विषय के ज्ञान को प्राप्त कर काव्य रस को पाना चाहते हैं।
- सरल संस्कृत, हिन्दी एवं संस्कृत साहित्य के सरल गद्यांश और पद्यांश को पढ़ एवं समझ सकें।
- सरल संस्कृत को समझ सकें।
- अपने भावों को सरल संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में लिखकर प्रकट कर सकें।

---

## प्रयोजन ( सामान्य )

---

माध्यमिक स्तर में संस्कृत साहित्य का पाठ्यक्रम के रूप में सम्मिलित करने के कुछ उद्देश्य यहां नीचे दिए जा रहे हैं।

- जीवन का परम लक्ष्य सुख प्राप्ति ही है। वह लक्ष्य काव्य अध्ययन से ही सिद्ध होगा अतः छात्रों को यह लक्ष्य प्राप्त हो।
- बहुत से काव्य सुख प्रतिपादन में प्रवृत्त होकर सफलता और उनकी असफलता के क्या कारण हैं। छात्र इनको जानकर सूक्ष्म चिंतन कर सकें।
- जिस तरह कवि अपनी विचित्र उक्तियों से लोगों को प्रसन्न रखता है, उसी प्रकार काव्य के अध्ययन से छात्र भी इस सामर्थ्य को अर्जित कर सकें। एवं दूसरे कवियों के द्वारा किए गए काव्य रचना का आदर कर सकें।
- अपने और अपने परिचितों का जीवन काव्य के रस से परिपूर्ण करने में सक्षम हो सकें।
- संस्कृत काव्य की महिमा को जानकर उसके प्रचार में आदर के साथ और श्रद्धा से परिवर्तित हो सकें।
- छात्र भारत की अति प्राचीन भारतीय ज्ञान संपदा, वैज्ञानिकता और सर्वजन उपकार की महिमा को गर्व के साथ संसार में प्रसारित कर सकें।
- काव्य ग्रंथों के सरल अंशों को पढ़कर छात्र उन अंशों का अर्थ ज्ञात कर पाने में सक्षम होंगे वह स्वयं ही मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति करने में समर्थ होंगे।
- काव्य का अध्ययन करके छात्र महाविद्यालय स्तर पर और विश्वविद्यालय स्तर पर चल रहे पाठ्यक्रमों में अध्ययन के लिए अवसर प्राप्त करने में समर्थ हो सकेंगे।
- काव्य चिंतन में रुचि उत्पन्न कर सक्षम और संलग्न हो सकेंगे।

---

## विशिष्ट उद्देश्य

---

संस्कृत साहित्य में प्रवेश का सामर्थ्य

- काव्य में कौन-कौन से विषय अंतर्निहित हैं इसका सामान्य ज्ञान हो सकेंगे।
- कवियों का सामान्य परिचय प्राप्त हो सकेंगे।
- काव्यों का परिचय प्राप्त हो सकेंगे।
- पढ़े गए विषय पर आश्रित प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ हो सकेंगे।

---

## संस्कृत साहित्य के अध्ययन में सामर्थ्य

---

- कवियों के अध्ययन का कुछ विशिष्ट क्रम है। उस ज्ञान को प्राप्त कर काव्य के आगे अध्ययन करने में समर्थ हो सकेंगे।
- काव्य में विद्यमान छंदों, अलंकारों और व्याकरण के अंशों को जान सकेंगे।
- उनके ज्ञान से अन्यत्र विद्यमान अलंकार आदि का भी ज्ञान होगा।

- इस पाठ्य विषय के ज्ञान से इस विषय के समतुल्य विद्यमान अन्य आकार ग्रंथों का अध्ययन करने में समर्थ होंगे।

---

## संस्कृत साहित्य के प्रयोग का सामर्थ्य

---

- संस्कृत कवियों के अध्ययन से अपनी वाणी में काव्यात्मकता प्रकट कर सकेंगे।
- अन्य द्वारा रचित काव्य प्रयोगों का ज्ञान हो।
- भाव विनिमय को प्रभावपूर्ण करने में सक्षम हो।
- वाणी में विद्यमान संयोग वियोग सामर्थ्य आए।
- जिस प्रकार वैद्य लोगों को देखकर उनके रोग आदि के विषय में चिंतन करता है, वणिक क्रंताओं को देखता है, उसी प्रकार जगत को कवि के रूप में देखने में समर्थ हों।

---

## पाठ्य सामग्री

---

पाठ्यक्रम के साथ निम्नलिखित सामग्री समायोजित होगी-

- दो मुद्रित पुस्तकें।
- एक शिक्षक अंकित -मूल्यांकन प्रपत्र दिया जायेगा।
- साहित्य शिक्षण प्रायोगिक रूप से भी होगा। परन्तु प्रायोगिक परीक्षा कोई भी नहीं है।
- पाठ निर्माण करने में संपर्क कक्षाओं में अध्यापन काल में, छात्रों के जीवन कौशल का अच्छी प्रकार से विकास हो ऐसा ध्यान होना चाहिए। इससे उनमें अपने आप युक्ति समन्वित चिन्तन शक्ति का विकास होगा।
- राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में प्रवेश के बाद इस पाठ्यक्रम को विद्यार्थी एक वर्ष से प्रारंभ कर अधिक से अधिक पांच वर्षों में पूर्ण कर सकते हैं।

---

## अंक मूल्यांकन विधि और परीक्षा योजना

---

- प्रश्न पत्र के (100) सौ अंक हैं। परीक्षा का समय तीन घंटे होगा। इस पत्र का स्वरूप लिखित ही है (Theory)। प्रायोगिक रूप से (Practical) कुछ भी नहीं है। रचनात्मक (Formative) योगात्मक (Summative) दो प्रकार से मूल्यांकन होगा।
- रचनात्मक मूल्यांकन - बीस अंकों (20) का शिक्षक अंकित मूल्यांकन (TMA) का एक पत्र है। इसका मूल्यांकन अध्ययन केन्द्र (Study Centre) पर होगा। इस कार्य के अंक अंक पत्रिका (Marks Sheet) में अलग से उल्लेखित होंगे।
- योगात्मक मूल्यांकन- वर्ष में दो बार (मार्च मास में और अक्टूबर मास में) सार्वजनिक परीक्षा होगी। वहाँ परीक्षा में समुचित मूल्यांकन होगा।
- प्रश्नपत्र में ज्ञान (Knowledge) अवगम (Understanding) अनुप्रयोग कौशल (Application skill) को आधार बनाकर समुचित अनुपात से प्रश्न पूछे जायेंगे।
- परीक्षाओं में बहुविकल्पात्मक, अतिलघुत्तरात्मक, लघुत्तरात्मक, निबन्धात्मक - प्रश्नों का समावेश होगा।
- उत्तीर्णता का परिमाण (Condition) - तैतीस प्रतिशत (33%) अंक उत्तीर्णता के लिए (मानदंड) है।

---

## अध्ययन योजना

---

- निर्देश भाषा (Medium of instruction) - हिन्दी
- स्वाध्याय काल अवधि (Self Study Hours) 240 घंटे है।
- कम से कम तीस (30) संपर्क कक्षा (Personal Contact Programme) अध्ययन केंद्र में होगी।
- भारांश - सैद्धांतिक (Theory) शत प्रतिशत। प्रायोगिक (Practical) - नहीं है।

---

## अंक विभाजन

---

आगे की सारणी में दिया गया है।

---

## पाठ्य विषय का उद्देश्य ( पाठ्य विषय बिंदु )

---

माध्यमिक कक्षा हेतु काव्य की पुस्तक में निम्न विषय सम्मिलित हैं। जिनका विवरण नीचे दिया गया है।

सभी पाठ्य विषयों को अलग-अलग भागों में परिकल्पित किया गया है। प्रत्येक भाग में कुछ पाठ, स्वाध्याय के लिए कितने घंटे, सैद्धांतिक परीक्षा में कितने अंश, प्रायोगिक परीक्षा में कितने अंश, और प्रत्येक कक्षा में अंक विभाजन विषय यहां दिए गए हैं।

### परिच्छेद 1- सुभाषित आदि कथा साहित्य ( पाठ 1 से 7 )

#### अध्याय का औचित्य

काव्य में सबसे मनोरम सुभाषित हैं। व्यवहार उपयोगी ज्ञान के आधार ही सुभाषित कहलाते हैं। सरल और रस युक्त इन सुभाषितों को इस विभाग में सम्मिलित कर व्याख्या की जाएगी। यदि इनमें कुछ गूढ होता है तो लोग उसको जानने के लिए उत्सुक दिखते हैं। इसलिए कवियों ने पहेलियां और समस्या श्लोकों का निर्माण किया। प्रतिनिधि के रूप में कुछ इस विभाग में दिए जाएंगे।

संस्कृत कवियों में बेताल पच्चीसी अति प्रसिद्ध गद्य काव्य ग्रंथ है।

उसी प्रकार शुक सप्तति और पंचतंत्र हैं। अलोक सामान्य शैली से बोध और प्रसन्नता कैसे कराई जाए यह यहां पर दिखता है।

### परिच्छेद 2- काव्य परिचय पाठ ( 8 से 11 )

#### अध्याय का औचित्य

काव्य के रस का स्वाद अनेक लोग हमेशा करते हैं। परंतु काव्य क्या है? कवि कौन है? काव्य रस के स्वाद का अधिकारी कौन है? काव्य कितने प्रकार का होता है? यह कुछ विषय चिंतनीय है। इसलिए वे विषय इस विभाग में सम्मिलित हैं। यह काव्य नहीं है। काव्य शास्त्र यह कहलाता है। सामान्य रूप से यह ज्ञान यहां पर प्राप्त होगा। जो विषय इस विभाग में उद्धृत हैं।

### परिच्छेद 3- रामायण अध्ययन पाठ ( 12 से 15 )

#### अध्याय का औचित्य

रामायण आदि काव्य है। जिसमें श्री हनुमान ब्राम्हण रूप धारी दंडकारण्य में श्रीराम से साक्षात् करते हैं। उन दोनों के मध्य का अति रमणीय संवाद महर्षि वाल्मीकि की शैली में ही यहां उद्धृत किया गया है। साक्षात् रामायण के ही श्लोकों की व्याख्या, व्याकरण इत्यादि विषय इस विभाग में देखने को मिलेंगे।

### परिच्छेद 4- काव्य अध्ययन पाठ ( 16 से 22 )

#### अध्याय का औचित्य

नाटक रमणीय है इसमें कोई संदेह नहीं है। नाटकों में भास के नाटक अत्यंत प्रसिद्ध है। 'कर्ण भारम्' नाम का यह नाटक जो

महाभारत की उपजीव्य रचना है। इस नाटक के द्वारा कर्ण के त्याग को लक्षित किया गया है। अपने जीवन संकट को जानते हुए भी कर्ण अपने कवच और कुंडल को ब्राम्हण रूप धारी इंद्र को सहर्ष दान कर देता है। कर्ण का यह त्याग उसी समय से प्रसिद्ध है। इस प्रकार का त्याग सभी मनुष्यों के लिए सर्वदा सीखने योग्य विषय है।

महाकवि भारवि ने महाभारत के एक प्रमुख प्रसंग को चयनित कर 'किरातार्जुनीयम्' नामक प्रसिद्ध महाकाव्य की रचना की। महाकवि भारवि ने उसी कथा को अपनी ही शैली में वर्णन किया है। किरात और अर्जुन को अधिकृत कर कवि ने इस ग्रंथ की रचना की। उसी काव्य का कुछ भाग यहां छात्रों की रुचि बढ़ाने के लिए सम्मिलित किया गया है।

#### **पाठ्य विषय का उद्देश्य ( पाठ्य विषय बिंदु )**

माध्यमिक कक्षा हेतु संस्कृत साहित्य पाठ्यक्रम में निम्न विषय सम्मिलित है

## पाठ्य विषय का उद्देश्य ( पाठ्य विषय बिन्दु )

माध्यमिक कक्षा हेतु संस्कृत साहित्य की पाठ्य पुस्तक में निम्न विषय सम्मिलित है

क्रम. सं.	मुख्य बिन्दु	स्वाध्यायाय होरा	भारांश ( अंक )
१	प्रथम परिच्छेद	७८	३२
पाठ- 1	सुभाषित-सुभाषितों का अन्वय अन्वयार्थ तथा भावार्थ		
पाठ- 2	सुभाषित-सुभाषितों का अन्वय अन्वयार्थ, भावार्थ		
पाठ- 3	प्रहेलिका समस्या श्लोक-अन्वय, अन्वयार्थ, भावार्थ, प्रयोजन विशेष टिप्पणी, व्याकरण टिप्पणी		
<b>कथा साहित्य</b>			
पाठ- 4	कथा- वेताल पञ्चीसी -1 कौन अंग नगर का राजा, कौन त्यागी-विवृति व्याख्या, सरलार्थ, तात्पर्यार्थ व्याकरणात्मक टिप्पणी		
पाठ- 5	कथा- वेताल पञ्चीसी कौन मेरा पिता, व्याख्या, सरलार्थ, तात्पर्यार्थ व्याकरणात्मक टिप्पणी		
पाठ- 6	कथा- शुकसप्तति-1) सुदर्शनधी-2) विषाङ्गनावृत्त-3) बुद्धि सर्वत्र विजय प्राप्त करती है ( जीतती है) विवृति व्याख्या, सरलार्थ, तात्पर्यार्थ व्याकरणात्मक टिप्पणी		
पाठ- 7	कथा- पञ्चतन्त्र-1) मूर्खों का समादर नहीं जहाँ धर्म वहाँ विजय विवृति व्याख्या, सरलार्थ, तात्पर्यार्थ व्याकरणात्मक टिप्पणी		
२	द्वितीय परिच्छेद	४०	१६
पाठ- 8	काव्यशास्त्रप्रवेश- 1 वेद पुराणों के परिचय के साथ काव्य में प्रवेश		
पाठ- 9	काव्यशास्त्रप्रवेश-2 साहित्य काव्य कवि प्रभृति पदों का अर्थ कवि, काव्य, साहित्य, प्रतिभा वृत्ति, इत्यादि विषय		
पाठ- 10	काव्य शास्त्र प्रवेश-3 साहित्य का अधिकारी और प्रयोजन सहृदय साहित्य का अधिकारी प्रयोजन इत्यादि विषय		
पाठ- 11	काव्य प्रकार परिचय- दृश्य-श्रव्य-नाटक-गद्य-पद्य-चम्पू- महाकाव्यादिक्रम से काव्य प्रकार परिचय		



३	तृतीय परिच्छेद	रामायण अध्ययन	४२	१८
पाठ- 12	वाल्मीकि रामायण-किष्किन्धा काण्ड तृतीय सर्ग में राम-हनुमत् संगम- (1-10 श्लोक)- राम लक्ष्मण के साथ हनुमान का प्रथम साक्षात्कार अन्वय, अन्वयार्थ, सरलार्थ			
पाठ- 13	वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड तृतीय सर्ग में राम हनुमान का मिलन (11-23 श्लोक)- हनुमान द्वारा किया गया राम लक्ष्मण की प्रशंसा अन्वय, अन्वयार्थ, सरलार्थ			
पाठ- 14	वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड तृतीय सर्ग में हनुमान द्वारा किया गया राम लक्ष्मण की प्रशंसा (24-35 श्लोक)- रामेण कृता हनुमत्प्रशंसा। अन्वय, अन्वयार्थ, सरलार्थ			
पाठ- 15	वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड तृतीय सर्ग में राम हनुमान का मिलन (36-39 श्लोक)- हनुमान के लिए राम की प्रशंसा अन्वय, अन्वयार्थ, सरलार्थ			
४	चतुर्थ परिच्छेद	काव्य अध्ययनम्-	८०	३४
		कर्णभार		
पाठ- 16	कर्णभार- कर्ण का परिताप			
पाठ- 17	कर्णभार- अस्व का वृत्तान्त			
पाठ- 18	कर्णभारम- कवच कुण्डल दान			
पाठ- 19	किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग में 1-6 श्लोक)- वनेचर का चरानुरूप वचन			
पाठ- 20	किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग में 7-13 श्लोक)- कपट दुर्योधन का धर्माचरण			
पाठ- 21	किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग में 14-23 श्लोक)- शङ्कित दुर्योधन की नीति कुशलता			
पाठ- 22	किरातार्जुनीय (प्रथम सर्ग में 24-30 श्लोक)- युधिष्ठिर का प्रबोध			

## प्रश्न पत्र का प्रारूप (Question Paper Desing)

विषय - संस्कृत साहित्य (248) (Sanskrit Sahitya)

स्तर:- माध्यमिक कक्षा

परीक्षा अवधि (Time): तीन घंटे (3 Hrs.)

पूर्णांक: (Full Marks)-100

### लक्ष्य अनुसार अंक विभाजन

विषय:	अंक:	प्रतिशत योग
ज्ञान (Knowledge)	25	25%
अवबोध (Understanding)	45	45%
अनुप्रयोग कौशल (Application Skill)	30	30%
महायोग ->	100	

### प्रश्न प्रकार अंक भार विभाजन

प्रश्न प्रकार	प्रश्न संख्या	अंक	योग
दीर्घोत्तरीय प्रश्न (LA)	5	6	30
लघूत्तरात्मक प्रश्न (SA)	10	4	40
सुलघूत्तरीय प्रश्न (VSA)	10	2	20
बहुविकल्पीय प्रश्न	10	1	10
महायोग	35		100

### पाठ्य विषय विभागानुसार भारांश

विषय घटक	अंक	स्वाध्यायाय के घंटे
1. सुभाषित	32	78
2. काव्य परिचय	16	40
3. रामायण अध्ययन	18	42
4. काव्य अध्ययन	34	80
महायोग	100	240

### प्रश्न पत्र का कठिनता स्तर

प्रश्न स्तर	अंक
कठिन (Difficult)	25
मध्यम (Medium)	50
सरल (Easy)	25

## प्रश्न पत्र आदर्श

(Sample Question Paper)

इस प्रश्न पत्र में ..... प्रश्न है।..... और मुद्रित है।

Roll No.	
अनुक्रमांक	4 5 0 1 5 9 1 8 3 0 0 1

Code No.	
गद संख्या	55/SS/A/S
SET	
स्तबक :	

## संस्कृत साहित्य

Sanskrit Sahitya

( 248 )

Day and Date of Examination .....

परीक्षा दिन और दिनांक :

Signature of two Invigilators 1. ....

निरीक्षक के हस्ताक्षर 2. ....

### सामान्य निर्देश

1. अनुक्रमांक प्रश्न पत्र के प्रथम पृष्ठ पर अवश्य लिखें।
2. निरीक्षण करें की प्रश्न पत्र की क्रम संख्या प्रश्नों की संख्या, प्रथम पृष्ठ के प्रारम्भ में दी हुई संख्या के समान है या नहीं। प्रश्न क्रम सही है अथवा नहीं।
3. वस्तु निष्ठ प्रश्नों के (क), (ख), (ग), (घ) इन विकल्पों में से युक्त उत्तर को चुनकर उत्तर पत्र पर लिखें।
4. सभी प्रश्नों के उत्तर निर्धारित समय में ही लिखें।
5. उत्तर पत्र में आत्म परिचयात्मक लेखन अथवा निर्दिष्ट स्थान को छोड़कर अन्य कहीं पर भी अनुक्रमांक लिखना मना है।
6. अपने उत्तर पत्र में प्रश्न पत्र की गूढसंख्या अवश्य लिखें।

# संस्कृत साहित्य

(Sanskrit Sahitya)

( २४८ )

परीक्षा समय अवधि (Time) तीन घंटे (3Hrs)

पूर्णांक (Full Marks)-100

## निर्देश

- (A) इस प्रश्न पत्र में (A) भाग 10, (B) भाग 10, (C) भाग 10, (D) भाग 5 इस प्रकार 35 प्रश्न हैं।
- (B) प्रश्न पत्र के दाहिनी तरफ संख्याओं में (अंक ° प्रश्न = पूर्णांक) इस प्रकार अंको का निर्देश किया है।
- (C) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

## दसों के युक्त विकल्प चुनो।

- विदेश जाने पर बंधु कौन होता है?  
(i) धन (ii) विद्या (iii) बल (iv) उच्च कुल में जन्म
- महिलाओं का विभूषण क्या है?  
(i) स्व पति (ii) केश (iii) लज्जा (iv) वस्त्र
- मेघदूत यह कैसा काव्य है?  
(i) शास्त्र काव्य (ii) ऐतिहासिक काव्य  
(iii) खंडकाव्य (iv) देव काव्य
- श्रव्य काव्य कितने प्रकार के होते हैं?  
(i) तीन प्रकार (ii) चार प्रकार  
(iii) पांच प्रकार (iv) दो प्रकार
- रूपक कितने हैं?  
(i) 10 (ii) 11 (iii) 13 (iv) 14
- अंक नाम के रूपक में कौन-सा रस प्रधान है?  
(i) श्रृंगार (ii) करुण (iii) शांत (iv) वीर
- बाण किसके द्वारा उपमित हैं?  
(i) पन्नग द्वारा (ii) वज्र द्वारा (iii) निर्मुक्त भुजग द्वारा (iv) गज शृंड द्वारा

8. 'विन्ध्य मेरु विभूषिता' यह किसका विशेषण है?  
 (i) पंपा नदी (ii) सीता (iii) पृथ्वी (iv) लंका
9. 'सौष्ठवौदार्यविशेषशालिनीः सुनिश्चितार्था' यह पंक्ति किसकी है?  
 (i) दुर्योधन (ii) भीम (iii) द्रोपदी (iv) वनेचर
10. इनमें से छह रिपुओं में कौन नहीं है?  
 (i) काम (ii) दोष (iii) मद (iv) मात्सर्य

**( B ) निम्नलिखित प्रश्नों का यथा निर्देश उत्तर लिखिए**

- 1) पुरुष के द्वारा कितने दोष ध्यातव्य हैं, और वह कौन-कौन से हैं?
- 2) लेखनी के पांच पति कौन हैं? नारियल और योगियों का वस्त्र कैसा होता है?
- 3) कौन यथोक्त वक्ता होता है? देवताओं का प्रिय धाम क्या है?
- 4) जल से किस को बुझाया जा सकता है? किसकी औषधि नहीं है?
- 5) पुरा शब्द का अर्थ क्या है, पुराण मुनि कौन है?
- 6) हनुमान किसके पुत्र थे एवं वह कौन-सा रूप धारण कर राम और लक्ष्मण के पास गए?
- 7) 'अयुग्मच्छद्गन्धिभिः' इसके अर्थ को लिखें, 'अदेवमातृका' इसका अर्थ क्या है?
- 8) राजा दुर्योधन राजनीति में किस तरह कुशल था?
- 9) सभी राजा दुर्योधन का अनुकरण क्यों कर रहे थे?
- 10) वनेचर के वचनों का सार लिखिए।

**( C ) निम्नलिखित प्रश्नों का विस्तार से उत्तर कीजिए**

- 1) वाकभूषण का महात्म्य यथा ग्रंथ प्रतिपादित करें।
- 2) 'श्रोत्रं श्रुतेनैव न' इस श्लोक को पूरा लिखें एवं व्याख्या करें अथवा 'विधेः बलवत्त्वं' ग्रंथ अनुसार प्रतिपादित करें।
- 3) ठठंठठंठम् इस ध्वनि के कारण का वर्णन करें अथवा कवि की दृष्टि से शतचन्द्रं नभस्स्थलं कैसे हुआ?
- 4) कवि के वचन के अनुसार लेखनी का वर्णन करें।
- 5) पुराणों की संख्या लिखें अथवा वेद के भेद और उपभेद लिखें।
- 6) हनुमान के व्याकरण ज्ञान के विषय में राम की उक्ति ग्रंथ के अनुसार आलोचित करें अथवा हनुमान के वाक् सौंदर्य का वर्णन करें।
- 7) 'तत्तस्य वाक्यं निपुणं निशम्य' श्लोक को पूरा कर व्याख्या करें अथवा राम और लक्ष्मण किस प्रकार वन की प्रजा को पीडित करते थे?

- 8) अरिषड्वर्ग कौन है अथवा बल का विरोधी होना कैसे दुखद परिणाम वाली होती है?
- 9) दुर्योधन की दंड विधि कैसी थी?
- 10) दुर्योधन का प्रजा रक्षण कैसा था?

**( D ) निम्नलिखित प्रश्नों का विस्तार से उत्तर लिखिए।**

- 1) विद्या के महत्व का श्लोक के अनुसार वर्णन करें अथवा बांधव लक्षण को यथा ग्रंथ प्रतिपादित करें।
- 2) वेदांग उनसे परिचय कराएं अथवा काव्य का प्रयोजन लिखें।
- 3) राम और लक्ष्मण के साथ हनुमान का प्रथम साक्षात्कार संक्षेप में लिखें अथवा राम लक्ष्मण के शस्त्रों का यथा ग्रंथ वर्णन करें।
- 4) युधिष्ठिर को उत्साहित करने के लिए द्रौपदी कब और क्या करती है अथवा दुर्योधन क्या-क्या करके धर्म का आचरण करता है?
- 5) संदेह युक्त दुर्योधन किस प्रकार शंका रहित स्वरूप को दर्शाता है?

## प्रश्नपत्र प्रतिमा की उत्तरमाला

### ( A ) दसों प्रश्नों का युक्त विकल्प-

- |       |       |       |       |        |
|-------|-------|-------|-------|--------|
| 1 (ख) | 2 (ग) | 3 (ग) | 4 (घ) | 5 (क)  |
| 6 (ख) | 7 (क) | 8 (ग) | 9 (घ) | 10 (ख) |

### ( B ) दसों प्रश्नों का यथा निर्देश उत्तर-

- छः दोष निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य, दीर्घ सूत्रता चेति।
- पाँच अंगुलियां लेखनी के पाँत पति है। त्वग् वस्त्र
- सारिका भारत भूमि
- हुतभुक् वारयितुं। मूर्ख व्यक्ति की कोई औषधि नहीं है।
- प्राचीन वेदव्यास
- मरुत पुत्र तथा भिक्षुक रूप में।
- अयुग्मच्छदगन्धिभिः इत्यस्य अर्थः - सप्तपर्णपुष्प की गन्ध की जैसी गंध है जिसकी असौ अदेवमातृका इत्यस्यार्थो ही नदी जल जीवन है।
- पाठ- 20 देखें
- दुर्योधनः अशङ्कताकारम् उपैति। स च शङ्कितः सन् अशङ्कताकारम् उपैति।
- कुरवः चिराय क्षेमं वितन्वति दुर्योधने संस्यसम्पदः दधतः चकासति।

### ( C ) दसों प्रश्नों के कुछ विस्तार के साथ उत्तर के द्वारा समाधान

- |                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| 1. पाठ- 1 देखें     | 2. पाठ- 1/2 देखें   |
| 3. पाठ- 3/3 देखें   | 4. पाठ- 3 देखें     |
| 5. पाठ- 11/11 देखें | 6. पाठ- 14/15 देखें |
| 7. पाठ- 15/12 देखें | 8. पाठ- 20/21 देखें |
| 9. पाठ- 20 देखें    | 10. पाठ:- 21 देखें  |

### ( D ) पाँचों प्रश्नों का बहुत ही विस्तार के साथ समाधान-

- |                     |                     |
|---------------------|---------------------|
| 1. पाठ- 1/2 देखें   | 2. पाठ- 11/11 देखें |
| 3. पाठ- 12/13 देखें | 4. पाठ- 21/21 देखें |
| 5. पाठ- 21 देखें    |                     |